# परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करना

आशीष रायचूर

**केवल मुफ़्त वितरण के लिए**

ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करणः 2023

**संपर्क जानकारी**

All Peoples Church & World Outreach,
# 319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: apcwo.org

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है। सर्व हक्क स्वाधीन।

**आर्थिक साझेदारी**

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे "ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता" पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

**मुफ़्त संसाधन**

**उपदेशः** apcwo.org/sermons | **पुस्तकें:** apcwo.org/books | **चर्च ऐपः** apcwo.org/app
**बाइबिल कॉलेजः** apcbiblecollege.org | **ई-लर्निंगः** apcbiblecollege.org/elearn
**परामर्शः** chrysalislife.org | **संगीतः** apcmusic.org
**मिनिस्टर्स फेलोशिपः** pamfi.org | **ए.पी.सी. वर्ल्ड मिशंसः** apcworldmissions.org

(Hindi - Receiving God's Guidance)

# परमेश्वर का मार्गदर्शन
## *प्राप्त करना*

# समर्पण

**हमारे बाद आने वाली**
**पीढ़ियों को समर्पित**

*और यहोवा यह कहता है, "जो वाचा मैंने उन से बान्धी है वह यह है, कि मेरा आत्मा तुझ पर ठहरा है, और अपने वचन जो मैंने तेरे मुंह में डाले हैं अब से लेकर सर्वदा तक वे तेरे मुंह से, और, तेरे पुत्रों और पोतों के मुंह से भी कभी न हटेंगे"* (यशायाह 59:21)।

हमने जो अनुभव किया है उससे अधिक आप अनुभव करने पाएं।

उसका बोलना, अगुवाई करना निर्देशन करना और मार्गदर्शन करना आपके लिए सामान्य और स्वाभाविक हो।

आप परमेश्वर के अपने ह्दय के अनुसार लोग हों, और आपके दिनों में परमेश्वर की सारी इच्छा को पूरा करें।

# विषयसूची


| | | |
|---|---|---|
| परिचय | | 1 |
| 1. | परमेश्वर, हमारा मार्गदर्शक | 3 |
| 2. | दाऊद ने परमेश्वर से पूछा | 19 |
| 3. | वचन | 29 |
| 4. | आत्मा की अंदरूनी गवाही | 42 |
| 5. | पवित्र आत्मा की आवाज़ | 70 |
| 6. | पवित्र आत्मा के वरदान | 83 |
| 7. | स्वप्न और दर्शन | 90 |
| 8. | भविष्यद्वाणियां | 101 |
| 9. | स्वर्गदूत | 106 |
| 10. | ईश्वरीय परामर्श | 110 |
| 11. | नवीनीकृत मन | 116 |
| 12. | समय और ऋतु | 123 |
| 13. | परिस्थितियां और ईश्वरीय आयोजन | 132 |
| 14. | सारी बातों को एक साथ जोड़कर | 144 |

# परिचय

परमेश्वर ने हमारी अगुवाई करने और हमारा मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा की है। विश्वासियों के नाते, हम खराई के साथ परमेश्वर द्वारा अगुवाई पाने की इच्छा रखते हैं। हमारे जीवनों में उसकी योजनाओं और उद्देश्यों का अनुसरण करने के महत्व को हम समझते हैं। हम जानते हैं कि परमेश्वर के मार्ग हमारे लिए उत्तम है। हम अपने जीवनों के लिए उसकी इच्छा के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं।

यह पुस्तक कुछ महत्वपूर्ण मार्गों का अध्ययन है जिस रीति से हम हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर का मार्गदर्शन पाते हैं। परमेश्वर के मार्गदर्शन को कैसे पहचानें इस विषय में हमारे पास कोई निश्चित सूत्र नहीं है, परंतु हमें उन बातों को समझना है कि विभिन्न रीति से परमेश्वर का वचन क्या प्रगट करता है जिसके माध्यम से परमेश्वर हमारे जीवनों में उसके मार्गदर्शन को बोलेगा। यही बात हमें छोटे या बड़े, जीवन के सभी निर्णायक क्षणों के द्वारा उसका अनुसरण करने हेतु हमें सक्षम बनाएगी।

परमेश्वर जिन दो अत्यंत महत्वपूर्ण मार्गों से अपने मार्गदर्शन को हमारे जीवनों में व्यक्त करता है, वह है उसके वचन, लिखित शास्त्र के द्वारा और उसके आत्मा की अगुवाई से। विश्वासियों के नाते हमें जानना है कि परमेश्वर के वचन के द्वारा और उसके आत्मा के द्वारा उसकी इच्छा और निर्देशन को कैसे पहचानें।

इस पुस्तक में हम कुछ प्राथमिक मार्गों को, उसी तरह अन्य कई मार्गों को स्पष्ट करते हैं जिनके द्वारा परमेश्वर अपने मार्गदर्शन को हमारे जीवनों में व्यक्त करता है: (1) वचन, (2) हमारे अंदर वास करना वाला आत्मा, (3) पवित्र आत्मा की आवाज़, (4) पवित्र आत्मा के वरदान, (5) स्वप्न और दर्शन, (6) भविष्यद्वाणियां, (7) स्वर्गदूत, (8) ईश्वरीय परामर्श, (9) नवीनीकृत मन (10) समय और ऋतु, (11) परिस्थितियां, और ईश्वरीय आयोजनों के द्वारा। उसके बाद हम चर्चा करते हैं कि परमेश्वर के निर्देशन

को पहचानने हेतु हम इन्हें कैसे एक साथ जोड़ते हैं, और उन ऋतुओं में हम क्या करें जब हमें परमेश्वर की ओर से कुछ भी स्पष्ट सुनाई देता प्रतीत नहीं होता है।

हमें एक महत्वपूर्ण सत्य अपने मन में रखना है, जो हम पुराने और नए नियम में देखते हैं कि *"अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूं। दो या तीन गवाहों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाएगी"* (2 कुरिन्थियों 13:1; व्यवस्थाविवरण 19:15 से उद्‌धृत)। इसलिए, जब हम परमेश्वर के निर्देशन को निर्धारित करते हैं, तो हम एक से अधिक तरीके से परमेश्वर की ओर से सुनेंगे। इस प्रकार परमेश्वर दो या तीन गवाहों के द्वारा हमारे जीवनों के लिए उसके मार्गदर्शन की पुष्टि करता हैं।

हम सभी गलतियां करते हैं, परंतु हमें यह समझना है कि परमेश्वर हमारी गलतियों से बड़ा है और हमें वापस सही मार्ग पर ला सकता है और हमारे जीवनों के लिए उसके सर्वोच्च और उत्तम की ओर यात्रा में हमारी सहायता कर सकता है।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

# 1

# परमेश्वर, हमारा मार्गदर्शक

हमें जीवन के विभिन्न मामलों में परमेश्वर के मार्गदर्शन की ज़रूरत है। कुछ का सम्बंध छोटे निर्णयों से है और कुछ का बड़े, महत्वपूर्ण निर्णयों से हो सकता है। जीवन के विभिन्न क्षणों में, हमारे अगले कदमों के लिए परमेश्वर की इच्छा जानने की ज़रूरत होती है: विद्यार्थी जानना चाहेगा कि वह किस शिक्षा क्षेत्र पर ध्यान दे: व्यावसायिक जीवन में प्रवेश करने वाला जानना चाहेगा कि नौकरी के कौन से अवसर या करियर ढूंढ़े: और अन्य मुख्य जीवन निर्णय होते हैं जिनमें जीवनसाथी का चुनाव; संसार के किस भाग में रहें; किस स्थानीय कलीसिया का हिस्सा बनें, आदि का समावेश है। जीवन के सभी निर्णयों में हम परमेश्वर का अनुसरण करने की इच्छा रखते है। हमारे मार्गदर्शक के रूप में परमेश्वर का हमारे साथ होना, और हर कदम पर उसका मार्गदर्शन पाने की योग्यता हमारा अद्भुत सौभाग्य है।

## मार्गदर्शन और अगुवाई करने हेतु परमेश्वर की प्रतिज्ञा

पवित्र शास्त्र के कई वचन हैं जो हम पर यह प्रगट करते हैं कि परमेश्वर ने हमारी अगुवाई और मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा की है। यह अद्भुत आश्वासन है! हमें जो निर्णय लेने हैं उनमें परमेश्वर वास्तव में दिलचस्पी रखता है और उसने अपने मार्गदर्शन की प्रतिज्ञा की है।

**भजनसंहिता 37:23,24**
**23 मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;**
**24 चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थांभे रहता है।**

भले मनुष्य (शाब्दिक तौर पर साहसी मनुष्य, बहादूर मनुष्य, योद्धा) की गति या उसके कदमों को परमेश्वर दृढ़ करता है (दिशा दिखाता है, स्थापित करता है, सिद्ध करता है)। यह व्यक्ति जिस तरह चलता है उससे

परमेश्वर प्रसन्न होता है। जैसा कि एम्प्लिफाईड बाइबल में लिखा है, परमेश्वर *"उसके प्रत्येक कदम से अपने आपको व्यस्त करता है"*।

परमेश्वर हमारे जीवनों में अत्यंत रूचि रखता है, जो कदम हम उठाते हैं उनमें, जो राह हम चुनते हैं उसमें, जो निर्णय हम लेते हैं उनमें वह बहुत दिलचस्पी रखता है। हममें से कुछ लोगों को इस कल्पना से छुटकारा पाने की ज़रूरत है कि "परमेश्वर सचमुच परवाह नहीं करता," या "वह मेरी परवाह क्यों करेगा, उसके पास परवाह करने के लिए यह बड़ा विश्व है?" इस विश्व का महान परमेश्वर आपके प्रत्येक—छोटे और बड़े—कदम के साथ अपने आप को व्यस्त करता है।

हम भले ही गलतियां करें, लड़खड़ाएं, और डगमगाएं, यह सारी बातों का अंत नहीं है। हम अपने बाकी जीवनों में नाश नहीं हुए। परमेश्वर हमें सम्हालता है, या जैसा कि एम्प्लिफाईड बाइबल बताती है, *"...प्रभु उसे सहारा देने और उसे सम्हालने के लिए उसका हाथ पकड़ता है"*।

**भजनसंहिता 32:8,9**
**8 मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करुंगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूंगा और सम्मति दिया करुंगा।**
**9 तुम घोड़े और खच्चर के समान न बनो जो समझ नहीं रखते, उनकी उमंग लगाम और बाग से रोकनी पड़ती है, नहीं तो वे तेरे वष में नहीं आने के।**

हमारे लिए कैसी अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं और मार्गदर्शन का आश्वासन है। स्वयं प्रभु ने कहाः

*मैं तुझे सिखाऊंगा* (मैं तुझे बुद्धि दूंगा)ः इब्रानी भाषा में "निर्देश" (*"sakal"*) इस शब्द का विस्तृत अर्थ है आपको चौकन्ना, बुद्धिमान, चतुर, और सयाना बनाना और आपको कौशल देना ताकि आप सफल हो सकें।

*तेरी अगुवाई करूंगा*ः इब्रानी भाषा में "सिखाना" (*"yarah"*) के लिए जो शब्द है उसका अलंकारिक अर्थ है मानो उंगली दिखाकर संकेत करना, जैसे तीर चलाते समय।

*सम्मति दिया करूंगा*: "सम्मति" इस शब्द का अर्थ सलाह या परामर्श देना भी है।

प्रभु ने सिखाने, अगुवाई करने और सम्मति देने की हमसे प्रतिज्ञा की है।

उसकी शिक्षा, मार्गदर्शन और सम्मति के प्रति हमारी प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण है। वह दो प्राणियों की ओर संकेत करता है, घोड़ा और खच्चर, जिन्हें लगाम लगाने और मज़बूती से पकडने की ज़रूरत होती है ताकि वे निश्चित मार्ग की ओर जाएं। वे या तो आगे दौड़ सकते हैं और उन्हें रोकना पड़ता है, या वे अत्यंत ज़िद्दी होकर आगे बढ़ने से इन्कार कर सकते हैं। हमें इन दोनों बातों से बचना है।

**भजनसंहिता 25:12**
**वह कौन है जो यहोवा का भय मानता है? यहोवा उसको उसी मार्ग पर जिस से वह प्रसन्न होता है चलाएगा।**

जब हम प्रभु के प्रति आदर में चलेंगे, तब परमेश्वर हमें उस मार्ग की शिक्षा देगा जिसमें हमें चलना चाहिए। यदि हम आदर रखते हैं, प्रभु के भय में चलते हैं, तो हम ना केवल उसकी इच्छा जानने का प्रयास करेगे बल्कि उसकी इच्छा को पूरा करने हेतु भी कार्य करेंगे। *"इस प्रकार प्रभु उन लोगों को ढूढ़ निकालता है जो उसका भय रखते हैं, और अपना मार्गदर्शन उनके लिए उपलब्ध करता है।"*

## परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन

आरम्भ में ही परमेश्वर की इच्छा और मार्गदर्शन के सम्बंध में कुछ मौलिक या बुनियादी सच्चाइयों को स्थापित करना अच्छा है। यहां पर कुछ महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टियां हैं जिन्हें हमें समझना चाहिए:

### *1. परमेश्वर की इच्छा, मार्गदर्शन और अगुवाई हमेशा उसके स्वभाव से सुसंगत होती है*

परमेश्वर अपरिवर्तनशील है। वह कभी नहीं बदलता (मलाकी 3:6)। वह *"ज्योतियों का पिता... है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न*

*अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है"* (याकूब 1:17)। परमेश्वर, अपने स्वभाव से, सुसंगत है। परमेश्वर की इच्छा, उद्देश्य और मार्गदर्शन हमेशा उसके स्वभाव से सुसंगत होगा। वह जो है उससे हमेशा उसकी इच्छा का सामंजस्य रहेगा। उदाहरण के तौर पर परमेश्वर पवित्र है। अतः कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि परमेश्वर कुछ अपवित्र करने हेतु उनका मार्गदर्शन कर रहा है।

## *2. परमेश्वर की इच्छा, मार्गदर्शन और अगुवाई हमेशा उसके वचन से सुसंगत होती है*

परमेश्वर कभी ऐसा कुछ करने के लिए हमारी अगुवाई नहीं करेगा जो उसके वचन का खंडन करता है (यूहन्ना 17:17), उसका सनातन, अपरिवर्तनीय है और सदा आकाश में स्थिर है (भजनसंहिता 119:89)। आत्मा की अगुवाई हमेशा उस वचन से सुसंगत होगी जिसे आत्मा ने प्रेरित किया। हम यहां पर यह मानकर चलते हैं कि उसके वचन की हमारी समझ सही है। कभी-कभी, परमेश्वर ऐसा करने हेतु हमारी अगुवाई कर सकता है जो उसके वचन की हमारी समझ का खंडन करता है। कुछ उदाहरणों पर विचार करें। सब्त के पालन में, फरीसी सब्त के दिन किसी को कुछ करने की अनुमति नहीं देते थे। दूसरी ओर हम यीशु को सब्त के दिन लोगों को चंगा करते देखते हैं, और उसके चेलों को भी सब्त के दिन खाने के लिए अनाज की बालियां तोड़ते हुए देखते हैं (मत्ती 12:1-8)। यीशु ने समझाया कि वह सब्त का भी प्रभु है। या उदाहरण प्रेरित पतरस का उदाहरण लें। वह (और प्रारम्भिक कलीसिया) अन्यजातियों को सुसमाचार नहीं सुना रही थीं। इसलिए परमेश्वर उसे दर्शन देकर बताता है कि वह अशुद्ध पक्षियों और प्राणियों को खाएं, जिसके लिए पतरस ने इन्कार किया। तत्पश्चात परमेश्वर ने पतरस की और कलीसिया की अन्यजातियों को सुसमाचार प्रचार करने हेतु अगुवाई की (प्रेरितों के काम 9 और 10)।

## *3. परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन हैं।*

परमेश्वर ने हमसे किसी बात की प्रतिज्ञा की है इसका कारण यह था कि वह चाहता था कि हम उसे प्राप्त करें। इसलिए हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं

को हमारी जीवनों के लिए उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति के रूप में समझ सकते हैं।

## *4. हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा यह है कि हम उसकी इच्छा को जानें*

परमेश्वर सचमुच हमारे लिए, अर्थात उसके लोगों के लिए चाहता है कि हम उसकी इच्छा जानें। परमेश्वर हमसे उसकी इच्छा छिपाने का प्रयास नहीं कर रहा है कि हम लड़खड़ाएं, सब प्रकार की विपत्ति में पड़ें और अपने जीवन को बिगाड़ दें क्योंकि हम उसकी इच्छा नहीं जानते और उसके मार्गदर्शन को प्राप्त नहीं सके। दूसरी ओर, उसने हमारे लिए प्रयोजन किया है कि उसकी इच्छा को जानें।

कुलुस्सियों 1 में परमेश्वर का वचन हमसे क्या कहता है देखें।

**कुलुस्सियों 1:9,10**
**9 इसी लिए जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिए यह प्रार्थना करने और बिनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ,**
**10 ताकि तुम्हारा चाल-चलन प्रभु के योग्य हो, और वह सब प्रकार से प्रसन्न हो, और तुममें हर प्रकार के भले कामों का फल लगे, और तुम परमेश्वर की पहचान में बढ़ते जाओ।**

हम इन तीन महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टिओं पर ध्यान दें:

पौलुस ने सबसे पहले प्रार्थना की कि वे परमेश्वर की इच्छाा की पहचान से परिपूर्ण हो जाएं (अर्थात उन्हें कोई अभाव,कोई कमी न हो, वे भरपूर हों और इसमें उन्हें अभाव न हो)। "ज्ञान" के लिए दिए गए ग्रीक शब्द (*"epignosis"*) का अर्थ है यथार्थ और सही ज्ञान, गहन और स्पष्ट ज्ञान। विश्वासी होने के नाते, हम प्रार्थना कर सकते हैं और हमारे लिए, उसकी इच्छा का पूर्ण, सम्पूर्ण, यथार्थ, सही, गहन और स्पष्ट ज्ञान पा सकते हैं। (टिप्पणीः हम यह नहीं सूचित करते कि हमारे पास सारा ज्ञान है, या हमारे पास अंनत ज्ञान है, या हम प्रत्येक बात के विषय में सबकुछ जानते हैं। सर्वज्ञता केवल परमेश्वर पास है। हम अपने जीवनों के लिए, व्यक्तिगत तौर पर उसकी इच्छा जानने के विषय बोल रहें हैं।

दूसरी बात, उसकी इच्छा जानना बुद्धि और आत्मिक समझ से, या हमें पवित्र आत्मा द्वारा दी गई बुद्धी या समझ के द्वारा आता है। जैसा कि हम 1 कुरिन्थियों 2:9-16 में देखते हैं, पवित्र आत्मा हम पर कुछ बातें प्रगट करता है और मसीह का मन हमें ज्ञात कराता है। इसलिए हमें ज्ञान और आत्मिक समझ में बढ़ना है।

तीसरी बात, उसकी इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण होने का अंतिम परिणाम यह है किः

(अ) हम परमेश्वर के योग्य चाल चलते हैं—ऐसा जीवन जीते हैं जिससे प्रभु का आदर होता है।

(आ) हम उसे पूर्णतया प्रसन्न करनेवाला जीवन जीते हैं—ऐसा जीवन जीना जो उसे प्रसन्न करे।

(इ) जो कुछ हम करते हैं उन सारी बातों में हम फलवंत हैं—जो कुछ उसने हमें करने के लिए बुलाया है उसमें हम बहुत फल लाते हैं।

(ई) उसके प्रति हमारे ज्ञान में हम बढ़ते जाते हैं।

जब हम उसकी इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण होते हैं तो कैसे सामर्थी परिणाम होते हैं। इसके विपरीत भी विचार किया जाना चाहिए, अर्थात, यदी हम उसकी इच्छा नहीं जानते, तो हम ऐसे काम कर सकते हैं जिससे उसे अनादर प्राप्त हो और अप्रसन्न हो, जो कुछ हम करते हैं उसमें हम फलवंत नहीं होंगे और उसके प्रति हमारे ज्ञान में हम कुंठित हो सकते हैं।

इफिसियों की पत्री में वचन हमें जो सिखाता है उस पर विचार करेंः

**इफिसियों 5:8-10,17**

**8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परंतु अब प्रभु में ज्योति हो, इसलिए ज्योति की सन्तान के समान चलो।**

**9 (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)।**

**10 और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है?**

**17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, परंतु ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?**

अब क्योंकि हम ज्योति हैं और ज्योति की संतान की तरह चलते हैं, हम ना केवल आत्मा के फल दिखाते हैं, परंतु हम प्रभु के लिए स्वीकारणीय क्या है यह ढूंढ़ते हुए (अर्थात जांचते, परीक्षण करते, प्रमाणित करते, पहचानते) जीवन बिताते हैं। अंग्रेज़ी में दिए गए स्वीकारणीय का अर्थ हो सकता है जो ठीक है, मात्र संतोषकारक। परंतु, ग्रीक (*"euarestos"*) का अर्थ है जिससे प्रभु **पूर्णतया सहमत** और **प्रसन्न** है। इसलिए, विश्वासियों के नाते हमें प्रोत्साहन मिलता है कि हम परमेश्वर की इच्छा, जो परमेश्वर के लिए पूर्णतया मनभावनी और प्रसन्नताकारी है, जानने के इस प्रयास में बने रहें।

आगे वचन 17 में, हमें बताया गया है कि हम निर्बुद्धि न हों। थायर्स की ग्रीक व्याख्याओं में 'निर्बुद्धि' के लिए निम्नलिखित अर्थ हैंः "बिना कारण, अर्थहीन, मूर्ख, बिना चिंतन के या बुद्धि के, अविचार से बर्ताव करना।" निर्बुद्धि होने के बदले, हमें समझना है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। 'समझना' के लिए दिया गया शब्द है एक साथ जोड़ना, समझना, मन में एक साथ जोड़ना, विरोधी अर्थ से इकट्ठा करना, दो योद्धाओं को एक साथ लाना, जो ऊपरी तौर पर विरोधी कल्पनाओं को सोचने का सूचित करता है। यह वचन हमें सिखाता है कि परमेश्वर की इच्छा समझने और परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने हेतु हम अपने मन या बुद्धि को दूर नहीं करते।

कभी-कभी, विश्वासी परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने के प्रयास में और परमेश्वर की इच्छा जानने के प्रयास में, अपनी सारी सामान्य बुद्धि, सतर्कता और विवेक दूर कर देते हैं। जब हम कुछ सामान्य व्यावहारिक निर्देशों के साथ उन्हें सलाह देते हैं, तो वे उसे अत्यंत अनात्मिक समझते हैं और कुछ स्पष्ट तथा सरल सामान्य बुद्धि का इन्कार कर देते हैं। फिर वे बड़ी गड़बड़ी में पड़ जाते हैं, और उस गड़बड़ी को सुलझाने में अपने जीवनों को खर्च कर देते हैं जिसमें उन्होंने अपने आप को उलझा दिया था। यदि वे कुछ व्यावहारिक परामर्श पर ध्यान देते तो वे परमेश्वर के राज्य के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होते। हम नहीं जानते कि कभी ऐसा समय आएगा जब परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए यह आवश्यक हो जाएगा कि हमने अपनी उचित बुद्धि से लगाए हुए कुछ निर्बंधों को दूर करें। हम इस विषय में "नवीनीकृत बुद्धि" नामक पाठ में इस विषय में और चर्चा करेंगे।

## *5. जो बातें अज्ञात बनी रहती हैं*

जब हम परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने का प्रयास करते हैं और उसकी इच्छा जानते हैं, तब हमें पहचानना है कि अज्ञात का वह क्षेत्र है।

**व्यवस्थाविवरण 29:29**
**गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परंतु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश में रहेगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएं।**

कुछ बातें होती हैं जिन्हें परमेश्वर केवल अपने तक सीमित रखता है। अतः सभी प्रश्नों के उत्तर न पाते हुए भी हमें सन्तुष्ट रहने के लिए तैयार रहना है। हम अज्ञात, अनुत्तरित के साथ शान्तिपूर्ण जीवन बिता सकते हैं, क्योंकि हमारे पास ऐसी शान्ति है जो हमारी समझ से परे है (फिलिप्पियों 4:6,7)। यह शान्ति तब भी हमारे पास होती है जब हम नहीं समझते। और सारी बातों को परमेश्वर के हाथों में छोड़कर और देकर हम इस तरह की शान्ति में कदम रखते हैं।

इतना सब कहने के बाद, मैं बताना चाहूंगा कि परमेश्वर ने हमें स्पष्ट रूप से दर्शाया है कि वह चाहता है कि हम उसकी इच्छा के ज्ञान से परिपूर्ण हो जाएं। अतः, उसके उद्देश्यों के अनुसार जीवन बिताने में मार्गदर्शन की बात आती है, वहां पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने हेतु हमें जो जानने की ज़रूरत है उसे प्रगट करने हेतु परमेश्वर अपनी ओर से कुछ भी रोककर नहीं रखेगा।

## क्या परमेश्वर की इच्छा की विभिन्न श्रेणियां हैं?

**रोमियों 12:1,2**
**[1] इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।**
**[2] और इस संसार के सदृष न बनो, परंतु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।**

कुछ लोग बाइबल के इन दो वचनों का उपयोग परमेश्वर की इच्छा की तीन भिन्न श्रेणियों या वर्गों को दर्शाने के लिए करते हैंः "भली", "भावती" और "सिद्ध"। परंतु, हम परमेश्वर की इच्छा की तीन भिन्न श्रेणियों की इस कल्पना से सहमत नहीं हैं और वास्तव में वह त्रूटिपूर्ण है और लोगों को समझौतापूर्ण जीवन बिताने हेतु प्रेरित करती है। हम इसका सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करेंगे।

सर्वप्रथम, हमें समझना है कि "भली और भावती और सिद्ध" तीन निरूपक हैं जिनका उपयोग एक ही बात का वर्णन करने के लिए किया गया है—परमेश्वर की इच्छा। परमेश्वर की इच्छा भली, भावती, और सिद्ध है। उदाहरण के तौर पर, यदि हम कहते हैं कि सेब लाल, स्वादिष्ट, और मधुर सुगंध वाला है तो हम एक ही बात—सेब—तीन भिन्न वस्तुएं नहीं—का वर्णन करने हेतु तीन निरूपकों का उपयोग कर रहे हैं।

दूसरी बात, "भावती" का अर्थ "अनुमति देनेवाली" या अनुमेय नहीं है। रोमियों 12:1,2 में दिया गया भावती शब्द वही ग्रीक शब्द है जिसका उपयोग इफिसियों 5:10 में किया गया है जहां पर हमने यह समझाया कि ग्रीक (*"euarestos"*) का अर्थ है जो परमेश्वर के लिए **पूर्णतया अनुकूल** और **मनभावन** है। कृपया ध्यान दें कि वही शब्द अर्थात "भावती" रोमियों 12:1 और रोमियों 12:2 में भी उपयोग किया गया है, हमारे शरीर परमेश्वर के लिए पवित्र और भावते (मनभावना और प्रसन्नतादायक) होने चाहिए। "स्वीकारयोग्य" यह शब्द पवित्र होने की बराबरी में है। हम रोमियों 12:1 में स्वीकारणीय का अर्थ परमेश्वर के लिए आंशिक रूप से स्वीकारणीय, परमेश्वर के लिए अनुमेय ऐसा नहीं लगाते। अतः, रोमियों 12:2 में जब हम स्वीकारयोग्य यह शब्द पढ़ते हैं, तो हमें इस समझ के हमारे आकलन में सुसंगत होना चाहिए। यह वही ग्रीक शब्द है। रोमियों 12:2 के स्वीकारयोग्य इस शब्द का अर्थ है पूर्णतया मनभावना और प्रसन्नतादायक, परमेश्वर की भावती और सिद्ध इच्छा के समान।

तीसरी बात, यदि परमेश्वर की इच्छा की तीन श्रेणियों का ऐसा प्रकाशन था, तो पौलुस अपनी पत्रियों में इसका कहीं उल्लेख नहीं करता। बल्कि,

हम अन्य पत्रियों में देखते हैं (जैसा कि हमने कुलुस्सियों और इफिसियों में देखा है) कि हम परमेश्वर की सिद्ध इच्छा स्पष्ट रूप से जान सकते हैं।

चौथी बात, यीशु मसीह के जीवन, शिक्षा और सेवकाई को देखें। हम नहीं पाते कि यीशु परमेश्वर की इच्छा की विभिन्न श्रेणियों के विषय में सीखा रहा है। जब बीमार उसके पास आए, तब यीशु को पिता से यह प्रार्थना करना नहीं पड़ा कि उन्हें चंगा करना परमेश्वर की इच्छा थी या नहीं, या बीमार बने रहना उनके लिए उसकी "अनुमेय इच्छा" थी। जो कोई उसके पास विश्वास के साथ आया उसने उन्हें चंगा किया और छुड़ाया।

अन्य समस्याओं के विषय में क्या जैसे (अ) मनुष्य का पतन, (आ) जंगल में इब्रानियों का मांस मांगना, (इ) अपने पड़ोसी राष्ट्रों के समान इस्राएल का राजा की मांग करना, आदि। क्या यह परमेश्वर की इच्छा थी? नहीं। क्या परमेश्वर ने इसकी अनुमति दी? जी हां। क्या इसका अर्थ यह है कि "स्वीकारयोग्य इच्छा" और "अनुमेय इच्छा" जैसी कोई बात है। नहीं है। इसका अर्थ मात्र यह है कि जो कुछ भी हुआ यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी और फिर भी क्योंकि परमेश्वर ने लोगों को स्वतंत्र इच्छा और उनके द्वारा किए गए फैसलों के बीच चुनाव करने की स्वतंत्रता दी है। परमेश्वर हमें अनुमति देता है कि जो चुनाव हम करते हैं उसके साथ हम जाएं और वह हमारे साथ कार्य करता है, हमें अपनी ओर वापस बुलाता है, ताकि उसके उद्देश्यों को स्थापित होते हुए देखें। परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार सारी बातों को पुनर्स्थापित करता है। उदाहरण के तौर पर, इस पर विचार करें: शहर में सरकार की इच्छा (या कानून) नहीं है कि हत्याएं हों। परंतु क्या हत्याएं होती हैं? जी हां। क्या इसका अर्थ यह है कि सरकार के पास एक "अनुमेय कानून" है जो हत्याओं के अनुमति देता है? बिल्कुल नहीं। सभी हत्याएं कानून के विरोध में हैं। सरकार कानून पर अमल करने के लिए कार्य करती है और जहां बातों का उल्लंघन हुआ है वहां कानून को पुनर्स्थापित करती है।

इसलिए जिसे कुछ लोग "अनुमेय इच्छा" कहते हैं वह वास्तव में जो परमेश्वर की इच्छा नहीं है और ऐसा कुछ है जो परमेश्वर की इच्छा के बाहर है।

परमेश्वर की "अनुमेय" इच्छा का खतरा यह है कि वह विश्वासियों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने हेतु एक अत्यंत सहज तरीका प्रदान करती है। तर्क यह है कि जहां तक मैं परमेश्वर की इच्छा के बाहर नहीं हूं, और यदि मैं परमेश्वर की अनुमेय इच्छा में हूं तो मैं ठीक हूं। इस बात को सीधे शब्दों में कहें—जिसे लोग परमेश्वर की "अनुमेय इच्छा" में रहना कहते हैं, वह वास्तव में परमेश्वर की इच्छा से बाहर रहना है।

परमेश्वर ज्योति है और उसमें कोई अंधकार नहीं है, और उसमें कोई "संदेह की बात" नहीं है।

हमारा लक्ष्य है परमेश्वर की भली, स्वीकार योग्य और भावती इच्छा को समझना और उसमें चलना।

## हमारी ज़िम्मेदारी: खोज करना, सुनना, आज्ञा मानना

परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करते समय हमें अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करना है या अपनी भूमिका निभाना है। हमें खोजना, सुनना और उसकी आज्ञा मानना है।

## खोजना

खोजने का अर्थ है हम सच्चे मन से चाहते हैं और परमेश्वर से मांगते हैं कि वह हमारा मार्गदर्शन करे और वह हमें निर्देश दे। हम उसकी इच्छा जानने की अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं ताकि हम उसे आदर देते हुए और उसे प्रसन्न करते हुए चल सकें।

परमेश्वर हमें निमंत्रण देता है कि हम उसे खोजें और उससे बिनती करें ताकि जिन बातों को हम नहीं जानते उन बातों के प्रगटीकरण को प्राप्त कर सकें।

**यिर्मयाह 29:12,13**

**12 तब उस समय तुझ मुझ को पुकारोगे और आकर मुझ से प्रार्थना करोगे और मैं तुम्हारी सुनूंगा।**
**13 तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे।**

हमारा खोज करना सम्पूर्ण हृदय से होना चाहिए। ऐसे हृदय की प्रवृत्ति को परमेश्वर उत्तर देता है।

**यिर्मयाह 33:3**
**मुझसे प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।**

खोज करना प्राप्त करने की ओर ले जाता है। जब हम आग्रह के साथ परमेश्वर से पूछेंगे और हमारे जीवनों में उसकी इच्छा और अभिदिशा को जानने की इच्छा करेंगे, तो हम उसके मार्गदर्शन को समझने लगेंगे और उसे प्राप्त करेंगे।

**मत्ती 7:7,8**
**7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।**
**8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।**

हमारा परमेश्वर का मार्गदर्शन खोजना और उसे प्राप्त करना भिन्न अभिव्यक्तियां धारण कर सकता है:

## *1. सबकुछ सामान्य रहते हुए उसके मार्गदर्शन की खोज करना*

प्रतिदिन के जीवन में, हम आत्मा में चलते हैं, नवीनीकृत मन के साथ चलते हैं, और जब महत्वपूर्ण निर्णय लेने का समय आता है, तो उसकी सुनना सीखते हैं। शायद आप व्यावसायिक सभा में होंगे और आपको कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेना है। अपने हृदय में प्रार्थना करें। उससे बातें करें और उससे परामर्श और मार्गदर्शन मांगें। परमेश्वर हमारे दिन के दौरान जब हम सामान्य परिस्थितियों से होकर गुज़रते हैं तब वह हमारा मार्गदर्शन करेगा।

## *2. खोज के विषय समय के दौरान उसके मार्गदर्शन की खोज करना*

जीवन में महत्वपूर्ण (प्रमुख) निर्णय लेते समय हम परमेश्वर की खोज करने हेतु विशेष समय निकालकर रख सकते हैं, हमें निकालकर रखना चाहिए।

इसका अर्थ यह होगा कि हम प्रार्थना में, उसके वचन, आराधना में—उसके साथ एकांत में अतिरिक्त समय निकालें, और उससे मार्गदर्शन पाने हेतु अपने आपको तैयार करें। उसकी खोज करने के विशेष समयों का अर्थ यह भी हो सकता है कि हम उसकी बाट जोहते हुए कई दिन (सप्ताह) बिताते हैं, जब तक कि हम निश्चित रूप से यह न जानें कि वह क्या चाहता है कि हम करें।

कुछ लोग परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने की खोज में उपवास और प्रार्थना करने का चुनाव कर सकते हैं, विशेषकर मुख्य निर्णयों में। यशायाह 58 हमें सिखाता है कि "चुने हुए उपवास" के परिणामों में से एक है उसका प्रकाश हमारे जीवनों में प्रकाशित होता है (यशायाह 58:8) और परमेश्वर निरंतर हमारा मार्गदर्शन करता हैः

**यशायाह 58:11**
**और यहोवा तुझे लगातार लिए चलेगा, और काल के समय तुझे तृप्त और तेरी हड्डियों को हरी भरी करेगा; और तू सींची हुई बारी और ऐसे सोते के समान होगा जिसका जल कभी नहीं सूखता।**

## *3. "परमेश्वर के अनपेक्षित" क्षणों के द्वारा मार्गदर्शन*

उसके बाद परमेश्वर के वे अनपेक्षित क्षण हैं जहां परमेश्वर बोलना आरम्भ करता है और अपनी मनसा हम पर प्रगट करता है। ज़रूरी नहीं कि हम मार्गदर्शन की मांग कर रहे हों या उसे पाने का प्रयास कर रहे हों, परंतु परमेश्वर बीच में आता है और हमसे बातें करता है। यह किसी भी तरीके से आ सकता है जिसके विषय में हम बाद में विचार करेंगे।

## सुनना

**यूहन्ना 10:1-5,27**
**1 मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि जो कोई द्वार से भेड़षाला में प्रवेष नहीं करता, परंतु अन्य किसी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है।**
**2 परंतु जो द्वार से भीतर प्रवेष करता है, वह भेड़ों का चरवाहा है।**
**3 उसके लिए द्वारपाल द्वार खोल देता है, और भेड़ें उसका शब्द सुनती हैं, और वह अपनी भेड़ों को नाम ले लेकर बुलाता है और बाहर ले जाता है।**

**[4] और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।**
**[5] परंतु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परंतु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।**
**[27] मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।**

परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने हेतु दूसरा महत्वपूर्ण उपादान है सुनना।

ध्यान दें कि किस प्रकार प्रभु यीशु ने बताया कि अपने चरवाहे के सम्बंध में भेड़ें क्या करती हैं:

- ✓ भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं (वचन 3)—वे चरवाहे की आवाज़ सुनने हेतु कान लगाती हैं।
- ✓ भेड़ें उसका अनुसरण करती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज़ जानती हैं (वचन 4,27)—वे अपने चरवाहे का अनुसरण करने में सक्षम हैं क्योंकि वे उसकी आवाज़ जानती हैं और सुनती हैं।
- ✓ भेड़ें अजनबी का अनुसरण नहीं करतीं (वचन 5) क्योंकि वे पहचानती हैं कि यह उनके चरवाहे की आवाज़ नहीं है।

यह भेड़ों की ओर से सक्रिय सहभाग का दर्शक है।

उसी तरह, भेड़ों के रूप में, जब हम उसकी आवाज़ जानते, पहचानते और सुनते हैं, तब हम अपने चरवाहे का अनुसरण कर सकते हैं। परमेश्वर बोल रहा है। क्या हम सुन रहे हैं? क्या हम सही स्थानों में और सही आवाज़ सुन रहे हैं? क्या हम गलत आवाज़ों से बच रहे हैं या उन्हें अपना रहे हैं, अजनबी की आवाज़।

**भजनसंहिता 23:3,4**
**[3] वह मेरे जी में जी ले आता है। धर्म के मार्गो में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।**
**[4] चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा; क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।**

चरवाहे की लाठी और सोटा न केवल बचाव और सुरक्षा के लिए है, बल्कि मार्गदर्शन करने और भेड़ों को इकट्ठा करने के लिए भी है। एक समय ऐसा था जब चरवाहे भेड़ों की आगे से अगुवाई करते थे, उनकी आवाज़ पुकारते हैं और उसकी आवाज़ का अनुसरण करते हुए भेड़ें उसका अनुसरण करती थीं। ऐसा समय था जब भेड़ें जाना-पहचाना मार्ग लेती थी और चरवाहा पीछे से भेड़ों का अनुसरण करता था। चरवाहा भेड़ों को पुकारता था और भेड़ों को सही मार्ग पर बनाए रखने के लिए अपने सोटे और लाठी का उपयोग करता था। चरवाहे की आवाज़, उसकी लाठी और सोटा हम जो उसकी भेड़ें हैं उनके प्रति परमेश्वर के मार्गदर्शन का भिन्न चित्र हैं, ताकि हमें उस मार्ग पर बनाए रखें जिस पर वह चाहता है कि हम चलें। हमारा चरवाहा, परमेश्वर, हमारी अगुवाई करता है। हमें सुनने और अनुसरण करने की इच्छा रखना है।

## आज्ञा मानना

परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने हेतु तीसरा महत्वपूर्ण उपादान है आज्ञा मानना। परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन या अगुवाई करता है ताकि हम उसका अनुसरण कर सकें।

**नीतिवचन 3:32**
**क्योंकि यहोवा कुटिल से घृणा करता है, परंतु वह अपना भेद सीधे लोगों पर खोलता है।**

परमेश्वर सीधे मनवालों पर अपने गुप्त भेद को प्रगट करता है। सीधा व्यक्ति क्यों? उत्तर यह है कि क्योंकि वे परमेश्वर की दृष्टि में जो सही है उसे करने की इच्छा रखते हैं। परमेश्वर इसलिए बोलता है ताकि हम उसकी आज्ञा मान सकें और उसे प्रसन्न करने वाली चाल चल सकें।

परमेश्वर मार्गदर्शन करता है, परंतु हमें विश्वास, आज्ञाकारिता और धीरज के साथ उसका अनुसरण करना है। कभी-कभी आज्ञा मानना शरीर के लिए और हमारे मन की इच्छाओं के लिए 'दुखदायक' हो सकता है। परंतु परमेश्वर के मार्गदर्शन का पालन करने का अंतिम परिणाम है शान्ति। सबकुछ अच्छा होगा।

**भजनसंहिता 37:37**
**खरे मनुष्य पर दृष्टि कर और धर्मी को देख, क्योंकि मेल से रहनेवाले पुरुष का अन्तफल अच्छा है।**

## मनन

1. परमेश्वर के मार्गदर्शन को कैसे प्राप्त करें यह सीखने की यात्रा का आरम्भ करते समय, आपके जीवन के एक या उससे अधिक क्षेत्रों के विषय में लिखें जहां पर आपको मुख्य निर्णय लेने हैं और परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने की इच्छा रखना है।

2. अब तक परमेश्वर के साथ आपकी चालचलन के बाद, क्या आप ऐसे कुछ उदाहरण पाते हैं जहां पर आपको एहसास हुआ कि परमेश्वर आपका मार्गदर्शन कर रहा है? इनमें से कुछ घटनाओं पर मनन करें। आपने आपके लिए परमेश्वर की अभिदिशा को कैसे पहचाना और जाना?

# 2

# दाऊद ने परमेश्वर से पूछा

पुराने नियम में राजा दाऊद ऐसा व्यक्ति था जो परमेश्वर से अत्यंत गहरा प्रेम करता था और सम्पूर्ण जीवन परमेश्वर का अनुसरण करने का प्रयास करता था। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता शमुएल के द्वारा दाऊद के विषय में इस प्रकार कहा था, *"मुझे एक मनुष्य यिषै का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा"* (प्रेरितों के काम 13:22; 1 शमूएल 13:14 से उद्धृत)। कैसी अद्भुत गवाही, कि परमेश्वर दाऊद को मेरे मन के अनुसार जन कहता है। और दाऊद के विषय में यह कहते हुए उसे कितना भरोसा है कि वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा!

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में, पौलुस ने प्रचार करते हुए दाऊद के विषय में कहा:

**प्रेरितों के काम 13:36**
**क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया; और अपने बापदादों में जा मिला, और सड़ भी गया।**

दाऊद ने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार सेवा की। उसने परमेश्वर की इच्छा पूरी की, परमेश्वर के उद्देश्यों का अनुसरण किया और अपने जीवन के लिए परमेश्वर के कार्य को पूरा किया।

दाऊद के जीवन की कुंजी या रहस्य यह था कि वह ऐसा जन था जिसने निरंतर उसके द्वारा किए जाने वाले निर्णयों के विषय में पूछा।

अपनी जवानी के दिनों में दाऊद उसकी वीणा बजाने के लिए मशहूर था, वह साहसी, बुद्धिमान, सुंदर था और परमेश्वर उसके साथ था (1 शमूएल 16:18)। भविष्यद्वक्ता शमुएल ने इस्राएल का अगला राजा बनने के लिए उसे अभिषेक किया था (1 शमूएल 16:12,13)। गोलियत को मारने के बाद दाऊद ने बुद्धिमानी के साथ आचरण किया, उसे इस्राएल में

बहुत पसंद किया जाता था और उसका आदर किया जाता था, और लोग जानते थे कि परमेश्वर उसके साथ है (1 शमूएल 18:5,7,12,14-16,30)। गोलियत पर उसकी विजय के तुरंत बाद, दाऊद को अपनी रक्षा करने हेतु भागना पड़ा, क्योंकि शाऊल उसकी हत्या करने के फिराक में था। जब दाऊद भागता फिर रहा था, तब करीब चार सौ पुरुषों का दल दाऊद के पास आकर उसके साथ मिल गया और उन्होंने उसे अपना अगुवा स्वीकार कर लिया (1 शमूएल 22:1,2)। पवित्र शास्त्र में इस क्षण से आगे कई बातें लिखी गई हैं, जब दाऊद ने निर्णय लिए , और अपना कदम बढ़ाने से पहले परमेश्वर से पूछा। हमारे लिए यह मानना उचित होगा कि दाऊद के प्रारम्भिक दिनों से ही उसका यह जीने का तरीका था, भले ही यह हमारे लिए स्पष्ट रूप से लिखा नहीं गया है।

पवित्र शास्त्र हमारे लिए क्या लिखता है इस विषय में विचार करेंः

## जब आपकी अपनी टीम संकोच करती है

**1 शमूएल 23:1-5**

**1 और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं, और खलिहानों को लूट रहे हैं।**
**2 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूं? यहोवा ने दाऊद से कहा, जा, और पलिश्तियों को मारकर कीला को बचा।**
**3 परंतु दाऊद के जनों ने उससे कहा, हम तो इस यहूदा देश में भी डरते रहते हैं; यदि हम कीला जाकर पलिश्तियों की सेना का सामना करें, तो क्या बहुत अधिक डर में न पड़ेंगे?**
**4 तब दाऊद ने यहोवा से फिर पूछा, और यहोवा ने उसे उत्तर देकर कहा, कमर बान्धकर कीला को जा; क्योंकि मैं पलिश्तियों को तेरे हाथ में कर दूंगा।**
**5 इसलिये दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिश्तियों से लड़कर उनके पशुओं को हांक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। यों दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया।**

दाऊद ने प्रभु से पूछा कि क्या वह कीला में पलिश्तियों का सामना करे, और प्रभु ने उससे कहा कि वह ऐसा करे। परंतु, दाऊद की चार सौ पुरुषों की छोटी टुकड़ी डर गई और वे लड़ाई में जाने से हिचकिचाने लगे।

इसलिए दाऊद वापस परमेश्वर के पास गया और उसने प्रभु से दूसरी बार पूछा। वह सुनिश्चित करना चाहता था। फिर एक बार परमेश्वर ने दाऊद जाकर लड़ने के लिए कहा और उसे विजय का आश्वासन दिया। दाऊद ने और उसके लोगों ने विजय का अनुभव किया। दाऊद के लोगों के लिए यह आत्मविश्वास बढ़ाने वाली बात रही होगी। वे जानते थे कि उनका अगुवा परमेश्वर की ओर से सुनता था और जब परमेश्वर उनकी अगुवाई करेगा, तब वे सफलता को देखेंगे, भले ही वे संख्या में कम क्यों न हो।

आपकी टीम वे लोग हैं जो आपके आसपास हैं और जिन्हें आपके साथ यात्रा करने की ज़रूरत है। यह आपका अपना परिवार, मित्र या स्थानीय कलीसिया में ऐसा समूह हो सकता है जिसकी आप अगुवाई कर रहे हैं; या कार्यस्थल में आपकी प्रोजेक्ट टीम; या नेतृत्व की स्थिति में यह कोई संस्था हो सकती है जिसकी आप अगुवाई कर रहे हों। जब आप प्रभु की ओर से मार्गदर्शन पाते हैं, तब ऐसा समय भी हो सकता है जब आपकी टीम को यकीन न हो। वे आपके विचार से सहमत न हों। वापस परमेश्वर के पास जाइए। उसे खोजिए और फिर सुनिए। सुनिश्चित कीजिए कि आप उसकी ओर से सुन रहे हैं। प्रभु ने आपसे जो कुछ कहा उसके साथ आगे बढ़ें। आपकी टीम सफलता देखेगी और जानेगी कि प्रभु आपके साथ है!

## जब आप गम्भीर पराजय का सामना करते हैं

**1 शमूएल 30:1-8**

**1 तीसरे दिन जब दाऊद अपने जनों समेत सिकलग पहुंचा, तब उन्होंने क्या देखा कि अमालेकियों ने दक्षिण देश और सिकलग पर चढ़ाई की। और सिकलग को मारकर फूंक दिया,**

**2 और उसमें स्त्री आदि छोटे बड़े जितने थे, सब को बन्धुवाई में ले गए; उन्होंने किसी को मार तो नहीं डाला परंतु सभों को लेकर अपना मार्ग लिया।**

**3 इसीलिये जब दाऊद अपने जनों समेत उस नगर में पहुंचा, तब नगर तो जला पड़ा था, और स्त्रियां, बेटे बेटियां बन्धुवाई में चले गए थी।**

**4 तब दाऊद और वे लोग जो उसके साथ थे चिल्लाकर इतना रोए, कि फिर उनमें रोने की शक्ति न रही।**

**5 और दाऊद की दो स्त्रियां यिज्रेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल, बन्धुवाई में गई थी।**

**[6] और दाऊद बड़े संकट में पड़ा, क्योंकि लोग अपने बेटे बेटियों के कारण बहुत शोकित होकर उस पर पत्थरवाह करने ही चर्चा कर रहे थे। परंतु दाऊद ने अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण करके हियाव बान्धा।**
**[7] तब दाऊद ने अहीमेलेक के पुत्र एब्यातार याजक से कहा, एपोद को मेरे पास ला। तब एब्यातार एपोद को दाऊद के पास ले आया।**
**[8] और दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं इस दल का पीछा करूं? क्या उसको जा पकडूंगा? उसने उससे कहा, पीछा कर; क्योंकि तू निश्चय उसको पकड़ेगा, और निःसन्देह सब कुछ छुड़ा लेगा।**

दाऊद का दल अब बढ़कर छ सौ लोगों का हो गया था (1 शमूएल 30:9)। इस समय, उन्होंने गम्भीर पराजय का सामना किया। जब वे व्यस्त थे और दूर थे, तब शत्रू ने आक्रमण किया और उन्हें लूट लिया और उनके सारे परिवारों को बंदी बनाकर ले गए। यह अत्यंत दुखद परिस्थिति थी। अर्थात दाऊद का और उसके लोगों का दिल टूट गया। वे रोए। उन्होंने दुख के साथ विलाप किया। दाऊद के लोग दाऊद पर नाराज़ हो गए। दाऊद की दशा की कल्पना करें। उसे न केवल व्यक्तिगत दुख और पीड़ा का सामना करना पड़ा, बल्कि अपने दल के क्रोध को महसूस करना पड़ा और उसका सामना करना पड़ा। फिर भी हम दाऊद के बल और साहस को देखते हैं। पवित्र शास्त्र के वचन हमें बताते हैं कि दाऊद ने अपने आप को परमेश्वर में दृढ़ किया। अपने आंसुओं के मध्य वह परमेश्वर को पुकार सकता था, प्रार्थना कर सकता था, गीत गा सकता, वह परमेश्वर से और प्रेम करता रहा। उसने परमेश्वर से बल प्राप्त किया। अगला कार्य जो दाऊद ने किया वह यह था कि। उसने परमेश्वर से पूछा। वह इस परिस्थिति में परमेश्वर का मार्गदर्शन पाना चाहता था। परमेश्वर क्या चाहता था कि वह करे? इस विपत्ति के प्रति दाऊद को क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करना था? शत्रू का पीछा करने हेतु प्रभु ने दाऊद को मार्गदर्शन और निर्देशन दिया और दाऊद को आश्वासन दिया कि वह और उसके लोग सब कुछ वापस पा लेंगे। और उन्होंने वापस पाया।

हमारे लिए यह कैसा सामर्थी सबक है! जब हम गम्भीर पराजय, हमें पीछे करनेवाली विपत्ति का सामना करते हैं, तब हम वही करें जो दाऊद ने किया। हमें अपने आप को प्रभु में दृढ़ करना है आौर उसके बाद परमेश्वर

से इस विषय में मार्गदर्शन और निर्देशन पाना है कि परिस्थिति का सामना कैसे करे और क्या कदम उठाएं।

## जब आप जीवन में परिवर्तन का अनुभव करते हैं

**2 शमूएल 2:1-4**
**[1] इसके बाद दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं यहूदा के किसी नगर में जाऊं? यहोवा ने उससे कहा, हां जा। दाऊद ने फिर पूछा, किस नगर में जाऊं? उसने कहा, हेब्रोन में।**
**[2] तब दाऊद यिजेली अहीनोअम, और कर्मेली नाबाल की स्त्री अबीगैल नाम, अपनी दोनों पत्नियों समेत वहां गया।**
**[3] और दाऊद अपने साथियों को भी एक एक के घराने समेत वहां ले गया; और वे हेब्रोन के गावों में रहने लगे।**
**[4] और यहूदी लोग गए, और वहां दाऊद का अभिषेक किया कि वह यहूदा के घराने का राजा हो।**

दाऊद अपनी जान छुड़ाकर भाग रहा था, उसका पीछा कर रहे राजा शाऊल से बचने के प्रयास में वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकता फिर रहा था। अचानक सब कुछ बदल गया। दाऊद को समाचार मिला कि शाऊल की मृत्यू हो गई। जो व्यक्ति दाऊद की जान के पीछे पड़ा था, अब नहीं रहा। दाऊद के जीवन में यह परिवर्तन का क्षण था। अब दाऊद को भागते फिरना नहीं था। वह स्थिरता और दृढ़ता के स्थान में आगे बढ़ सकता था। फिर से सबसे पहले कार्य जो दाऊद करता है वह है प्रभु से पूछना। वह प्रभु से पूछता है कि क्या वह यहूदा के नगरों में से किसी में फिर जाकर बस सकता है। जब प्रभु ने सकारात्मक उत्तर दिया, तब दाऊद ने प्रभु से पूछा कि उसे किस क्षेत्र में जाना चाहिए। परमेश्वर ने उसे हेब्रोन को जाने के लिए कहा। जब दाऊद फिर हेब्रोन में जा बसा, तब यहूदा के लोगों ने आकर दाऊद को अपने राजा के रूप में अभिषेक किया! यह समस्त इस्त्राएल पर राजा बनने की उसके जीवन की बुलाहट के पूरे होने की ओर एक कदम था। साढ़े सात वर्षों बाद जब दाऊद हेब्रोन में था, तब इस्त्राएल के सम्पूर्ण राष्ट्र के अगुवे दाऊद के पास आए और उन्होंने उसे समस्त इस्त्राएल पर राजा होने के लिए निमंत्रित किया (2 शमुएल 5:1-5)।

परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करने और जैसे वह हमारी अगुवाई और निर्देशन करता है उसके अनुसार उसके साथ आगे बढ़ने के मूल्य पर यहां कैसा महत्वपूर्ण सबक है। परमेश्वर के मार्गदर्शन में जीवन के परिवर्तनों से आगे सफर करना हमें उन सारी बातों को पूरा करने हेतु स्थान प्रदान करेगा और हमें नज़दीक लाएगा जो परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए ठहराया है।

## वही शत्रू, वही युद्धभूमी, भिन्न रणनीतियां

**2 शमूएल 5:17-25**

**17 जब पलिश्तियों ने यह सुना कि इस्राएल का राजा होने के लिए दाऊद का अभिषेक हुआ, तब सब पलिश्ती दाऊद की खोज में निकले; यह सुनकर दाऊद गढ़ में चला गया।**
**18 तब पलिश्ती आकर रपाईम नाम तराई में फैल गए।**
**19 तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, क्या मैं पलिश्तियों पर चढ़ाई करूं? क्या तू उन्हें मेरे हाथ कर देगा? यहोवा ने दाऊद से कहा, चढ़ाई कर; क्योंकि मैं निश्चय पलिश्तियों को तेरे हाथ कर दूंगा।**
**20 तब दाऊद बालपरासीम को गया, और दाऊद ने उन्हें वहीं मारा; तब उसने कहा, यहोवा मेरे सामने होकर मेरे शत्रुओं पर जल की धारा की नाई टूट पड़ा है। इस कारण उसने उस स्थान का नाम बालपरासीम रखा।**
**21 वहां उन्होंने अपनी मूरतों को छोड़ दिया, और दाऊद और उसके जन उन्हें उठा ले गए।**
**22 फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गए।**
**23 जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार।**
**24 और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फूर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है।**
**25 यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेज़ेर तक पलिश्तियों को मारता गया।**

समस्त इस्राएल पर राजा नियुक्त किए जाने पर, दाऊद ने सिय्योन नामक किले (दुर्ग, गढ़) पर अधिकार कर लिया और उसके चारों ओर दाऊद के नगर की स्थापना की, जो प्राचीन यरूशलेम की दो पहाड़ियों के पूर्व में था। यरूशलेम के पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण में पुराने शत्रू फिलिस्तिनियों

ने रपाईम की तराई में अपने आप को तैनात कर दिया। दाऊद ने परमेश्वर से पूछा कि क्या वह शत्रू का सामना करे और परमेश्वर ने कहा कि वह जाए और परमेश्वर ने विजय की प्रतिज्ञा की। दाऊद ने और उसके पुरुषों ने विजय का अनुभव किया और इस बात की पुष्टि की कि बलवन्त शत्रू के खेमे में परमेश्वर ने उसे विजय दिलाई। कुछ समय बाद, वही शत्रू उसी स्थान में रपाईम की तराई में वापस लौट आया। अब दाऊद ने हमेशा की तरह अपना कार्य नहीं किया। अपनी पिछली विजय के आधार पर उसने दृष्टता से कार्य नहीं किया। उसने फिर एक बार परमेश्वर से पूछा। परमेश्वर ने इस बार उसे भिन्न रणनीति प्रदान की। परमेश्वर ने शत्रू से लड़ने हेतु स्वर्गदूतों की सेना को भेजा। स्वर्ग की सेना की सहायता से दाऊद ने और उसके पुरुषों ने शत्रू को पराजित कर दिया।

हमारे शत्रू शैतान और उसकी दुष्टात्माओं पर हमें जो अधिकार और विजय प्राप्त है। उसमें चलने हेतु यहां कुछ महत्वपूर्ण सबक हैं। परमेश्वर ने हमें उपयोग करने हेतु कुछ सामर्थी हथियार दिए हैं जिनके द्वारा हम निःसंदेह रूप से शत्रु पर प्रभुता में चलेंगे। शैतान और उसकी दुष्टात्माओं का केवल एक ही स्थान है, हमारे पैरों के नीचे (लूका 10:19; रोमियों 16:20; इफिसियों 2:6)। फिर भी, जब यह शत्रू हमारे विरोध में आता है और हमारे विरोध में अपनी योजनाओं, युक्तियों और चाल को अपनाता है, तब हम परमेश्वर की सुन सकते हैं और परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए हथियारों का उपयोग कर शत्रू के सारे प्रयासों का प्रतिकार करने हेतु और उन्हें रद्द करने हेतु उससे रणनीतियां प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक लड़ाई में, परमेश्वर हमसे बातें करेगा कि हम कैसे दृढ़ खड़े रहें और पराजित शत्रू पर प्रभुता में कैसे चलें।

## जब बिना किसी स्पष्ट कारण के सबकुछ गलत होता है

**2 शमूएल 21:1**
**दाऊद के दिनों में लगातार तीन बरस तक अकाल पड़ा; तो दाऊद ने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा ने कहा, यह शाऊल और उसके खूनी घराने के कारण हुआ, क्योकि उसने गिबोनियों को मरवा डाला था।**

इस्राएल के राजा के रूप में दाऊद ने कई चुनौतियों का सामना किया। एक समय, उसके राज्य के दौरान, तीन वर्षों तक लगातार अकाल रहा। दाऊद बहुत चिंतित रहा होगा। इसलिए उसने इस विषय में प्रभु से पूछा। परमेश्वर ने मूल कारण उस पर प्रगट किया। उसका सम्बंध उसके पूर्ववर्ती राजा शाऊल द्वारा हुई हिंसा था, उसने गिबोनियों पर आक्रमण किया, जिसकी रक्षा करने की इस्राएल ने प्रतिज्ञा की थी (2 शमुएल 21:2)। इसलिए दाऊद ने पश्चाताप की ओर कदम बढ़ाया और गिबोनियों के साथ पुनःस्थापन कर लिया। अकाल खत्म हो गया।

समान परिस्थितियों में जिनका हम सामना करते हैं परमेश्वर की ओर से सुनना और उससे मार्गदर्शन प्राप्त करना कितना महत्वपूर्ण है। जब बिना किसी स्पष्ट कारण के सब कुछ बिगड़ता प्रतीत होता है, तब हमें प्रभु से उसका कारण पूछने की ज़रूरत है। क्यों? किन कारणों से ऐसा हो रहा है? फिर परमेश्वर की सुनें। परमेश्वर हमसे अपनी मनसा के अनुसार बात करेगा ताकि हम कदम उठा सकें और बदलाव को देख सकें।

## प्रभु से पूछने के भिन्न मार्ग

हमने कुछ ही उदाहरणों पर विचार किया है जहां दाऊद ने अपने जीवन में, परमेश्वर की ओर से सुना था और परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त किया। स्पष्ट रूप से और भी उदाहरण हो सकते हैं जो हमारे लिए लिखे नहीं गए हैं। परंतु हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि दाऊद क्यों परमेश्वर के मन के योग्य व्यक्ति था और क्यों दाऊद ने अपने जीवनकाल में परमेश्वर की सारी इच्छा को पूरा किया इसका एक कारण यह था कि उसने अपने जीवन की सारी ॠतुओं में परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज की और उसे प्राप्त किया।

हमारे पास उन सारी बातों का विवरण नहीं है कि किस प्रकार दाऊद ने हर बार परमेश्वर की ओर से सुना। हम जानते हैं कि परमेश्वर ने दाऊद के साथ उसकी आत्मा में प्रकाशन देकर, स्वप्नों के द्वारा, ऊरीम और तुम्मीम के द्वारा, दाऊद के आसपास के भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें की होगी। महत्वपूर्ण बात यह है कि दाऊद ने प्रभु से मार्गदर्शन मांगना, उसका मार्गदर्शन पाना और परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना सीखा।

दाऊद जो कुछ बना इसमें इन बातों की बड़ी भूमिका रही। ऐसा व्यक्ति जो निरंतर परमेश्वर से पूछता था और परमेश्वर की अगुवाई में जीवन बिताता था और उसके मार्गदर्शन में चलता था।

इस पुस्तक में हमारा उद्देश्य यह जानना है कि नई वाचा के अंतर्गत परमेश्वर के लोग होने के नाते हम जीवन की यात्रा करते समय किस प्रकार परमेश्वर से सुन सकते हैं और उससे मार्गदर्शन पा सकते हैं। काश की हमारे विषय में यह कहा जाए कि हम परमेश्वर के मन के योग्य जन हैं और हमने अपनी पीढ़ी में परमेश्वर की सारी इच्छा पूरी की।

## मनन

दाऊद ने जिस परिस्थिति का सामना किया, उस प्रकार की परिस्थितियों से होकर क्या आप गए हैं, जिस पर हमने इस अध्याय में विचार किया? इन अनुभवों पर मनन करें। क्या आपने परमेश्वर से पूछा? परिणाम क्या हुआ? अगली बार क्या आप भिन्न तरीके से कार्य करेंगे?

1. जब आपकी अपनी टीम संकोच करती है

2. जब आप गम्भीर पराजय का सामना करते हैं

3. जब आप जीवन में परिवर्तन का अनुभव करते हैं

4. वही शत्रू, वही युद्धभूमि, भिन्न रणनीतियां

5. जब बिना किसी स्पष्ट कारण के सबकुछ गलत होता है

# 3

# वचन

परमेश्वर मुख्य रूप से अपने वचन के द्वारा और पवित्र आत्मा के द्वारा हमारा मार्गदर्शन और अगुवाई करता है। परमेश्वर की दृष्टि में क्या सही है, उसकी इच्छा क्या है, और वह क्या चाहता है कि हम करें यह निर्धारित करने हेतु लिखित वचन सर्वाधिक महत्वपूर्ण मार्ग है। ईश्वरीय मार्गदर्शन का हर दूसरा स्वरूप लिखित वचन के अनुसार अधीन किया गया है और परखा गया है।

इस अध्याय में परमेश्वर के लिखित वचन के माध्यम से मार्गदर्शन पाने पर हम सरल अंतर्दृष्टियां प्रस्तुत करते हैं।

आरम्भ में हम कुछ वचनों पर विचार करें।

**भजनसंहिता 119:105**
**तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।**

कल्पना करें कि आपको अंधियारे में चलना पड़ा है। यह बहुत खतरे की बात होगी। हम नहीं जान पाएंगे कि हम कहां जा रहे हैं, हम अपना कदम कहां रखें, खतरों से कैसे बचें, आदि। हम सहज ही अपना टॉर्च उठाकर अपने आगे के रास्ते को रोशन करते हैं। हमारे आगे जब टॉर्च की रोशनी चमकती है, तब हम आत्मविश्वास के साथ चल सकते हैं। हम अपने अगले कदम के विषय में निश्चित रहते हैं। हम अपने आगे रोशनी चमका सकते हैं और थोड़ा आगे देख सकते हैं और उस दिशा के विषय में जान सकते हैं जिस ओर हम चल रहे हैं। जीवन की यात्रा के लिए परमेश्वर का वचन हमारा टॉर्च या मशाल है। परमेश्वर का वचन दीपक (टॉर्च या मशाल) के समान है जो हमारे कदमों को मार्गदर्शन करता है, वह ज्योति जो हमें वह मार्ग दिखाती है जो हमें लेना चाहिए।

**भजनसंहिता 119:130**
**तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है; उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।**

परमेश्वर का वचन हमें शिक्षा देता है, और हमें प्रकाश, समझ और बुद्धि देता है। कल्पना करें कि आपको एक कमरे में ले जाया गया है जो पूरी तरह अंधकारमय है। उस कमरे में और भी लोग बैठे हो सकते हैं, हो सकता है कि वह कमरा सजाया गया हो। वहां एक मेज होगी जिस पर खाने के लिए अच्छी अच्छी चीजें आदि हो सकती हैं, परंतु इनमें से कुछ भी मायने नहीं रखता और निरूपयोगी है। अंधियारे में बातों को समझना मुश्किल है। जैसे ही रोशनी आ जाती है, लोग राहत की सांस लेते हैं क्योंकि अब सबकुछ महत्वपूर्ण हो गया है। उसी तरह जीवन में, हम ऐसी परिस्थितियों में आ सकते हैं जहां पर बातें अर्थपूर्ण नहीं होती। हम नहीं जानते कि क्या करना चाहिए। परंतु उन क्षणों में, परमेश्वर का वचन हमें अलोकित करता है। हम उस परिस्थिति में परमेश्वर के उद्देश्य, अर्थ और निर्देशन को देख और समझ सकते हैं। हमें क्या करना चाहिए और उस परिस्थति के द्वारा कैसे आगे बढ़ना चाहिए इस विषय में हमें बुद्धि और समझ प्राप्त होती है। परमेश्वर उसके वचन के माध्यम से हमारी अगुवाई करता है।

**भजनसंहिता 37:31**
**उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है, उसके पैर नहीं फिसलते।**

परमेश्वर का वचन जो हममें है हमारे कदमों को स्थिर करता है, उन्हें दृढ़ और सुरक्षित करता है जिससे हम लड़खड़ाकर गिरते नहीं। जब हम परमेश्वर के वचन के मार्गदर्शन में चलते हैं, तब हमारे द्वारा उठाया जाने वाला प्रत्येक कदम मज़बूत और ठोस होता है। हवाएं, लहरें, और आंधियां हमारे विरोध में टकरा सकती हैं, परंतु हम खड़े रह पाते हैं, क्योंकि हमारे कदम परमेश्वर के वचन के द्वारा स्थिर किए जाते हैं। परमेश्वर का वचन मज़बूत, अटल, और दृढ़ बुनियाद है।

यहां पर कुछ तरीके बताए गए हैं जिससे परमेश्वर अपने लिखित वचन के माध्यम से बोलता, मार्गदर्शन करता, और हमारी अगुवाई करता है।

## परमेश्वर के वचन में शिक्षा

**2 तीमुथियुस 3:16,17**

**16 सम्पूर्ण (हर एक) पवित्र षास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेष, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है।**

**17 ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।**

सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र ईश्वर प्रेरित है और हमें **उपदेश देने** (शिक्षा का अर्थ है सीख), हमें **समझाने के लिए** (समझाना अर्थात कायल करना, यकीन दिलाना), हमें **सुधारने** (सरल मार्ग पर लाने, अगुवाई करने, मार्गदर्शन करने, निर्देश देने) और सही जीवन जीने हेतु **धर्म की शिक्षा** (शिक्षा देना, प्रशिक्षित करना, अनुशासित करना, सुसज्जित करना, कुशल बनाना) प्रदान करता है।

ध्यान दें कि यह वचन कहता है **"सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र"**। इसलिए हमें धीरे-धीरे सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र से, परमेश्वर की सारी मनसा के साथ, मात्र कुछ भाग से नहीं, परिचित होने की ज़रूरत है। विश्वासियों के नाते हमें सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र पढ़ने और उसकी खोज करते रहने की ज़रूरत है।

हमारे जीवनों के विभिन्न क्षेत्रों के सम्बंध में परमेश्वर ने उसके लिखित वचन में जिन बातों को पहले ही निवेदन किया है उनसे हमें परिचित होना चाहिए। ये निर्देश हैं जिनका हमें पालन करना है। उदाहरण के तौर पर, हम जानते हैं कि परमेश्वर ने पहले ही अपने वचन में बताया है कि पति को अपनी पत्नी के साथ और पत्नी को अपने पति के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। परमेश्वर ने पहले ही अपने वचन में बताया है कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ और बच्चों को अपने माता-पिता के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। परमेश्वर ने हमें निर्देश दिए हैं कि हम अपने पैसों का व्यवहार कैसे करें, आदि।

जिन बातों में पवित्र शास्त्र ने पहले ही परमेश्वर के हृदय, मन, और इच्छा को प्रगट किया है वहां हमें परमेश्वर से यह पूछने की ज़रूरत नहीं है कि हमें उसका पालन करने की ज़रूरत है या नहीं। परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में पहले ही हमें जो आज्ञा दी गई है उसका पालन हमें करना चाहिए

या नहीं इस विषय में परमेश्वर से प्रार्थना करने की और पूछने की ज़रूरत नहीं है। यह स्पष्ट है कि वह चाहता है कि हम उसकी शिक्षा या निर्देशों का अनुसरण करें। अतः, जब हम निर्णय लेते हैं, तब परमेश्वर का वचन, लिखित पवित्र शास्त्र हमारा आरम्भ बिन्दु बन जाता है। अपने चुनाव करते समय हमें परमेश्वर के वचन की शिक्षा से जुड़े रहना है।

ऐसा समय आएगा जब आपको यह अध्ययन करने की ज़रूरत होगी कि कुछ बातों के विषय में परमेश्वर का वचन क्या कहता है, ताकि आप जान सकें कि परमेश्वर ने ऐसी परिस्थितियों के विषय में क्या कहा है। आप परमेश्वर के पास जाते हैं, और उससे पूछते हैं कि वह अपने वचन के द्वारा आपसे बातें करे। उसके बाद आप पवित्र शास्त्र को ढूंढ़ने लगते हैं। आप सारी बातों को एक साथ जोड़ते हैं। जिस परिस्थिति का आप सामना कर रहे हैं उसके विषय में क्या करना चाहिए इस विषय में आप परमेश्वर के वचन से मार्गदर्शन और शिक्षा प्राप्त करते हैं। जब मैं अपना तकनीकी कारोबार (2001-2014) चला रहा था, तब मुझे कारोबार में ग्राहकों, कर्मचारियों के साथ व्यवहार करते समय, कठिन परिस्थितियों से निपटारा करते समय कई बार मुश्किल निर्णय लेने पड़ते थे, और मैं पवित्र शास्त्र को खोजता था और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करता था ताकि जान सकूं कि उन परिस्थितियों के सम्बंध में परमेश्वर का वचन विशिष्ट तौर पर क्या कहता है। मैं परमेश्वर के वचन के आधार पर निर्णय लिया करता था। परमेश्वर के वचन के माध्यम से परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने का यह एक उदाहरण है। मैं जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में ऐसा ही करता हूं। जीवन में निर्णय लेते समय हमेशा परमेश्वर के लिखित वचन से आरम्भ करें।

## संजीवित वचन

और उसके बाद ऐसा समय होता है जब परमेश्वर का मार्गदर्शन पाते समय, परमेश्वर हमारी परिस्थिति के लिए विशिष्ट तौर पर लिखित वचन के संजीवित होने के द्वारा हमसे बातें करता है। परमेश्वर के वचन का संजीवित होना विभिन्न तरह से आ सकता है। हम उनमें से कुछ का उल्लेख करते हैं।

हो सकता है कि आप किसी निर्णय के विषय में प्रार्थना कर रहे हैं और उसके बाद आप पवित्र शास्त्र के अनुच्छेद में, अंतर्दृष्टियों को देख पाते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से आपके उस निर्णय को सम्बोधित करती हैं। प्रभु का मन आपके सामने स्पष्ट हो जाता है, आप पहचान लेते हैं कि आपकी परिस्थिति में आपको क्या करना चाहिए और क्या निर्णय लेना चाहिए ऐसा वह चाहता है।

ऐसा उस समय हो सकता है जब आप पवित्र शास्त्र पढ़ते हैं, शायद आपके रोज के वाचन में। बाइबल के पृष्ठों से कोई वचन या अनुच्छेद “आपसे बातें करता है”। किसी परिचित अनुच्छेद से अचानक समझ, नई अंतर्दृष्टि आपके सामने प्रगट होती प्रतीत होती है। जैसा कि भजन के लेखक ने प्रार्थना की, आपकी आंखें खुल गईं, ताकि आप उसके वचन से कुछ अद्‌भुत देख सकें (भजनसंहिता 119:18)। उसके वचन में समय बिताते समय किसी वचन या अनुच्छेद के द्वारा परमेश्वर की उंगली एक निश्चित दिशा में आपको संकेत करती प्रतीत होती हैं।

अन्य समयों में, आप अपने प्रतिदिन का कार्य करते हैं और अचानक पवित्र शास्त्र का वचन आपके मन में आता है। यीशु ने कहा कि प्रभु ने हमें जो सिखाया है उसका पवित्र आत्मा हमें “स्मरण दिलाएगा” (यूहन्ना 14:26)। पवित्र शास्त्र का वचन जो आपके मन में आता है उसके द्वारा अन्य बातों के साथ साथ आपके जीवन के लिए मार्गदर्शन और अभिदिशा ले आएगा। इस प्रकार परमेश्वर का मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु परमेश्वर का वचन हमारे लिए संजीवित हो सकता है।

परमेश्वर के वचन का संजीव होना मेरे लिए व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने का एक माध्यम साबित हुआ है। कई अवसरों पर, जब मुझे महत्वपूर्ण निर्णय लेने होते हैं, तब मैं अकेले मेरे कमरे में जाता हूं, उस विषय में परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए अपनी बिनती उसके सामने रखता हूं और अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने लगता हूं। अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते समय अक्सर पवित्र शास्त्र का कोई वचन या अनुच्छेद मेरी आत्मा में आता है। यह परमेश्वर है जो उसके वचन को

मेरे लिए संजीवित करता है ताकि जिस बात के लिए मैं प्रार्थना करता हूं उसमें मेरा मार्गदर्शन करे। मैं जानता हूं कि परमेश्वर ने बातें की है, और मैंने वह मार्गदर्शन पाया है जो मैंने मांगा था। अब उस परिस्थिति में उसके वचन का पालन करना मेरा काम है।

## *मार्च 1990: आत्मिक कुशलता पाठ्यक्रम, मनिपाल*

मैंने 1986-1990 में मनिपाल से इंजीनियरिंग की पदवी परीक्षा पास की। जनवरी 1989 में, तीसरे वर्ष के दौरान, मैंने साप्ताहिक शनिवार की सभाएं आरम्भ की थी जिन्हें हम "विश्वासियों की संगति सभाएं" कहते थे (इस विषय मैं बाद में और बताना चाहूंगा)। डेविस जॉनरॉज मेडिकल कॉलेज के छात्र थे जो उस संगति का हिस्सा थे और पदवी प्राप्त कर वहां से जाने के बाद मैं अगुवाई की सेवा डेविस को सौंपना चाहता था। मार्च 1990 के दौरान डेविस डॉ. मार्क और बेत्सी न्यूनश्वांडर द्वारा संचालित आत्मिक कुशलता पाठ्यक्रम में भाग लेने के लिए वेल्लोर गए हुए थे। वे अमेरिकन बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त डॉक्टर्स थे, दोनों ने दुगनी विशेषता हासिल की थी। डेविस ने फोन करके पूछा कि क्या हम डॉ. मार्क और बेत्सी को मनिपाल बुलाकर वहां के छात्रों के लिए आत्मिक कुशलता पाठ्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। यह दो दिनों की संक्षिप्त सभा होगी। मुझे निर्णय लेना था। विद्यार्थियों की उस सहभागिता में मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र थे, और उसका अगुवा होने के नाते मेरे मन में दो बातें थीं। इंजीनियरिंग कॉलेजों की सेमिस्टर परीक्षाएं कुछ ही हफ्तों पर थीं। इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन करने और उसमें भाग लेने का अर्थ था हममें से कइयों को हमारी सेमिस्टर परीक्षा से पहले तीन या चार दिन खोने पड़ते। क्या इससे हमारे परीक्षा फलों पर असर पड़ेगा? दूसरी चिंता थी इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए और दो अतिरिक्त दिनों के लिए होटल में सभागृह लेने के लिए रकम देनी पड़ेगी। जब ये सारे विचार मेरे मन में चल रहे थे, तब मैंने डेविस से कहा कि मैं उससे फिर बात करूंगा। मुझे स्मरण है कि आत्मिक कुशलता पाठ्यक्रम का आयोजन न करने की ओर मेरे मन का झुकाव था। परंतु हुआ ऐसा। अगली सुबह, जब मैं नींद से जाग रहा था, तब मैंने मेरे हृदय में एक छोटा सा दर्शन देखा और किसी चीज़ को वहां से जाते देखा,

कार के विंड शील्ड वाइपर ब्लेड के समान और नीतिवचन 3:5,6 के वचनों को सुना (श्रवणीय आवाज़ में नहीं)। ऐसा एक क्षण में हुआ। एक पल में, तुरंत मैंने जान लिया कि परमेश्वर ने संजीवित वचन के द्वारा अत्यंत स्पष्ट रूप से बातें की है। हालांकि मेरे मन में अब भी सवाल और चिंताएं थीं, फिर भी परमेश्वर ने मुझ से बातें की थी। मैंने डेविस को बताया कि हम आगे बढ़कर डॉ. मार्क और बेत्सी न्यूनश्वांडर के साथ मनिपाल में आत्मिक कुशलता पाठ्यक्रम आयोजित करेंगे। यह मनिपाल के छात्रों की संगति के जीवन में किसी महत्वपूर्ण बात का आरम्भ था। आने वाले वर्षों में, डॉ. मार्क और बेत्सी मनिपाल को लौटे और उन्होंने परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य देखा जिसने कई विद्यार्थियों के जीवनों को प्रभावित कर दिया। सेवकाई के उस समय के फल के विषय में आज भी उन छात्रों द्वारा बोला जाता है जिनके जीवन उस मुलाकात के दौरान छू लिए गए।

और इस प्रकार कई अवसर रहे हैं जब संजीवित वचन के द्वारा परमेश्वर द्वारा बोले गए निर्णयों को हम लेते हैं।

## *जनवरी 2013: एपीसी मैंगलोर*

एक समय था जब मैंगलोर की हमारी कलीसिया की स्थिति ठीक नहीं थी। लोगों की संख्या घट गई थी और स्थानीय कलीसिया की अगुवाई करने हेतु हमारे पास कोई नहीं था। मैं बहुत निराश हो गया था और सभी व्यवहारिक दृष्टिकोणों से एकमात्र तर्कपूर्ण कदम था स्थानीय कलीसिया बंद कर देना और कुछ लोग जो आते थे उनसे यह कहना कि वे किसी और स्थानीय कलीसिया में जाएं। दूसरा कोई विकल्प दिखाई नहीं देता था। मैं प्रभु से प्रार्थना कर रहा था और बिनती कर रहा था कि इस विषय में क्या करें। क्या हम कलीसिया बंद कर दें या जारी रखें? यदि हम जारी रखते हैं तो इस कार्य में अगुवाई कौन करेगा? उस समय हमारे पास कोई नहीं था जो कि वहां मैंगलोर में उस कार्य की पूरी ज़िम्मेदारी स्वीकार करता। रविवार जनवरी 13, 2013 को इस विषय में जब मैं परमेश्वर की खोज में था, तब परमेश्वर ने यशायाह 40:1-11 को मेरे हृदय में संजीवित किया। मैंने उसे मेरी बाइबल में चिन्हांकित कर लिया। यह परमेश्वर का उत्तर था।

इसलिए मैंने निर्णय लिया कि एपीसी मैंगलोर को जारी रखें। उस समय एपीसी मैंगलोर का नेतृत्व मैंने अपने हाथ में लिया। यह आसान नहीं था। बैंगलोर की स्थानीय कलीसियाओं की अगुवाई करना और हर रविवार मैंगलोर जाना, और वहां से सारी बातों का प्रबंध देखना आसान नहीं था। कई बार इस समय के दौरान, मेरा मन जो कुछ मैं कर रहा था उसकी व्यवहारिकता पर सवाल करता था। हर समय मेरे मन में सवाल आते, मैं वापस यशायाह 40:1-11 पढ़ता और एपीसी मैंगलोर पर उसकी घोषणा करता। मैंने उस संजीवित वचन को थामे रहने का चुनाव किया जो परमेश्वर ने मुझे एपीसी मैंगलोर के लिए दिया था। यद्यपि यह चुनौतीपूर्ण समय था, फिर भी अंततः उसका फल आया। आज जब मैं लिखता हूं (जून 2019), तो मैं देखता हूं कि एपीसी मैंगलोर के पास एक उत्तम पास्टर दम्पत्ति हैं जो इस कार्य में अगुवाई कर रहे हैं और यह उन्नति प्राप्त स्थानीय कलीसिया है।

## प्रचार किया गया वचन

दूसरा सामान्य तौर पर अनुभव किया गया तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवनों में मार्गदर्शन लाता है, वह है लिखित वचन का उपयोग करना जब हम उस वचन को प्रचार होते हुए सुनते हैं। शायद आप एक कलीसिया की आराधना में या सभा में किसी बात के लिए प्रार्थना करते हुए आते हैं, तब जो वचन प्रचार किया जा रहा है उसके माध्यम से, ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर बिल्कुल उन्हीं बातों को सम्बोधित करता है जो आपके हृदय में हैं। दिलचस्पी की बात यह है कि कई लोग उस संदेश को सुन रहे हों और सभी महसूस करते हैं कि परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से उनसे बातें कर रहा है, हालांकि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय की बातें भिन्न हो सकती हैं। केवल परमेश्वर इस प्रकार कुछ कर सकता है जहां पर प्रचार किया जाने वाला लिखित वचन परमेश्वर के कई लोगों के लिए विभिन्न विषयों पर एक साथ परमेश्वर का परामर्श बन जाता है। कभी-कभी आप विभिन्न लोगों के द्वारा कई उपदेशों को सुनते हैं और उन सभी संदेशों के द्वारा ऐसा प्रतीत होता है कि परमेश्वर आपसे एक ही बात कर रहा है। कभी-कभी मसीही टीवी कार्यक्रम, आप जिस पॉटकास्ट को सुनते हैं उसके द्वारा, या आप जो पुस्तक पढ़ते हैं उसके द्वारा ऐसा हो सकता है। परमेश्वर का वचन विभिन्न

माध्यमों के द्वारा प्रचार किया जा सकता है। जब प्रचार किया जाने वाला वचन आपके हृदय में उतरता है, तब आप जानते हैं कि परमेश्वर ने आपसे बातें की है और आपको वह मार्गदर्शन और निर्देशन प्रदान किया है जिसकी आप खोज में थे। अब प्रभु की आज्ञा मानने की बारी आपकी है।

## अंदरूनी आवाज–हमारे विवेक की आवाज़

चौथा तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर हमें सलाह देने, हमारा मार्गदर्शन करने और निर्देश देने के लिए उसके लिखित वचन का उपयोग करता है, वह है अंदरूनी आवाज़, हमारे अपने विवेक के माध्यम से। हमारा विवेक हमारा अपना आत्मा है जो हमसे बातें करता है। हमारी मानव आत्मा की आवाज़ को विवेक कहा जाता है।

**अय्यूब 32:8**
**परंतु मनुष्य में आत्मा तो है ही, और सर्वशक्तिमान अपनी दी हुई सांस से उन्हें समझने की शक्ति देता है।**

**भजनसंहिता 51:6**
**देख, तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है; और मेरे मन ही में ज्ञान सिखाएगा।**

**नीतिवचन 20:27**
**मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है।**

परमेश्वर मनुष्य की आत्मा में श्वांस फूंकता है (प्रेरित करना, प्रकाशन भेजना) वह हमारी आत्मा में बुद्धि का ज्ञान उत्पन्न करता है। हमारी मानव आत्मा दीपक के समान है जिसका उपयोग परमेश्वर हमें खोजने के लिए, तथा हमारा मार्गदर्शन करने के लिए करता है।

हमारा विवेक हमारे हृदयों पर जो कुछ भी लिखा है उसके अनुरूप गवाही देता है या बातें करता है (रोमियों 2:15)। जब हमारा मानवीय आत्मा परमेश्वर के वचन की शिक्षा पाता है और पवित्र आत्मा की अधीनता में रहता है, तब हमारे आत्मा की आवाज़–हमारा अपना विवेक–विश्वसनीय मार्गदर्शक बन जाता है। हम अपने विवेक का अनुसरण करते हैं, जो हमसे

परमेश्वर के वचन के अनुसार और परमेश्वर की प्रेरणा के अनुसार बातें करता है। प्रेरित पौलुस ने कहा कि उसने परमेश्वर के सामने *"सच्चे विवेक से जीवन बिताया है"* (प्रेरितों के काम 23:1)। उसने हमेशा यह प्रयत्न किया कि *"परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे"* (प्रेरितों के काम 24:16)।

यह नई वाचा के जीवन का भाग है। परमेश्वर हमारे मनों पर और हृदयों पर वचन लिखता है और हर कोई प्रभु को जानेगा (इब्रानियों 8:10,11)।

विश्वासी होने के नाते हम अपने विवेक के द्वारा परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, जब उसका वचन हमारे हृदयों और मनों पर लिखा जाता है। अपने विवेक की सुनना सीखें। क्या आपका विवेक स्पष्ट और शुद्ध है? या क्या आपको लगता है कि आपके विवेक के साथ गलत हुआ है, उसे चोट पहुंचाई गई है, किसी तरह उसे आहत किया गया है? यदि आपने आपके विवेक के साथ गलत किया है तो उसका अर्थ यह है कि आपने ऐसा कुछ किया है जो परमेश्वर के वचन के विरोध में है। जब आप निर्णय लेने पर हैं, तब आप कुछ गलत पाएंगे, आपके अंदर कुछ गलत महसूस करेंगे। हम अक्सर व्यक्त करते हैं "मेरा विवेक मुझे यह करने की अनुमति नहीं देगा।" आपके अंदर एक प्रतिबंध होता है, जो आपके अपने विवेक से आता है—आपके आत्मा की आवाज़ जिसमें परमेश्वर का वचन लिखा है। आपको अपने विवेक का अनुसरण करना है। जब आप ऐसा करेंगे, तब आप परमेश्वर के वचन का अनुसरण करेंगे, और आपके जीवन के लिए उसके मार्गदर्शन में चलेंगे।

## सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाना

**2 तीमुथियुस 2:15**

**अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।**

हम परमेश्वर के वचन के साथ कैसे व्यवहार करते हैं इस विषय में हमें सावधान रहना है। हमें सत्य के वचन का "सही उलथा करना है"

(सही विभाजन, विच्छेदन या स्पष्टीकरण करना)। परमेश्वर उसके वचन की हमारी गलत व्याख्या और गलत स्पष्टीकरण के लिए ज़िम्मेदार नहीं है। परमेश्वर के वचन की गलत समझ हमें वचन के गलत लागूकरण की ओर प्रेरित करेगी जिससे सब प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। परमेश्वर के वचन की गलत समझ अजीब शिक्षाओं की ओर प्रेरित करेगी जो गंदे भोजन के समान है, जिनसे हमें लाभ नहीं होता, बल्कि वे हमें आत्मिक रीति से बीमार कर देते हैं (इब्रानियों 13:9)। अतः परमेश्वर के मार्गों और विचारों को समझने के लिए परमेश्वर की पूर्ण मनसा का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है।

## पवित्र शास्त्र के वचनों का गलत उपयोग न करें

परमेश्वर अपने लिखित वचन के द्वारा हमारा मार्गदर्शन और अगुवाई करता है यह तो हम कह चुके, परंतु कभी-कभी लोग पवित्र के साथ कुछ अजीब बातें करने लगते हैं। कभी-कभी जब कोई परमेश्वर का मार्गदर्शन पाना चाहते हैं तब वे अपनी बाइबल बंद करते हैं, फिर बाइबल खोलते हैं और अपनी उंगली कहीं रखते हैं, और उसके बाद देखते हैं कि पवित्र शास्त्र का वचन क्या कहता है। वे इसे अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन के रूप में ग्रहण कर सकते हैं। परमेश्वर इसे चाहे तो उपयोग कर सकता है, परंतु कृपया इस बात को समझें कि परमेश्वर ने हमें पवित्र शास्त्र का इस प्रकार उपयोग करने हेतु नहीं बुलाया है। हमें उसके वचन को पढ़ना है, उस पर मनन करना है, उसका अध्ययन करना है ताकि हम उसके वचन के अनुसार जीवन बिता सकें, उसके वचनों के साथ 'खेले' नहीं जैसा छोटे बच्चे करते।

हमें पवित्र शास्त्र के वचनों का गलत उपयोग नहीं करना है। यह सम्भावना है कि हम वचनों को उनके संदर्भ से निकालें और उन्हें तोड़-मरोड़कर अपने स्वार्थपूर्ण इरादों का समर्थन करने के लिए करें। ऐसा न करें। उदाहरण के लिए, यदि कोई जवान किसी स्त्री से प्यार करने लगता है, तो हो सकता है कि वह उसे पवित्र शास्त्र के प्रत्येक अनुच्छेद में "देखता हो।" बाइबल का प्रायः प्रत्येक वचन उसे इस बात की पुष्टि करता प्रतीत

होगा कि वही है जो उसके लिए है। वह उसे पवित्र शास्त्र से असीमित वचन भेजता है जो इस बात की पुष्टि करते हैं कि उस लड़की को क्यों उसके साथ विवाह करना चाहिए। परंतु इस प्रिय युवा महिला को पवित्र शास्त्र से एक भी वचन नहीं मिलता। वह उन्हीं अनुच्छेदों को पढ़ती है और स्पष्ट रूप से देखती है कि उनका विवाह से कोई सम्बंध नहीं है और वे उन दोनों के विषय में कुछ नहीं कहते। वह उलझन में पड़ जाती है और उस अति आत्मिक युवा के कारण भयानक दबाव में रहती है जिसे हर समय उसका दर्शन प्राप्त होता है और पवित्र शास्त्र के लगभग प्रत्येक अनुच्छेद में उसके प्रकाशन प्राप्त होते हैं। यह मजेदार बात लग सकती है, परंतु यह असामान्य नहीं है। यह पवित्र शास्त्र का गलत उपयोग है। इसीलिए जवान लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाने की ज़रूरत है और यह सीखने की ज़रूरत है कि परमेश्वर से सही रीति से मार्गदर्शन कैसे प्राप्त करें। यह पुस्तक कई बातों में बड़े प्रेम और आनंद के साथ सभी जवानों को अर्पित है जो परमेश्वर की ओर से सुनने की इच्छा रखते हैं और उनके जीवनों के लिए उसका मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहते हैं।

## मनन

1. आपके जीवन की इस अवस्था में आपको कौन से मुख्य निर्णय लेने की ज़रूरत है (उदाहरण माता-पिता के साथ व्यवहार, विवाह, करियर, कलीसिया, सेवकाई, अपने अधिकारी के साथ व्यवहार)? प्रत्येक मुख्य निर्णय के लिए परमेश्वर के वचन में दिए गए सामान्य निर्देशों के लिए जिनका आपको पालन करने की ज़रूरत है, उनके विषय में आप जो कुछ जानते हैं उन्हें लिखें।

2. परमेश्वर से बिनती करें कि जो निर्णय आपको लेने की ज़रूरत है उनके विषय में वह लिखित वचन के माध्यम से आपसे बातें करे। आप प्रतिदिन उसके साथ जो समय बिताते हैं उसमें उसके वचन को पढ़ने के द्वारा, या आपके दिन के अन्य क्षणों में वचन के द्वारा संजीवित किए जाने के द्वारा या जब वचन का प्रचार होते हुए सुनते हैं, तब उसकी ओर से सुनने के लिए तैयार रहें।

# 4

# आत्मा की अंदरूनी गवाही

प्रभु यीशु ने हमसे प्रतिज्ञा की कि वह दूसरा सहायक पवित्र आत्मा भेजेगा जो हमारे लिए वह सब कुछ हो जो यीशु मसीह है। प्रभु यीशु हमारे चरवाहे के रूप में हमारा मार्गदर्शक है। पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शक है। पवित्र आत्मा हमसे वही बोलता है जो प्रभु यीशु हमारे चरवाहे के रूप में हमसे बोलता है।

**यूहन्ना 16:13,14**
**13 परंतु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परंतु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।**
**14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।**

वचन 13 में, "मार्गदर्शक" का अर्थ है "मार्ग दिखाना"। पवित्र आत्मा हमें सब सत्य का मार्ग दिखाएगा। पवित्र आत्मा सब सत्य का मार्ग दिखाता है, इसलिए वह व्यक्तिगत तौर पर भी उन सारी बातों में हमारा मार्गदर्शन कर सकता है और करेगा जो उन सारे निर्णयों में जिन्हें हमें लेने की ज़रूरत है, परमेश्वर के लिए प्रसन्नतादायक और स्वीकारणीय हैं। वह समय से पहले बातों को हम पर प्रगट करेगा। यीशु हमसे जो बोल रहा है उस में से लेकर वह हमें बताएगा।

हम 1 कुरिन्थियों 2 में इस अनुच्छेद का सूक्ष्मता के साथ अवलोकन करें:

**1 कुरिन्थियों 2:9-16**
**9 परंतु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।**
**10 परंतु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।**

**[11] मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।**
**[12] परंतु हमने संसार का आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं,**
**[13] जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परंतु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।**
**[14] परंतु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।**
**[15] आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परंतु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।**
**[16] क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परंतु हममें मसीह का मन है।**

वचन 9,10: जिन बातों को परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है, उन्हें वह पवित्र आत्मा के द्वारा प्रगट करता है। "प्रगट किया" के लिए दिया गया ग्रीक शब्द (*"apokalupto"*) का अर्थ है ढक्कन हटाना, उजागर करना, प्रगट करना, जो पहले अज्ञात था उसे खोलना। परमेश्वर अपने आत्मा के द्वारा बातों को प्रगट करना।

वचन 11,12: केवल परमेश्वर का आत्मा परमेश्वर की बातों को जानता है। हमने परमेश्वर का आत्मा पाया है ताकि हम उन बातों को जानें (देखें, समझें, जानें) जो परमेश्वर ने हमें निःशुल्क दी हैं। अर्थात इसमें वह सब कुछ समाहित है जो परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किया है कि हम व्यक्तिगत रीति से चलें (इफिसियों 2:10)। पवित्र आत्मा इन बातों को हम पर ज्ञात करता है।

वचन 13-15: जिन बातों को पवित्र आत्मा हम पर प्रगट करता है, उन्हें आत्मिक रीति से समझने की ज़रूरत है। जो मात्र स्वाभाविक मन के अनुसार जीवन बिताते हैं वे उन बातों को समझ नहीं सकते जिन्हें पवित्र आत्मा प्रगट करता है। आत्मिक लोग होने के नाते, हमें हर एक बात को उनका स्वीकार करने से पहले परखना है (परीक्षण करना, पूछताछ करना)।

वचन 16: क्योंकि पवित्र आत्मा बातों को हम पर प्रगट करता है, अतः हममें मसीह का मन है। हम जान सकते हैं कि विशिष्ट बात के विषय में हमारा प्रभु यीशु क्या सोचता है।

नए नियम के विश्वासी होने के नाते पवित्र आत्मा के प्रगट करने वाले कार्य के कारण हममें मसीह का मन है। पवित्र आत्मा हमारे लिए मसीह के मन को उपलब्ध कराता है। वह यीशु के विचारों, उद्देश्यों, भावनाओं, योजनाओं, इरादों, निर्णयों, इच्छाओं और इच्छाओं और हिदायतों को हमें प्रदान करता है।

कई भिन्न तरीके होते हैं जिनके द्वारा पवित्र आत्मा परमेश्वर की बातों को और मसीह के मन को हम पर प्रगट करता है। हम उन्हें भिन्न भिन्न अध्यायों में प्रस्तुत करेंगे और इन विषयों को सम्बोधित करेंगेः पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही, पवित्र आत्मा की आवाज़, पवित्र आत्मा के वरदान, स्वप्न, दर्शन, और भविष्यद्वाणियां।

पहले हम पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही के विषय में समझेंगे।

## पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही

**रोमियों 8:14-16**

**14 इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,**

**15 क्योंकि तुमको दासत्व की आत्मा नहीं मिली कि फिर भयभीत हों, परंतु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं।**

**16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।**

परमेश्वर के पुत्र—जो लोग परमेश्वर के बेटे और बेटियों के नाते परमेश्वर के परिवार के हैं—उनकी विशेषता यह है कि वे परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं। इसलिए, हमें परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन में चलने का अधिकार प्राप्त हुआ है। वस्तुतः स्वयं पवित्र आत्मा ही ने हमें परमेश्वर के बेटे और बेटियां बनाया है। वह लेपालकपन का आत्मा है। वह हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है (इसका शाब्दिक अर्थ है साथ में साक्षी देना, सामुहिक प्रमाण के साथ गवाही देना, और सहयोगी गवाही के साथ समर्थन करना) कि हम परमेश्वर की संतान हैं (वचन 16)। यह वचन हमें सिखाता है कि **जिस तरह से हम जानते हैं कि हम परमेश्वर की संतान**

**हैं—अंदरूनी गवाही, अंतरात्मा में जानना, आंतरिक आश्वासन—वह पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा आता है।** अतः हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि पवित्र आत्मा उसके प्रमुख माध्यमों से एक के रूप में आंतरिक गवाही का उपयोग कर न केवल बेटे और बेटियों के रूप में हमारे लेपालकपन को दृढ़ करता है, बल्कि क्योंकि अब हम उसके बेटे और बेटियां हैं, अतः वह हमारी अगुवाई और मार्गदर्शन भी करता है।

अंदरूनी गवाही उस कायलियत के द्वारा, ज्ञान, आश्वासन, मत, भावनाओं, और संवेदनाओं के द्वारा आती है जो पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में देता है। आप कल्पना कर सकते हैं कि यह पवित्र आत्मा की ओर से एक हल्का सा स्पर्श, एक हल्की सी थपकी, धीरे से टहोका, या धीरे से सिर हिलाकर सहमति देना हो सकता है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि यह उसके समान नहीं है जो हम अपनी स्वयं की भावनाओं में महसूस करते हैं। हमें सावधान रहना चाहिए कि हम पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही को हमारे अपने विचार, इच्छाएं या भावनाएं समझ न बैठें जो हमारे प्राण में हैं।

**1 कुरिन्थियों 6:17**
**और जो प्रभु की संगति में रहता है, वह उसके साथ एक आत्मा हो जाता है।**

हमारा नया जन्म होने के बाद, आत्मिक रीति से हमारे साथ जो बातें हुई उनमें से एक यह है कि हम प्रभु के साथ एक आत्मा हैं, या आत्मिक तौर पर उसके साथ एक हो गए हैं। हमारा आत्मा उसके साथ सहभागी हो गया है और उसके साथ जो आत्मा है, एक हो गया है। अतः, यहीं पर वह हमसे और हम उससे सम्पर्क करते हैं। यहीं पर वह हमसे बातें करता है। वह जिस तरह हमसे बातें करता है उनमें से एक है आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा।

हम उन कई माध्यमों को सूचिबद्ध करते हैं जिनमें पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही हमारी आत्मा को निवेदन की जा सकती है। यह सूची

सम्पूर्ण नहीं है, परंतु कुछ बातों को बताती है जिसमें हम आत्मा की अंदरूनी गवाही प्राप्त करते हैं।

1. वचन द्वारा जिलाया जाना
2. अंतर्मन में आश्वासन
3. अंतर्मन में इच्छा
4. अंतर्मन में जानना
5. अंतर्मन में प्रेरणा
6. अंतर्मन में हलचल
7. अंतर्मन में पूर्व-ज्ञान
8. अंतर्मन में चेतावनी

हम ने इन बातों को विभाजित किया है ताकि पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही को समझने और पहचानने में सहायता हो सके। अक्सर हम बेटे और बेटियों के रूप में अपनी मीरास में चलने में सक्षम नहीं होते क्योंकि किसी ने हमें इसके प्रकाशन के विषय में नहीं बताया। हमारा जो कुछ है उससे हम बहुत नीचे जीवन बिताते हैं, और हम यह भी नहीं जानते कि हम इतना कुछ खो रहे हैं। सामान्य मसीही जीवन की हमारी समझ इतनी सीमित होती है, क्योंकि जो कुछ हमारा है उस विषय में हमने प्रकाशन नहीं पाया है। इसलिए, हम यह विश्वास करते हैं कि इन बातों को व्यवहारिक, समझने योग्य तरीके से विभाजित करने के द्वारा परमेश्वर के कई बेटे और बेटियों को परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में चलना आसान होगा।

यद्यपि हमने आठ तरीके बताए हैं जिनमें पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही हम तक पहुंचती है, फिर भी अक्सर ये सारी बातें एक साथ काम करती हैं। इसलिए, पवित्र आत्मा एक ही समय में इन आठ माध्यमों में से एक से अधिक बातों में हमारी आत्मा को गवाही देता है। इसके अतिरिक्त, यह भी ध्यान में रखें कि पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही आत्मा की आवाज़ के साथ आ सकती है, जिसके विषय में हम अगले अध्याय में चर्चा करेंगे। अतः, परमेश्वर कई तरह से हमारे साथ बातें करता है और हमें इन्हें

पहचानना है और हमारे जीवनों के लिए उसके मार्गदर्शन और निर्देशन को प्राप्त करते समय इन सारी बातों को पहचानना है और उसके मार्गदर्शन और अभिदिशा को प्राप्त करते हुए इन सारी बातों को एक साथ रखना है।

पवित्र शास्त्र के वचनों से संजीवित करने के अलावा, शेष सात अंदरूनी गवाहों के लिए, हमारे पास उचित नियंत्रण प्रणाली होना चाहिए ताकि जो कुछ हम अपनी आत्माओं में महसूस कर रहे हैं उन्हें प्रमाणित कर सकें। इस अध्याय के अंत में हम इस विषय में चर्चा करेंगे।

## 1. वचन द्वारा जिलाया जाना

हमने पिछले अध्याय में इस विषय में चर्चा की है। आप जो निर्णय लेने का प्रयास कर रहे हैं उसके सम्बंध में पवित्र आत्मा धीरे से आपको पवित्र शास्त्र के विशिष्ट वचन का स्मरण दिला सकता है। परमेश्वर का आत्मा पवित्र शास्त्र के वचन को आपकी आत्मा में प्रगट करता है। यह संजीवित किया जाना सामान्य तौर पर इतने धीरे से होता है कि यदि हम अपनी आत्मा में संवेदनशील न रहें, तो हम उसे खो सकते हैं।

## 2. अंतर्मन में आश्वासन

**फिलिप्पियों 4:6,7**

**6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो; परंतु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं।**
**7 तब परमेश्वर की शान्ति, जो समझ से बिलकुल परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीषु में सुरक्षित रखेगी।**

**कुलुस्सियों 3:15**

**और मसीह की शान्ति जिसके लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।**

ये दोनों वचन हमें सिखाते हैं कि विश्वासियों को अपने हृदय और मनों में परमेश्वर की शान्ति के साथ चलना है। जब हम अपनी चिंताओं को परमेश्वर के सामने रखते हैं जैसा कि फिलिप्पियों 4:6 में, तो हम परमेश्वर की शान्ति को अनुभव कर सकते हैं जो हमें इतना भर देती है कि वह

वास्तव में 'प्रहरी' का काम करती है। प्रहरी के लिए दिया गया ग्रीक शब्द ("*phroureo*") जिसका अर्थ है पहले से पहरेदार होना, अर्थात, संतरी के रूप में पहरा देना, हमारे मनों और हृदयों को घेरकर उन्हें रक्षा प्रदान करना। परमेश्वर की शान्ति हमारे मनों की रक्षा करती है, और सारे उपद्रव को बाहर रखती है!

परमेश्वर की ओर से यह शान्ति हमारे हृदयों में दूसरी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कुलुस्सियों 3:15 के अनुसार, वह हमारे हृदयों में "राज्य करती" है। ग्रीक भाषा में "राज्य करना" ("*brabeuo*") जिसका अर्थ है मध्यस्थी करना, निर्णय लेना, निर्धारित करना, निर्देश देना, नियंत्रित करना, बीच-बचाव करना, और शासन करना। अतः परमेश्वर की शान्ति पंच के रूप में कार्य करती है, हमारे हृदयों में निर्देश देने वाले, निर्धारित करने वाले, निर्णय लेने वाले तत्व के रूप में कार्य करती है।

जब आप कोई निर्णय लेने का विचार करते हैं, कोई कदम उठाने का फैसला लेते हैं, या किसी परिस्थिति के मध्य आपके हृदय में पवित्र आत्मा की ओर से शान्ति की उपस्थिति या अनुपस्थिति पंच, निर्णय लेने वाले, निर्धारित करने वाले, और निश्चित करने वाले कारक के रूप में कार्य करती है। इसका उल्लेख हम अंतर्मन में आश्वासन के रूप में करते हैं, जो पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा हमें दिया जाता है।

यदि हम आत्मा में जीवन बिताते हैं, तो हम आत्मा में चलेंगे और आत्मा के द्वारा चलाए जाएंगे (गलातियों 5:16,18,25)। जब हम आत्मा में चलते हैं, उसकी शरण, उसके प्रभाव की अधीनता में, उसके निर्देश में चलते हैं और आत्मा की अगुवाई में चलते हैं, तो हम आत्मा का फल प्राप्त करेंगे जिसमें आनंद और शान्ति सम्मिलित है (गलातियों 5:22,23)।

इसलिए जब आप निर्णय लेते हैं, तो देखें कि क्या आपके पास अंदरूनी गवाही है जो आपको पवित्र आत्मा की ओर से आने वाली शान्ति और आनंद के द्वारा आश्वासन प्रदान करती है। यदि आपके मन में उसकी शान्ति और आनंद है, तो वही करें जो करने का आपने संकल्प किया है। यदि आपको

शान्ति और आनंद नहीं प्राप्त होता, परंतु कुछ अलग महसूस होता है, त्रस्त, परेशान, तो रूक जाईए, अभी आगे मत बढ़िए। इंतज़ार कीजिए। आपको उस निर्णय में आगे नहीं बढ़ना है, या आपको बेहतर समय का इंतज़ार करना पड़ सकता है।

## 3. अंतर्मन में इच्छा

**भजनसंहिता 37:4**
**यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।**

"पूरा करेगा" के लिए दिए गए शब्द का एक अत्यंत विस्तृत अर्थ है और उसमें रखना, बनाना, प्रेरित करना, बहाल करना इनका समावेश है। इसलिए, जब हम परमेश्वर में मगन होते हैं या उसे अपने सुख का मूल जानते हैं, तो वह हमारे हृदय के मनोरथों अर्थात् इच्छाओं को बनाता है या रचता है या हृदय में इच्छा डालता है। जब हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में चलते हैं, तब वह हमारे अंदर उत्पन्न होने वाली इच्छाओं को प्रेरित करता है और आकार देता है। तब अर्थात्, वह उन्हें पूरा करता है और इन मनोरथों की पूर्णता को हमारे जीवनों में भी बहाल करता है।

**नीतिवचन 10:24**
**दुष्ट जन जिस विपत्ति से डरता है, वह उस पर आ पड़ती है, परंतु धर्मियों की लालसा पूरी होती है।**

**यूहन्ना 15:7**
**यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुममें बनी रहें तो जो चाहो मांगो, और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।**

दोनों वचन "कोरे चेक" के समान प्रतीत होते हैं जब वह कहता है कि जो इच्छा हम रखेंगे उसके अनुसार हमें प्राप्त होगा। परंतु, हमें "धर्मी जन" की विशेषताओं पर ध्यान देना है या हमारा उसमें वास करना और उसके वचन का हममें वास करना देखना है। जब हम इस प्रकार चलते हैं, तब पवित्र आत्मा, अंदरूनी गवाही के द्वारा हमारे हृदय में सही इच्छाओं को डालता है, बनाता है, और उत्पन्न करता है। हमें इन धर्मी इच्छाओं को

पहचानना है जो पवित्र आत्मा द्वारा हमारे हृदयों में जन्मी हैं और उसके बाद इन्हें पूरा होते हुए देखने हेतु परमेश्वर का अनुसरण करना है।

## *अक्तूबर 1981: सबसे प्रारम्भिक इच्छा*

परमेश्वर ने मेरे तेरहवें जन्म दिन से मात्र एक माह पूर्व 1981 अक्तूबर में अत्यंत सादगीपूर्ण तरीके से मेरे जीवन को छू लिया। सबसे प्रारम्भिक इच्छाएं जो मेरे अंदर संजीव हुई वह थीं सुसमाचार बांटना। किसी ने मुझे जाकर सुसमाचार बताने के लिए नहीं कहा। यह इच्छा मेरे अंदर ही उत्पन्न हुई। मैंने इस इच्छा का पीछा किया और सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ कर दिया, और मेरे कई जवान मित्रों को मैं प्रभु के निकट ले आया। जल्द ही मेरे मन में उसके वचन को सिखाने की इच्छा उत्पन्न हुई और मैंने उस इच्छा का अनुसरण किया और वैसा करने लगा। मैं तेरह वर्ष की उम्र से प्रचार करने और सिखाने लगा। उस समय, मुझे मेरे जीवन पर पासबान या प्रचारक या शिक्षक बनने की परमेश्वर की बुलाहट का कोई ज्ञान नहीं था। मैं केवल मेरे हृदय में जन्म लेने वाली इच्छाओं का अनुसरण कर रहा था, जिन्होंने अंततः मेरे जीवन के लिए परमेश्वर की अभिदिशा और उद्देश्य को खोजने में मेरी सहायता की।

उस समय से, कई बातें जो मैं करता हूं, अक्सर आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा मेरे अंदर उत्पन्न इच्छा से आती है, जब मैं उसे अपने सुख का मूल जानता हूं।

## *1985-1986: पेशेवर बनकर परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा*

जब मैंने बिशप कॉटन बाईज़ हाई स्कूल बैंगलोर से मेरी दसवीं कक्षा का अध्ययन पूरा किया (1984), तब मैं प्रभु के लिए उत्साह और आवेश से प्रज्वलित था। मैं सुसमाचार प्रचार करने और प्रभु की सेवा करने के अलावा और कुछ नहीं करना चाहता था। मुझे पढ़ाई करने (शिक्षा) में कोई बड़ा उद्देश्य दिखाई नहीं दे रहा था और मुझे लगा कि प्रभु यीशु शीघ आने वाला है और मुझे शिक्षा में अपना समय गंवाना नहीं चाहिए। मुझे बाहर

जाकर सुसमाचार प्रचार करना चाहिए और शिष्य बनाना चाहिए इसलिए मैंने मेरी शिक्षा त्यागने का निर्णय लिया। परंतु परमेश्वर ने, अपने अनुग्रह और दया से, दूसरी ओर मेरी अगुवाई की। (इस विषय में और विस्तार से "ईश्वरीय परामर्श" नामक अध्याय में दिया गया है।) इसलिए मैं वापस स्कूल गया और ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा की पढ़ाई मैंने जारी रखी, मेरे मन में बारहवीं कक्षा के बाद बाइबल कॉलेज (सेमीनरी) जाने की योजना थी। इन दो वर्षों 1985-1986 के दौरान, धीरे-धीरे मेरे हृदय में परिवर्तन आने लगा। पेशेवर बनकर परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा मेरे अंदर बढ़ने लगी। मैंने ज़रूरत महसूस की कि मैं अपने जीवन को लोगों के लिए एक नमूना, गवाही बनाऊंगा ताकि व्यक्ति व्यावसायिक या पेशेवर बनकर, शिक्षा पाकर, संसार में सफल होकर भी परमेश्वर के लिए आवेशी बन सकता है, परमेश्वर के राज्य के कार्य में पूर्णतया सहभागी होकर उसकी सेवा कर सकता है। "याजक और राजा" दोनों बनने की इच्छा मेरे हृदय में भरने लगी। मेरा विश्वास है कि परमेश्वर ये बदलाव ले आया और इस इच्छा को उसने मेरे हृदय में जन्म दिया। और इस प्रकार मैं इस इच्छा का अनुसरण करने लगा। इंजीनियरिंग कॉलेज में (1986-1990), यह आगे और स्पष्ट होती गई और मेरे अंदर यह इच्छा उभरने लगी कि मैं तकनीकी कम्पनी स्थापित करूं जो बाइबल के सिद्धांतों पर आधारित हो। मैं नहीं जानता था कि यह कैसे और क्या दिखेगा, फिर भी मैं मेरे अंदर की इच्छा के अनुरूप स्वप्न देखने लगा। मैं "परिस्थितियां और ईश्वरीय आयोजन" नामक बाद वाले अध्याय में बताऊंगा कि परमेश्वर ने वास्तव में यह इच्छा कैसे पूरी की और उसे अपने राज्य के उद्देश्यों के लिए कैसे उपयोग किया।

परमेश्वर के आत्मा के द्वारा इच्छाओं के हृदय में जन्म लेने के ये ऊपर्युक्त दो उदाहरण हैं जिन्होंने भविष्य में उद्देश्य को पूरा किया, परंतु ऐसे समय भी आएंगे जब पवित्र आत्मा उसकी अंदरूनी गवाही के द्वारा निश्चित समय में अपने एक उद्देश्य को पूरा करने की इच्छा रखता है। यहां पर एक ऐसा ही उदाहरण हैः

## *दिसंबर 1992: पूर्वी यूरोप में मिशन*

मैं यू.एस.ए. में विद्यार्थी था, तब सिंतबर/ऑक्तूबर 1992 के करीब, मैंने सुसमाचार प्रचार करने हेतु पूर्वी यूरोप के मिशन पर जाने की गहरी इच्छा महसूस की। इससे परे मेरे पास कोई जानकारी नहीं थी, कोई सम्पर्क नहीं थे, और मुझे कोई कल्पना नहीं थी कि यह इच्छा कैसे पूरी होगी। इसलिए मैंने एक स्थानीय कलीसिया के अगुवों में से एक के पास अपनी यह इच्छा व्यक्त की। मैं इसी कलीसिया में इस समय जाता था। वे एक मिशनरी दम्पत्ति के सम्पर्क में थे जो हाल ही में अल्बेनिया गए थे। और इस सम्पर्क के द्वारा, मैं दिसम्बर 1992 में अल्बेनिया पहुंच गया, और मैंने कुछ दूरदराज के क्षेत्रों में सुसमाचार प्रचार किया। दिलचस्प बात यह है कि अल्बेनिया ऐसा देश था जो करीब पचास वर्षों तक बाहरी संसार के सम्पर्क से मुख्य रूप से बंद था, और 1990 में इस देश के द्वार खुलने लगे थे। उस समय उस देश में जाकर उन कई लोगों को सुसमाचार सुनाना एक सम्मान की बात थी जिन्होंने कभी यीशु के नाम को सुना नहीं था, और उसके वचन को सिखाया नहीं था।

अगले तीन प्रकार की अंदरूनी गवाहियां जिनकी हम चर्चा करते हैं—अंतर्मन में जानना, अंतर्मन में प्रेरणा, अंतर्मन में हलचल—अत्यंत समान हैं। वे उनकी तीव्रता और अत्यावश्यकता में भिन्नता रखते हैं।

## 4. अंतर्मन में जानना

**प्रेरितों के काम 7:23-25**
**23 जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं।**
**24 और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर उसे बचाया, और मिसरी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया।**
**25 उसने सोचा कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उनका उद्धार करेगा, परंतु उन्होंने न समझा।**

जब मूसा चालीस वर्ष का था तब उसके मन में कोई विचार उभरकर आया जिसने उसे एक समझ प्रदान की कि परमेश्वर उसके द्वारा इब्रानियों

को मुक्ति देगा। शायद वह नहीं जानता था कि ऐसा किस प्रकार होगा। परंतु वह केवल इतना जानता था कि यह परमेश्वर की ओर से उसके लिए कार्य था। यह उसके अंतर्मन में एक ज्ञान था।

उसी तरह, अंदरूनी गवाही के द्वारा पवित्र आत्मा आपके अंदर एक ज्ञान उत्पन्न कर उभारता है। आप जानते हैं कि क्या करना है क्योंकि यह ज्ञान पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा आपकी आत्मा में आया है।

## *1983: मेरे जीवन का नियत कार्य जानना*

पंद्रह वर्ष का होने से पहले ही, मेरे हृदय में एक ज्ञान ने पकड़ ले ली। मैं जानता था कि मुझे बैंगलोर शहर में कलीसिया स्थापन करना है, और मैं भारत में यीशु मसीह के सुसमाचार को फैलते हुए देखना चाहता था। कोई भविष्यद्वाणियां नहीं थी, दर्शन नहीं थे, स्वर्गदूतों ने भेंट नहीं दी, कुछ भी अनोखा नहीं हुआ। यह बात मेरे अंदर मात्र एक ज्ञान के रूप में आई और उसने "मुझे भर दिया।" यह मात्र एक इच्छा से अधिक था। यह ऐसा कुछ था जो मानो मुझे "भस्म" कर रहा था। उसने मेरी कल्पना को भर दिया। इस विषय में मैं स्वप्न देखा करता था। मैं अपने आपको देखता था कि मैं पूरे देश में यीशु का प्रचार करता हुआ घूम रहा हूं, कलीसियाओं का निर्माण कर रहा हूं और राष्ट्र पर प्रभाव डाल रहा हूं। इस समय, यह मेरे अंदर और मज़बूत होता गया। यह मेरे जीवन का नियत कार्य था, और यह मुझे पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा प्राप्त हुआ, उसने यह ज्ञान मुझ में उत्पन्न किया।

## *अगस्त 1999: वापस भारत लौटने का समय*

1990 में मुझे मेरी इंजीनियरिंग की मास्टर्स डिग्री पूरी करने के लिए यू.एस.ए. छोड़ना पड़ा। मैं जानता था कि मेरे जीवन के नियत कार्य को पूरा करने हेतु मैं भारत वापस आऊंगा। कैसे और कब, यह मुझे अब तक निर्धारित करना बाकी था। यू.एस.ए. में मेरे समय के दौरान बैंगलोर में एक मज़बूत कलीसिया खड़ी करने, सुसमाचार के साथ भारत राष्ट्र पर प्रभाव डालने का दर्शन मेरे हृदय में मज़बूती के साथ जल उठा। मैं परमेश्वर के

मार्गदर्शन के लिए और उस समय के लिए जब मुझे यह दर्शन पूरा करने हेतु कदम बढ़ाना था, प्रार्थना करता रहा। आने वाले वर्षों के दौरान मैंने कुछ समय भारत में यात्रा की और विभिन्न स्थानों में सुसमाचार की सभाओं और पासबानों की सभाओं में सेवा की। मई 1995 में, ऐमी और मेरा विवाह हुआ, और हालांकि हम यू.एस.ए. में रहते थे, हम जानते थे कि हम सही समय में भारत जाएंगे। अगस्त 1999 में, भारत की इन यात्राओं के दौरान हम आगरा में कुछ सभाएं ले रहे थे, और मैंने मेरे अंदर एक ज्ञान को उभरते हुए महसूस किया कि वापस आने का समय हो गया है। यह फिर से पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा मेरे अंतर्मन में उठने वाले ज्ञान के रूप में आया। इस मुख्य निर्णय के लिए दर्शनों, स्वप्नों, भविष्यद्वाणियों, स्वर्गदूतों आदि के द्वारा कोई विशेष मार्गदर्शन नहीं था। मैंने यह बात ऐमी को बताई, और हम इस बात में सहमत थे। हमने वापस भारत जाने हेतु तैयारी करने के लिए अपने आपको एक साल का समय देने का निर्णय लिया। हम प्रार्थना करने लगे और तैयारी करने लगे और दिसम्बर 2000 में हम भारत आ गए। मैं इन दस वर्षों को 1990 से 2000 को उस कार्य के लिए तैयारी के वर्ष मानता हूं जो हमारे सामने था।

## 5. अंतर्मन में प्रेरणा

पवित्र आत्मा की प्रेरणा जो अंदरूनी गवाही के द्वारा आती है वह इस बात के समान है कि कोई आपको धीरे से धक्का देता है या कुछ करने हेतु मज़बूत प्रोत्साहन देता है। आप कुछ करने हेतु प्रोत्साहन—मज़बूत प्रेरणा या आपकी आत्मा में टहोका महसूस करते हैं। यह प्रेरणा जानने से अधिक मज़बूत होती है, और वह सामान्य तौर पर आपको तुरंत कार्य करने हेतु उत्साहित करती है। यदि हम अपनी आत्मा में संवेदनशीलता बनाए रखेंगे, तो हम पहचानेंगे कि कई बार पवित्र आत्मा हमें कार्य करने हेतु प्रेरित करता है। कभी-कभी यह प्रेरणा किसी को फोन करने की होती है। वह हमें प्रेरित कर सकता है कि हम किसी को जाकर भेंट दें या कुछ करें। इन टहोकों की ओर तुरंत ध्यान देने और कार्य करने की आवश्यकता होती है।

## *नवम्बर 2002: दक्षिण बैंगलोर (जयानगरग) में ए.पी.सी. आरम्भ करना*

दिंसबर 2000 में, भारत को लौटने के बाद, हमने जनवरी में एक सॉफ्ट वेयर कम्पनी शुरू की और फरवरी 2001 में कलीसिया आरम्भ की। सॉफ्ट वेयर कम्पनी का दफ्तर आर. टी. नगर, बैंगलोर में था। उस समय डेविड नाम का एक जवान व्यक्ति था, जिसे कम्पनी ने काम पर रखा था, परंतु वह ऑल पीपल्स चर्च (ए.पी.सी.) के प्रशासनीक कार्य में भी सहायता किया करता था। यह सितम्बर 2002 का कोई समय रहा होगा, दफ्तर में एक विशिष्ट दिन, दिन के पहले आधे हिस्से में अचानक मैंने एक प्रेरणा महसूस की कि दक्षिण बैंगलोर में नई कलीसिया आरम्भ करने का समय आ गया है। इस क्षण में कुछ भी आत्मिक नहीं था। मैं कम्पनी में अपना नियमित कार्य कर रहा था, परंतु यह प्रेरणा प्रबल और स्पष्ट थी। मैंने अपना डेस्क छोड़ा, सीधे डेविड के पास गया और उसे बताया कि वह जया नगर क्षेत्र में दक्षिण बैंगलोर में एक जगह ढूंढ़ें, जहां हम कलीसिया के लिए नया स्थान आरम्भ करेंगे (हम इसे ए.पी.सी.—दक्षिण कहते हैं)। उन दिनों में हम टेलिफोन की पुस्तकों का उपयोग किया करते थे। इसलिए डेविड ने टेलिफोन की पुस्तक में पीले पृष्ठ खोले, और जिस पहले रियल इस्टेट वाले व्यक्ति को उसने फोन किया, उसके पास व्यापार की जगह उपलब्ध थी, जिसमें सत्तर से सौ लोग बैठ सकते थे। यह जया नगर में अच्छा स्थान था। मकान मालिक हमें कलीसियाई आराधना के लिए वह जगह भाड़े पर देने के लिए तैयार था। यह सबकुछ बहुत आसानी से और बहुत शीघता से हुआ। हम गए और हमने वह स्थान देखा और वह बिल्कुल ठीक था। उस जगह में अंदर कुछ काम करना बाकी था। हमने लीज़ के करारनामे पर हस्ताक्षर किए और एक सप्ताह बाद, हमने नवम्बर 2002 में ए.पी.सी.—दक्षिण का आरम्भ किया।

## 6. अंतर्मन में हलचल

परमेश्वर के आत्मा की अंदरूनी गवाही का दूसरा तरीका हमारी आत्माओं में उत्तेजना या उत्साह के माध्यम से हमें बताया जाता है। अंतर्मन में होने

वाली उत्तेजना प्रेरणा से दृढ़ होती है। यह कार्य करने हेतु एक मज़बूत बुलाहट होती है।

हम पवित्र शास्त्र में कई उदाहरणों को देखते हैं जहां लोगों के हृदय उत्तेजित और उत्साहित हो गए और वे कार्य करने हेतु प्रेरित हो गए।

**निर्गमन 35:21,26**
**[21] और जितनों को उत्साह हुआ, और जितनों के मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हुई थी, वे मिलापवाले तम्बू के काम करने और उसकी सारी सेवकाई और पवित्र वस्त्रों के बनाने के लिये यहोवा की भेंट ले आने लगे।**
**[26] और जितनी स्त्रियों के मन में ऐसी बुद्धि का प्रकाश था उन्होंने बकरी के बाल भी काते।**

**निर्गमन 36:2**
**तब मूसा ने बसलेल और ओहोलीआब और सब बुद्धिमानों को जिनके हृदय में यहोवा ने बुद्धि का प्रकाश दिया था, अर्थात् जिस जिसको पास आकर काम करने का उत्साह हुआ था उन सभों को बुलवाया।**

निर्गमन में हम देखते हैं कि लोगों के हृदय उत्साहित हुए और जो कुछ भी उनके पास था उसमें से मिलाप वाले तम्बू के लिए उदारता के साथ देने के लिए वे इच्छुक हो गए। मिलाप के तम्बू के निर्माण के लिए कार्य करने हेतु भी उनके हृदय उत्साहित हो गए। अवश्य ही परमेश्वर आज भी ऐसा कर सकता है। वह उसके राज्य के लिए देने हेतु और कार्य करने हेतु लोगों के हृदयों को उभार सकता है, उत्साहित कर सकता है।

**2 इतिहास 36:22**
**फारस के राजा कूस्त्रू के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा कि जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था, वह पूरा हो। इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया, और इस आशय की चिट्ठियां लिखवाईं:**

**एज्रा 1:1**
**फारस के राजा कुस्त्रु के पहले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्त्रू का मन उभारा कि यहोवा का जो वचन यिर्मयाह के मुंह से निकला था वह पूरा हो जाए, इसलिये उसने अपने समस्त राज्य में यह प्रचार करवाया और लिखवा भी दिया,**

इतिहास और एज्रा में हम देखते हैं कि फारस के राजा को, जो परमेश्वर को व्यक्तिगत तौर पर नहीं जानता था, उभारा गया कि वह यहूदियों की ओर अनुकूल हो कि उन्हें उनके देश को वापस भेजे और उन्हें उनके नगर और मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति दे। परमेश्वर आज भी ऐसा कर सकता है। वह अगुवों के हृदयों को और अधिकार पर विराजमान लोगों को उत्साहित करता है कि वे उसके उद्देश्यों को पूरा करें।

**नहेम्याह 1:1-4**
**1 हकल्याह के पुत्र नहेमायाह के वचन। बीसवें वर्ष के किसलेव नाम महीने में, जब मैं शूशन नाम राजगढ़ में रहता था,**
**2 तब हनानी नाम मेरा एक भाई और यहूदा से आए हुए कई एक पुरुष आए; तब मैने उनसे उन बचे हुए यहूदियों के विषय जो बंधुआई से छुट गए थे, और यरूशलेम के विषय में पूछा।**
**3 उन्होंने मुझसे कहा, जो बचे हुए लोग बंधुआई से छुटकर उस प्रांत में रहते हैं, वे बड़ी दुर्दशा में पड़े हैं, और उनकी निंदा होती है; क्योंकि यरूशलेम की शहरपनाह टूटी हुई, और उसके फाटक जले हुए हैं।**
**4 ये बाते सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; और स्वर्ग के परमेश्वर के सम्मुख उपवास करता और यह कहकर प्रार्थना करता रहा..**

**नहेम्याह 2:12**
**तब मैं थोड़े पुरुषों को लेकर रात को उठा; मैंने किसी को नहीं बताया कि मेरे परमेश्वर ने यरूशलेम के हित के लिए मेरे मन में क्या उपजाया था। और अपनी सवारी के पशु को छोड़ कोई पशु मेरे संग न था।**

यरूशलेम नगर की दीवारों के विषय में समाचार सुनने के बाद नहेम्याह इतना दुखी हो गया कि बैठ गया, कई दिनों तक रोते रहा, विलाप करते रहा, और उपवास और प्रार्थना करता रहा। बाद में वह समझ गया कि जो प्रेरणा उसने महसूस की थी वह वास्तव में ऐसा कुछ था जो परमेश्वर ने उसके हृदय में डाला था (नहेम्याह 2:12)। अक्सर हमारे हृदय में हलचल का अर्थ परमेश्वर उस कार्य के लिए हमें प्रोत्साहित करता है जिसे वह चाहता है कि हम पूरा करें।

**हाग्गै 1:14**
**और यहोवा ने शालतीएल के पुत्र जरुब्बाबेल को जो यहूदा का अधिपति था, और यहोसादाक के पुत्र यहोशू महायाजक को, और सब बचे हुए लोगों के मन को उभार कर उत्साह से भर दिया कि वे आकर अपने परमेश्वर यहोवा, सेनाओं के यहोवा के भवन को बनाने में लग जाएं।**

यरूशलेम में मंदिर के निर्माण का कार्य लगभग 16 वर्षों तक रोक दिया गया था। हाग्गै ने लिखा है कि परमेश्वर ने अधिपति, महायाजक और सभी लोगों के मन को उभारा कि वे मंदिर के पुनर्निर्माण के कार्य की ओर लौट आएं। परमेश्वर ने हाग्गै और जकर्याह भविष्यद्वक्ता का उपयोग भविष्यद्वाणी करने और लोगों को उनके कार्य में दृढ़ करने के लिए किया (एज्रा 5:1,2)। इस प्रकार हम यहां पर देखते हैं कि कई लोग उत्साहित हुए ताकि इकट्ठा होकर उस कार्य को पूरा कर सकें जिसे परमेश्वर पूरा करना चाहता था। परमेश्वर आज भी यही करता है, वह लोगों के हृदयों को उत्साहित करता है कि वे एक साथ हो लें और उसके उद्देश्यों को पूरा करें।

**प्रेरितों के काम 17:16**
**जब पौलुस अथेने में उनकी बाट जोह रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल गया।**

कभी-कभी ऐसा समय होगा जब परमेश्वर उन बातों का उपयोग करेगा जिन्हें हम देखते और अनुभव करते हैं ताकि हमारे अंदर उत्साह को उत्पन्न करे और हमें कार्य करने हेतु प्रेरित करे। ऐसा पौलुस के साथ एथेंस में हुआ जब उसने नगर में मूर्तिपूजा को देखा और लोगों को सुसमाचार प्रचार करने लगा।

सामान्य तौर पर, हमारी आत्माओं में उभारा जाना ऐसा कुछ है जिसे हम खो नहीं सकते, परंतु, हमें सावधान रहना है कि हम परिस्थिति के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया को वह उत्साह या उत्तेजना न जान बैठें जो पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही से आती है।

## *अगस्त 1982: आर.टी.एम.सी, बैंगलोर में प्रचार*

ऑक्टोबर 1981, तेरह वर्ष का होने से कुछ ही समय पहले, प्रभु यीशु मसीह ने जब मेरे जीवन को अत्यंत सरल परंतु निश्चित रूप से छू लिया। प्रभु यीशु मसीह के लिए नए आवेश ने मेरे हृदय को थाम लिया। जिन लोगों से मैं मिलता था उन्हें भी यीशु मसीह का सुसमाचार बांटने के विषय में मैं उत्साहित था। उन दिनों, परिवार के रूप में हम बैंगलोर में रिचमंड टाऊन मेथडिस्ट चर्च (आर.टी.एम.सी.) जाया करते थे। हम आर.टी.एम.सी. में रविवार की आराधना में भाग लेते थे। यीशु का अनुभव करने के बाद एक साल के अंदर, यदि मुझे सही याद है, तो वह अगस्त 1982 की बात होगी, एक रविवार की संध्या, जब मैं आराधना में बैठा था, तब मेरे अंदर कुछ उभरने लगा। मैंने अपने अंदर जाकर प्रार्थना करने की गहरी उत्तेजना को महसूस किया। उत्तेजना और खोए हुओं के लिए बोझ ने मेरे हृदय को पकड़ लिया। इसलिए मैं उठकर पवित्र स्थान से बाहर बगल वाले हॉल में गया। (इसे स्टीफन्स हॉल कहा जाता था। अब यह इमारत गिरा दी गई है।) मैं प्रार्थना करने लगा और मैंने कलीसिया की आराधना में उन सब लोगों के लिए बड़ा बोझ महसूस किया जो यीशु को अपने उद्धारकर्ता के रूप में नहीं जानते थे। प्रार्थना के इस समय के दौरान मुझे महसूस हुआ कि मेरे अंदर मैंने एक आवाज़ सुनी जो मुझसे कह रही थी, पास्टर से बिनती करो कि क्या वे तुम्हें सुबह और शाम की आराधना में प्रचार करने के लिए 15 मिनिट्स दे सकते हैं। मैं जानता हूं कि यह अत्यंत अज़ीब लगता है परंतु यह अनुभव ऐसा था जिसका मैं इन्कार नहीं कर सकता था। मैंने इसे अपने हृदय में रखा। कलीसियाई आराधना के अंत में, मैंने फिर से उत्तेजना को और बोझ को उठते हुए महसूस किया, और उसके बाद मैं अपने माता-पिता से मिलने के लिए लौटा। मैंने इस बात को एक सप्ताह तक अपने हृदय में रखा, और बाद वाले शनिवार, मैंने पास्टर, रवि जोज़फ से भेंट की, और यह बिनती उनके सामने रखी। उन्होंने कहा कि वे एक या दो हफ्ते में मुझसे बात करेंगे। मैं नहीं जानता कि पास्टर रवि जोज़फ ने इस बात को कैसे समझा। परंतु निश्चित ही, एक सप्ताह बाद वे मुझसे मिले और उन्होंने मुझे बताया कि वे मुझे आने वाले रविवार, सुबह और शाम दोनों समय रविवार

की आराधना में 15 मिनिट्स बोलने की अनुमति देंगे। मैं मात्र 13 वर्ष का था, कलीसिया की आराधना में प्रचार करने का कोई अनुभव मुझे नहीं था। यह मेरा पहला समय था, मैंने मत्ती 7 से वचन लिया, और मेरे हृदय से प्रचार किया। सुबह की सभा में कुछ भी होता प्रतीत नहीं हुआ, परंतु उस रविवार शाम मेरे प्रचार करने के बाद, बाल्डविन्स बॉईज़ स्कूल के करीब तीस जवान लोग (विद्यार्थी) यीशु मसीह को जीवन देने के लिए वहां रूक गए। यह मेरी अपेक्षा से अधिक था। इन विद्यार्थियों के साथ जिन्होंने हाल ही में अपना जीवन मसीह को दिया था, फॉलो-अप करने हेतु, मैंने स्कूल के दिनों में उनके स्कूल जाकर दोपहर के भोजन के समय में रोज़ 20 मिनिट उनसे मिलने का निर्णय लिया। दोपहर के भोजन के समय में करीब 20 मिनिटों के लिए इन विद्यार्थियों को प्रचार करने के लिए मैं स्कूल से, बिशप कॉटन बॉईज़ स्कूल से बाल्डविन्स बॉईज़ स्कूल दौड़कर जाया करता था (कभी-कभी साइकल का इस्तेमाल करता था) और फिर वापस दौड़कर, दोपहर की कक्षा से पहले मेरी स्कूल आ जाया करता था। इसके द्वारा पड़ोस की स्कूल, कैथेड्रल हाई स्कूल के विद्यार्थियों के बीच सेवा करने का अवसर प्राप्त हो गया। अतः सप्ताह में चार दिन मैं बाल्डविन्स जाया करता और सप्ताह में एक दिन बुधवार को मैं कैथेड्रल्स जाता था। ऐसा चार वर्षों तक, मेरी नौवीं कक्षा से बारहवीं कक्षा तक (1982-1986) चलता रहा। अंदर की उत्तेजना के अनुसार कार्य करने से सेवकाई का द्वार खुल गया जिसने मुझे चार वर्षों तक व्यस्त रखा, और साथ ही साथ कई विद्यार्थियों के जीवनों को छू लिया। कभी-कभी मुझे कोई मिल जाता है जिसका जीवन उन चार वर्षों के दौरान छू लिया गया था।

## 7. अंतर्मन में पूर्व-ज्ञान

परमेश्वर तो परमेश्वर है जो अपने लोगों के साथ बातें करता है और समय से पहले हमारे लाभ के लिए बातों को प्रगट करता है। वह आरम्भ ही से अंत जानता है। वह उन बातों को जानता है जो अब तक पूरी नहीं हुई हैं। वह हमसे ऐसी बातें करता है, हमें उन बातों का पूर्व-ज्ञान देता है जो हमारे जीवनों से सम्बंधित होती हैं, ताकि हम उन बातों के लिए तैयार हो सकें जिनके लिए हम तैयारी कर सकते हैं।

**यशायाह 42:9**
**देखो, पहली बातें तो हो चुकी हैं, अब मैं नई बातें बताता हूं; उनके होने से पहले मैं तुम को सुनाता हूं।**

**यशायाह 46:10**
**मैं तो अन्त की बात आदि से और प्राचीनकाल से उस बात को बताता आया हूं जो अब तक नहीं हुई। मैं कहता हूं, मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करूंगा।**

प्रभु यीशु ने हमें यूहन्ना 16:13 में सिखाया कि पवित्र आत्मा हमें आने वाली बातें दिखाएगा। यह पूर्व-ज्ञान विभिन्न मार्गों से (भविष्यद्वाणियां, स्वप्न, आदि) पवित्र आत्मा की ओर से आ सकता है, परंतु एक महत्वपूर्ण मार्ग है अंदरूनी गवाही के द्वारा। अंदरूनी गवाही के द्वारा पवित्र आत्मा पूर्व-ज्ञान देता है, आने वाली बातों के विषय में पहले से जानना। आपकी आत्मा में परमेश्वर के उद्देश्यों का खुल जाना होता है। आप पहले से बातों को जानते हैं ताकि आप अपने आप को तैयार कर सकें। यह उसी के समान है जो हम ने पहले "अंतर्मन में जानना" में देखा है, परंतु यहां पर ज़ोर बातों को बहुत पहले जानने पर है, ताकि आप अपने आप को तैयार कर सकें। अंदरूनी गवाही के द्वारा पवित्र आत्मा निश्चित बातों का पूर्व-ज्ञान आपको आपके अंदर देता है।

**लूका 2:25-32**
**25 और देखो, यरूषलेम में शमौन नामक एक मनुष्य था, और वह मनुष्य धर्मी और भक्त था; और इस्राएल की शान्ति की बाट जोह रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था।**
**26 और पवित्र आत्मा से उसको चेतावनी हुई थी कि जब तक वह प्रभु के मसीह को देख न लेगा, तब तक मृत्यु को न देखेगा।**
**27 और वह आत्मा के सिखाने से मन्दिर में आया; और जब माता-पिता उस बालक यीषु को भीतर लाए, कि उसके लिए व्यवस्था की रीति के अनुसार करें,**
**28 तो उसने उसे अपनी गोद में लिया, और परमेश्वर का धन्यवाद करके कहा,**
**29 हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा करता है।**
**30 "क्योंकि मेरी आंखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है,**
**31 "जिसे तू ने सब देषों के लोगों के सामने तैयार किया है;**
**32 कि वह अन्यजातियों को प्रकाश देने के लिए ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो।"**

हम लूका 2 में शमौन के विषय में पढ़ते हैं। शमौन को एक दिलचस्प अनुभव था। पवित्र शास्त्र बताता है कि पवित्र आत्मा द्वारा शमौन को यह प्रगट किया गया था कि जब तक वह मसीह को नहीं देखेगा तब तक मरने का नहीं। शमौन ने यह प्रकाशन कैसे पाया यह हम नहीं जानते। परंतु शमौन अपने विषय में यह जानता था। इसका सम्बंध उसके भविष्य से था। परमेश्वर ने उसके लिए क्या योजना रखी है उस विषय में उसे यह पूर्व-ज्ञान था। हम दूसरी दिलचस्प बात भी देखते हैं। किसी निश्चित दिन, एक विशिष्ट समय में पवित्र आत्मा की अगुवाई में वह मंदिर में आया, इस समझ के साथ कि वह इसी दिन मसीह को देखेगा। और उस दिन, मंदिर में आए सभी लोगों में, शमौन ने यीशु को, मसीह के रूप में, प्रभु के उद्धार के रूप में पहचाना! इस प्रकार हम पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए पूर्व-ज्ञान के दो स्तरों को देखते हैं। एक वह था जिसकी लम्बी अवधि का सम्बंध शमौन के जीवन से था। दूसरा उस दिन और समय के लिए था कि आज शमौन मसीह को देखेगा। पवित्र आत्मा हमारे दिनों में इसी तरह काम करता है और हमारे लिए समय से पहले बातों को प्रगट करता है।

## *मई 1993: अगले 10 वर्षों के लिए योजना*

एक दिन मई 1933 में, मैं बैठ गया, और पवित्र आत्मा की सुनने की कोशिश करने लगा और अगले 10 वर्षों के लिए मेरी आत्मा में प्रभु जिस बात की गवाही दे रहा है ऐसा मैंने महसूस किया उसे मैंने कागज़ पर लिख लिया। मैंने कई बातें लिखीं जिसमें विवाह करना, वापस भारत देश आना, तकनिकी कम्पनी शुरू करना, बैंगलोर में स्थानीय कलीसिया स्थापित करना, परमेश्वर के वचन का प्रचार करने हेतु यात्रा करना आदि बातें शामिल थीं। मैंने महसूस किया कि ये बातें पवित्र आत्मा मेरी आत्मा में प्रगट कर रहा था और मैंने उन्हें लिख लिया। और निश्चित रूप से, मुझे यह अत्यंत प्रोत्साहनदायक लगा और आने वाली यात्रा के लिए, कभी-कभी दशकों के लिए या और वर्षों से पहले, परमेश्वर को मेरे हृदय में कुछ बातों को डालते हुए मैं समय-समय पर महसूस करता हूं, उन्हें मैं लिख लेता हूं। व्यक्तिगत तौर पर यह उस पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा पूर्व-ज्ञान प्राप्त करना है जो यहां पर आने वाली बातें दिखाने के लिए है।

## 8. अंतर्मन में चेतावनी

जैसे कि हमने "अंतर्मन में चेतावनी" के विषय में चर्चा की जहां पवित्र आत्मा जिन निर्णयों और परिस्थितियों का हम विचार करते हैं उनके विषय में अंदरूनी गवाही के द्वारा शान्ति और आनंद भेजता  है, वैसे ही अंदरूनी गवाही के द्वारा "अतर्मन में चेतावनी" भी हो सकती है। यह ऐसे विचारों के रूप में आ सकती है जो तनाव, मन में एक बैचेनी की भावना, शान्ति, आनंद का अभाव, कुछ सही नहीं है ऐसा बोध, कुछ गलत हो रहा है ऐसा बोध, आदि देता है। हमें इन बातों पर ध्यान देना है और सावधान रहना है यह प्रतिबंधात्मक उपायों पर अमल करना है।

## पौलुस, यरूशलेम में विपत्ति इंतज़ार करती है

उस उदाहरण पर विचार करें जो प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के अगुवों को यरूशलेम की उसकी आगामी यात्रा के विषय में बताया।

**प्रेरितों के काम 20:22,23**
22 **"और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूषलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा?**
23 **"केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेष तेरे लिए तैयार हैं।**

प्रेरित पौलुस ने बताया कि पवित्र आत्मा उसे गवाही दे रहा था कि उसे कैद (बन्धन) और मुश्किलों (क्लेश) का सामना करना होगा। ग्रीक भाषा में 'गवाही' देने का अर्थ है प्रमाणित करना या आग्रह के साथ विरोध करना, आज्ञा देना, पुष्टि करना। विचारपूर्वक ध्यान दें कि पवित्र आत्मा पौलुस को जो गवाही दे रहा था, उससे पौलुस को "आत्मा में बंधा हुआ," उसकी आत्मा में रोका हुआ महसूस हुआ। पवित्र आत्मा की गवाही देने के द्वारा पौलुस की आत्मा में एक बैचेनी की भावना या हलचल उत्पन्न हुई। यह एक चेतावनी थी जो अंदरूनी गवाही के द्वारा पवित्र आत्मा की ओर से पौलुस को दी गई थी। हालांकि पवित्र आत्मा ने उसे आने वाले खतरे के विषय में बताया था, फिर भी प्रेरित पौलुस ने यरूशलेम को जाने का और जिस बात का उसे सामना करना था उसका सामना करने का निर्णय लिया।

उसी तरह, जब हम लोगों के साथ व्यवहार करते हैं, प्रतिदिन के छोटे या बड़े निर्णय लेते हैं, तो हमारे अंदर हमारी आत्मा में पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा चेतावनियां प्राप्त हो सकती हैं। शायद आप किसी समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले हों और आप अपनी आत्मा में अस्वस्थ महसूस करते हैं। तो रुक जाईये। इंतज़ार कीजिए। परमेश्वर आपको जिस विषय में चेतावनी दे रहा है उसे निर्धारित करने हेतु समय लें। शायद आपको हस्ताक्षर नहीं करना चाहिए या शायद उस समझौते में ऐसी बातें हैं जिन्हें हस्ताक्षर करने से पहले पुनरावलोकन करने की ज़रूरत है।

## अपनी आत्मा को प्रशिक्षित करें कि वह पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील हो

इस अध्याय में हमने एक बात को समझाने का प्रयास किया जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमारी अगुवाई करता है, जो है उसकी अंदरूनी गवाही के द्वारा। यहां पर हमारे लिए कुंजी है हमारी आत्मा (हृदय) में पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील होना।

यहां आपकी आत्मा की संवेदनशीलता का विकास करने के तरीके बताए हैं। इन बातों को हम पहले से जानते हैं, परंतु हमें उनके साथ सुसंगति के साथ बने रहना है।

- ✓ प्रतिदिन आराधना, वचन, और प्रार्थना में परमेश्वर के साथ समय।
- ✓ दिन के व्यवहार में परमेश्वर के साथ निरंतर संगति बनाए रखना।
- ✓ अन्य अन्य भाषाओं में बहुत प्रार्थना करना।
- ✓ शान्ति। शांत और निश्चिंत भाव बनाए रखना सीखें। विश्राम करना सीखें।
- ✓ आगे बढ़ना—आराधना, प्रार्थना, उपवास और परमेश्वर के वचन में अतिरिक्त समय।
- ✓ अन्य लोगों के साथ समय बिताना जो परमेश्वर के प्रति संवेदनशील हैं।

## अंदर की गवाही को जांचना और उसकी पुष्टि करना

जैसा कि हमने इस पाठ में आरम्भ में उल्लेख किया है, पवित्र शास्त्र के लिखित वचन, जिनका सही उलथा किया जाना चाहिए (सही व्याख्या की जानी चाहिए और सही रूप से लागू किया जाना चाहिए), उसके अलावा अंदरूनी गवाही की अन्य अभिव्याक्तियों को उन पर अमल करने से पहले जांचने और पुष्टि करने की ज़रूरत है।

हमें अंदरूनी गवाही को जांचने की ज़रूरत है, इसका कारण यह है कि हम अपनी ही भावनाओं, विचारों, और कल्पनाओं में उलझ जाते हैं। ऐसा समय भी हो सकता है जब दुष्टात्माओं की ओर से कल्पनाएं और सुझाव हमारे मन में आते हैं। मत्ती 16 में पतरस के साथ क्या हुआ इसे स्मरण करें। एक क्षण उसने पिता की ओर से प्रकाशन के द्वारा बातें की (मत्ती 16:16,17), और उसके तुरंत बाद, यीशु ने शैतान को घुड़का जो "पतरस के द्वारा बोल रहा था" (मत्ती 16:22,23)।

यहां पर सरल कसौटियां दी गई हैं यह जांचने के लिए कि आप अंदरूनी गवाही के द्वारा क्या प्राप्त कर रहे हैं:

1. यह सुनिश्चित करें कि वह लिखित वचन के अनुसार है

   पवित्र आत्मा आपको कभी ऐसी अंदरूनी गवाही नहीं देगा जो उसके वचन का विरोध करती हो। आत्मा और वचन परस्पर सहमत होते हैं (1 यूहन्ना 5:7)।

2. सुनिश्चित करें कि आपकी स्वाभाविक भावनाएं और लगाव आत्मा के अधीन रखे गए हैं। यदि आपकी व्यक्तिगत भावनाएं या स्नेह शामिल है, तो दुगना सावधान रहें। उदाहरणः उस बात में जहां जवान स्त्री और जवान पुरुष भावनात्मक तौर पर सहभागी हैं, विवाह करने की आशा रखते हैं, तो उनकी अपनी भावनाओं से पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही की अलग पहचान करना मुश्किल होगा। अतः हम दृढ़तापूर्वक प्रोत्साहन देते हैं कि ऐसी परिस्थितियों में आप अत्यंत विकल्पपूर्ण रहने का प्रयास करें।

3. सुनिश्चित करें कि उस अगुवाई से यीशु मसीह को महिमा मिले, न ही अपने आप को या आपके जीवन की अन्य बातों को।

4. देखें कि आपके जीवन के लिए परमेश्वर की कुल योजना और उद्देश्य से वह समन्वित है?

5. क्या अंदरूनी गवाही का अन्य तरह से समर्थन हुआ है?

6. उसमें शामिल खतरे या जोखिम पर विचार करें।

   जितना बड़ा खतरा होगा उतनी आपको कदम बढ़ाने से पहले परखने और प्रमाणित करने की ज़रूरत होगी। उदाहरण के तौर पर, यदि प्रेरणा मित्र को फोन करके बुलाने और उनके साथ प्रार्थना करने की होगी, तो इसमें ज्यादा जोखिम या खतरा नहीं है। यदि आप गलती भी करते, तौभी मित्र खुश होंगे कि आपने उन्हें फोन किया है। परंतु, यदि महत्वपूर्ण करारनामे पर हस्ताक्षर करने की बात होगी, तो आपको सावधान रहना चाहिए और उस विषय में जिन अन्य रीतियों से परमेश्वर बातें करता है उनसे सारी आवश्यक बातों को जांचना चाहिए और प्रमाणित करना चाहिए।

7. बातों को परखें

   यदि आपको लगता है कि परमेश्वर का आत्मा एक निश्चित तरीके से आपकी अगुवाई कर रहा है, तो आप जो कुछ सुन रहे हैं उसे परखने और प्रमाणित करने के लिए जब कभी सम्भव हो छोटे कदम बढ़ाएं। यदि उन बातों को परखते समय, आपके अंदर जो गवाही है वह जारी रहती है, और उसका दृढ़ होना महसूस होता है, तो आप आगे बढ़ें। उदाहरण के तौर पर, मान लीजिए कि आपको आपकी आत्मा में प्रेरणा महसूस होती है कि आपको एक विशिष्ट प्रकार का कारोबार आरम्भ करना है, आपको कुछ विशिष्ट लोगों को उसमें सहभागी करना चाहिए, मान लीजिए कि आपके इस कारोबार में आपके साथ शामिल होने के लिए तीन विशिष्ट लोग। इसलिए आप कुछ समय तक इस बात के लिए प्रार्थना करते हैं, और अंदरूनी गवाही अब भी है। आप अब भी प्रेरणा को महसूस करते हैं। "बातों

को परखने" में आपका अगला कदम होगा इन तीन लोगों के साथ बातें करना। सो आप अपनी तैयारी करते हैं। आप पहले व्यक्ति से मिलकर अपने विचार बताते हैं। वह व्यक्ति कुछ समय लेता है और फिर वापस आकर यह कहता है कि वे आपके साथ सहभागी होने के लिए तैयार हैं। आपने अब तक सबकुछ परख लिया है और सब कुछ अच्छा दिख रहा है। आपकी आत्मा में अंदरूनी गवाही मज़बूत और स्पष्ट है। अब तक इस बात के विषय में आपके मन में शान्ति है। आपले अगले कदमों के साथ आगे बढ़ सकते हैं। यदि उनमें से कोई या तीनों आकर यह कहते कि वे आपके साथ सहभागी होने के लिए तैयार नहीं हैं, तो आपको वापस परमेश्वर के पास जाने की ज़रूरत होती और उससे यह पूछना होता कि आपको आपकी आत्मा में क्या महूसस हुआ। क्या आपको आगे बढ़ना चाहिए या रुक जाना चाहिए या कुछ समय के लिए रुककर बाद में शुरू करना चाहिए? आपको क्या परिवर्तन करने की ज़रूरत है।

## मनन

हमने आठ तरीके बताए जिसमें पवित्र आत्मा की आंतरिक गवाही हमारे पास आती है। इनका पुनरावलोकन करें, और देखें कि क्या आपने इनमें से एक या अधिक का अनुभव किया है। एक या दो अनुभव बताएं या लिखें जहां आपने पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही पहचानी है।

1. वचन द्वारा ज़िलाया या संजीव किया जाना

2. अंतर्मन में आश्वासन

3. अंतर्मन में इच्छा

4. अंतर्मन में जानना

5. अंतर्मन में प्रेरणा

6. अंतर्मन में हलचल

7. अंतर्मन में पूर्व-ज्ञान

8. अंतर्मन में चेतावनी

# 5

# पवित्र आत्मा की आवाज़

बाइबल का परमेश्वर ऐसा परमेश्वर है जो अपने लोगों से बातें करता है। पवित्र आत्मा आज भी हमसे बातें करता है। सम्पूर्ण बाइबल में हम उन स्त्री और पुरुषों के विषय में सुनते हैं जिन्होंने परमेश्वर की आवाज़ सुनी। ऐसे कई उदाहरण हैं जहां पर हम पढ़ते हैं कि पवित्र आत्मा ने व्यक्ति से या लोगों के समूह से बातें की।

कुछ उदाहरणों पर विचार करें जो हमारे लिए बाइबल में लिखे हुए हैं:

**यहेजकेल 3:24**
**तब आत्मा ने मुझ में समाकर मुझे पांवों के बल खड़ा कर दिया; फिर वह मुझ से कहने लगा, जा अपने घर के भीतर द्वार बन्द करके बैठा रह।**

**यहेजकेल 11:5**
**तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और मुझसे कहा, ऐसा कह, यहोवा यों कहता है, कि हे इस्राएल के घराने तुम ने ऐसा ही कहा है; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूं।**

**प्रेरितों के काम 8:29**
**तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।"**

**प्रेरितों के काम 10:19**
**पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था कि आत्मा ने उससे कहा, देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं।**

**प्रेरितों के काम 13:2**
**जब वे उपवास के साथ प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया।"**

हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा ने इन सारे वचनों में विशिष्ट बातें कही। परंतु यह नहीं बताया गया है कि आत्मा ने किस प्रकार बातें की।

पवित्र आत्मा की आवाज़, या आत्मा का बोलना, पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही से अधिक मज़बूत होता है। अंदरूनी गवाही एक आम तरीका है जिसमें हम पवित्र आत्मा की अगुवाई प्राप्त करते हैं। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में बताया, अंदरूनी गवाही हमारे पास कायलियत, ज्ञान, आश्वासन, विचार, भावनाओं और संवेदनाओं के माध्यम से आती है जो पवित्र आत्मा हमारी आत्मा में देता है। आत्मा की आवाज़ वे शब्द होते हैं, जो हमारी आत्मा में डाले जाते हैं और वे अधिक मज़बूत, स्पष्ट, और कुछ मामलों में ऊंची आवाज़ में प्राप्त होते हैं। आत्मा की आवाज़ अक्सर (परंतु हमेशा नहीं) शिक्षात्मक और निर्देशात्मक होती है।

दोनों मामलों में, अर्थात् पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के द्वारा और पवित्र आत्मा की आवाज़ के द्वारा पवित्र आत्मा हमसे बोलता है और हमें संदेश देता है। पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही हमारी आत्मा में **विचारों** के रूप में आती है। पवित्र आत्मा की आवाज़ हमारी आत्मा में डाले गए **शब्दों** के रूप में आती है।

अक्सर पवित्र आत्मा की आवाज़ के साथ अन्य अभिव्यक्तियां भी होगी, जैसे दर्शन, स्वप्न, या भविष्यद्वाणी या आत्मा के अन्य वरदान। हमें यह ध्यान में रखना है कि, यद्यपि इस अध्याय में हम केवल आत्मा की आवाज़ के विषय में चर्चा कर रहे हैं।

हमें समझने में सहायता करने हेतु, पवित्र आत्मा की आवाज़ को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है:

1. अंदरूनी आवाज़
2. श्रवणीय आवाज़
3. भविष्यद्वाणी में पवित्र आत्मा की आवाज़

## 1. पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़

पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ होती है परमेश्वर का हमारी आत्मा से स्पष्ट रूप से बोलना। हम कोई आवाज़ नहीं सुनते, परंतु हम एक स्पष्ट संदेश पाते हैं। यह ध्वनि के माध्यम के बिना हमारी आत्मा में आने वाले शब्दों (सूचना, ज्ञान) के समान होता है। अंदरूनी आवाज़ अक्सर प्रभु की ओर से निर्देश या अभिदिशा की एक पंक्ति या वाक्यों के रूप में आती है।

हम यह पूर्ण निश्चितता के साथ नहीं कह सकते, परंतु यह सम्भव है, कि ऊपरोक्त वचनों में यहेजकेल के साथ (यहेजकेल 3:24; यहेजकेल 11:5), फिलिप्पुस के साथ (प्रेरितों के काम 8:29) और पतरस के साथ (प्रेरितों के काम 10:19), पवित्र आत्मा ने अंदरूनी आवाज़ के द्वारा बात की। (हम इस विषय में बहस नहीं करेंगे)। यह भी हो सकता है कि जब भविष्यद्वक्ताओं ने कहा, "प्रभु का वचन मेरे पास आया," तो कुछ उदाहरणों में यह पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ के द्वारा प्राप्त हुआ होगा।

पिछले अध्याय में, मैंने अंतर्मन में हलचल इस शीर्षक के अंतर्गत एक उदाहरण बताया जहां पर मज़बूत हलचल के साथ एक अंदरूनी आवाज़ थी जो मुझे कुछ करने हेतु स्पष्ट रूप से निर्देश दे रही थी। यह एक साधारण निर्देश था परंतु, उसके द्वारा अगले चार वर्षों के लिए सेवकाई का द्वार खुल गया। "मैंने अगस्त 1982: आर.टी.एम.एस., बैंगलोर में प्रचार करना" इस शीर्षक के अंतर्गत इस विषय में बताया है।

मैं यहां पर स्वतंत्रतापूर्वक आत्मा की अंदरूनी आवाज़ के और कुछ उदाहरणों को बताता हूं। पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलना प्रोत्साहनदायक है, चाहे वह हमसे अंदरूनी गवाही के द्वारा बातें करें या अंदरूनी आवाज़ के द्वारा।

### *जनवरी 1989: मनिपाल में विश्वासियों की संगति सभाएं आरम्भ करना*

जुलाई 1986 में, मैं मनिपाल इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी (एम.आय.टी.) में इंजीनियरिंग का स्नातक पूर्व अध्ययन आरम्भ करने हेतु भारत के मनिपाल

को गया। मैं जानता था कि मैं वहां पर एक उद्देश्य से हूं जो कि मेरी शिक्षा से और मेरी स्नातक पदवी प्राप्त करने से बढ़कर है। इसलिए मैं प्रार्थना करता रहा, और परमेश्वर से बिनती करता रहा कि वह क्या चाहता है कि मैं उस स्थान में करूं और उसके राज्य के लिए मैं अपने साथी विद्यार्थियों को कैसे प्रभावित कर सकता हूं। पहले वर्ष में (1986-1987) मुझे कुछ विश्वासियों से मिलकर और उन्हें पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के विषय में बताकर आनंद मिला। उनमें से कुछ पवित्र आत्मा से भर गए और अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे। कॉलेज के दूसरे वर्ष में (1987-1988) मैंने कुछ सभाएं आयोजित की, एक होटल वैली व्ह्यू में और दूसरी एम.आय.टी. के सभागार में, जिससे मैं विद्यार्थियों को सुसमाचार सुना पाऊं। वह जनवरी 1989 का समय था, जब मेरे तीसरे वर्ष में (1988-1989), मैं बैंगलोर में मेरे घर में था और कुछ ही दिनों में वापस मनिपाल जाने की तैयारी में था। मैं आत्मा में आग्रह के साथ प्रार्थना कर रहा था, अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर रहा था और परमेश्वर से पूछ रहा था कि वह क्या चाहता है कि मैं मनिपाल में करूं। मेरे सामने मात्र तीन और सेमिस्टर बचे हुए थे और वहां से जाने से पहले मैं सचमुच अंतर लाना चाहता था। प्रार्थना के इस समय के दौरान, मैंने एक आत्मिक दर्शन (दृश्यमान) के साथ पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ प्राप्त की कि मुझे क्या करना है। निर्देश स्पष्ट था। मुझे होटल (होटल वैली व्ह्यू) जाना था, हर शनिवार उनका सेमिनार हॉल किराए पर लेना था और “विश्वासियों की संगति सभाओं” का आयोजन करना था। इन सभाओं में स्तुति और आराधना का समय होगा, उसके बाद परमेश्वर के वचन की मज़बूत शिक्षा होगी, और प्रार्थना और सेवकाई के साथ उसका समापन होगा। मुझे विद्यार्थियों को आने का निमंत्रण देना था। मेरे पास जो कुछ संसाधन थे (मसीही पुस्तकें, कैसेट टेप्स) उन्हें उपलब्ध कराने थे ताकि आत्मिक रीति से बढ़ने हेतु वे उनका उपयोग कर सकें। मैं हॉल के पीछे भेंट का बक्सा रखा करता था और लोग अपनी इच्छा के अनुसार खर्च के लिए योगदान दिया करते थे। यह विश्वास का कदम था। इसलिए मनिपाल वापस जाने के बाद, मैंने होटल में प्रबंध किए, और 26 जनवरी 1989 के गुरुवार को विश्वासियों की पहली संगति सभा ली। क्योंकि वह सार्वजनिक अवकाश का दिन था। मैंने इस सभा में घोषणा की कि शनिवार

जनवरी 28, 1989 से हम होटल में हर शनिवार नियमित रूप से सभाएं लेंगे। यही मनिपाल विश्वासियों की संगति का, एक सामर्थी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण वचन पर आधारित विद्यार्थियों की संगति का आरम्भ था। मैंने पदवी प्राप्त की और अप्रैल 1990 तक मनिपाल छोड़ दिया। बाद के अगुवों ने, डेविस जॉनराज और अन्य विद्यार्थियों ने संगति जारी रखी, समय के साथ बढ़कर इसकी संख्या सप्ताह के अंत में दो सौ अधिक विद्यार्थियों की हो गई। आने वाले वर्षों में कई सैकड़ों विद्यार्थियों के जीवनों ने सेवा प्राप्त की। इसका आरम्भ पवित्र आत्मा की अगुवाई से हुआ जो अंदरूनी आवाज़ के माध्यम से प्राप्त हुई थी।

## *नवम्बर 22, 1993: ॲमी को पत्र*

मई 1993 में, मैंने अपनी आत्मा में मेरे जीवनसाथी के लिए प्रार्थना करने के विषय में गहराई से महसूस किया। वस्तुतः, मई 4, 1993 को मैंने अपनी नोट्बुक में (जो आज भी मेरे पास है), उन गुणों को लिख लिया जो मैं मेरी भविष्य की पत्नी में देखना चाहता था। मैंने पन्ना पलटकर उन बातों को लिखा कि मैं अपनी पत्नी के लिए क्या करूंगा। मैंने इस बात के लिए प्रार्थना की। उस ॠतु के दौरान, मैं यू.एस. के न्यू जर्सी में रहता था, और मैं कुछ अगुवों को पत्र लिखता था जो मनिपाल में विद्यार्थियों की संगति की अगुवाई कर रहे थे (मनिपाल विश्वासियों की संगति, एम.बी.एफ.)। मेरे लक्ष्य उस कार्य के लिए जो वे कर रहे थे उन्हें प्रोत्साहित करना और उत्साहित करना था। अन्य अगुवों के साथ ही, मैंने एमी स्यू को चार पत्र लिखे थे, जो मेडिकल कॉलेज की छात्र थी। नोव्हेंबर 22, 1993 को मैं कॉलेज से अपने छोटे कमरे में आया था जहां पर मैं रहता था। मैंने वह दोपहर अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने में बिताई। उस समय के दौरान, मैंने आत्मा की अंदरूनी आवाज़ सुनी, “एमी को लिखो और उससे पूछो कि क्या वह तुम्हारे साथ विवाह करने की सम्भावना पर विचार करने के लिए तैयार है।” मैं स्वाभाविक तौर पर जानता था कि यह पूर्णतया हास्यपूर्ण है। तब तक मैं और एमी कभी एक-दूसरे से नहीं मिले थे। एक-दूसरे के विषय में कुछ थोड़ी बातें जानने के अलावा हमारे पास दूसरा कुछ नहीं था। अन्य कई बातें भी मेरे मन में थीं। मुझे पूरा अहसास था कि यदि मैं गलत हुआ,

तो मैं एम.बी.एफ. के अगुवों और संगति के साथ मुश्किल में पड़ जाऊंगा। इसके अतिरिक्त, एमी मलेशियन चीनी थी। मैं भारतीय था। हमारे परिवारों की प्रतिक्रिया क्या होगी? और फिर भी, आत्मा की उस अंदरूनी आवाज़ के साथ, पत्र लिखने का साहस भी था। मैंने एक सरल प्रार्थना की, "कृपया एमी को यह पत्र स्वीकार करने के लिए तैयार कीजिए।" उसके बाद मैंने यह न कहते हुए, "प्रभु इस प्रकार कहता है," और बिना किसी दबाव, विवशता या जबरदस्ती के पत्र लिखा। मैं चाहता था कि एमी अपना निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हो। उसी दिन, नोव्हेंबर 22, 1993 को, मनिपाल में जब एमी अपनी एक मित्र के साथ चाय नाश्ता ले रही थी, तब उसकी मित्र ने एमी से कहाः "एमी, इस काल्पनिक परिस्थिति पर विचार करो। यदि आशीष तुमसे विवाह करने के लिए कहता है, तो तुम क्या कहोगी?" परमेश्वर ने पहले ही एमी को तैयार किया था और उसे विचार करने हेतु पेरित किया था। दस दिनों के बाद, एमी को मेरा पत्र मिला। वहां से हमने धीरे-धीरे परंतु सावधानी के साथ आगे बढ़ना शुरू किया। एमी ने यह कहते हुए वापस पत्र लिखा कि इससे पहले कि वह "हां" कहे, प्रभु से प्रार्थना करना महत्वपूर्ण है और जब तक हम एक-दूसरे को जाने, वह अर्थात परमेश्वर उससे भी बात करे। हम दोनों के लिए, यह महत्वपूर्ण था कि हमें हमारे माता-पिता का समर्थन और सम्मति हो। सही समय पर, जब हमने यह बात अपने माता-पिता को बताई, तब उन्होंने समर्थन दिया। एमी और मैं पहली बार अगस्त 1994 में एक-दूसरे से मिले, और बाद में मई 1995 में हमने विवाह कर लिया। हमारे पास अब भी वे पत्र हैं जो हमने लिखे थे। प्रभु ने हमें उसके आत्मा की अंदरूनी आवाज़ के द्वारा अगुवाई की, और हम उसके अनुग्रह और बुद्धि से आगे बढ़े। (मैं कुछ सावधानी के साथ इस विशिष्ट घटना के विषय में बता रहा हूं। कृपया जब तक कि आप यह नहीं जानते कि सचमुच परमेश्वर बोल रहा है, इस बात की "नकल" न करें।)

## *फरवरी 2001: ए.पी.सी. बैंगलोर का आरम्भ करना*

परिवार के रूप में हम दिंसबर 2000 में शिकागो से बैंगलोर आए। हम बैंगलोर शहर में कलीसिया रोपन करने के उद्देश्य से आए जहां से हम बैंगलोर से हम पूरे देश में सेवा करते हैं। हम करीब एक वर्ष तक बैंगलोर

जाने की तैयारी कर रहे थे। आरम्भ में एक बड़ी सभा लेने की हमारी योजनाएं थी, हमें आशा थी कि हम सैंकड़ों लोगों को उद्धार पाते हुए देखेंगे और उसके बाद हम इन नए विश्वासियों के साथ कलीसिया आरम्भ करेंगे। उस समय उस पैमाने पर कुछ करने के लिए हमारे पास लोग या साधन नहीं थे। फिर भी, हम आगे बढ़ने के लिए वचनबद्ध थे। जनवरी 2001 के महीने में, मैं हॉल और स्थानों को ढूंढ़ने निकला और किसी के भी विषय में अंतिम निर्णय ले पाना मुझे मुश्किल लग रहा था। मैं थोड़ा निराश महसूस कर रहा था। इसलिए एक दिन, जब मैं इस विषय में परमेश्वर से बात कर रहा था, तब मैंने पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ को मात्र यह कहते हुए सुनाः "जो कुछ तुम्हारे पास है उससे शुरूवात करो।" यह एक अत्यंत साधारण बयान प्रतीत हो सकता है, परंतु यह वह मार्गदर्शन था जिसकी मुझे नितांत आवश्यकता थी। मेरे पास क्या है इस विषय में मैं सोचने लगा। उस समय, हम लोग आर. टी. नगर, बैंगलोर में मेरे पिता के घर में उनके साथ रहते थे। इसलिए मैंने अपने पिता से पूछा, कि क्या हमारे घर के बैठक के कमरे में कलीसिया आरम्भ करना उचित होगा। उन्होंने तुरंत सहमति जताई। इसलिए हमने फरवरी 18, 2001 के रविवार मेरे पिता के घर के बैठक के कमरे में हमारी पहली आराधना शुरू की और ए.पी.सी. का आरम्भ किया। तब से यह अत्यंत अद्‌भुत यात्रा रही है और जो कुछ आगे धरा है उसके हम इंतज़ार में हैं। उसकी अंदरूनी आवाज़ के द्वारा एक सरल सूचना ने इस परिस्थिति में हमें मार्गदर्शन करने में सहायता प्रदान की।

## *सिंतबर 2012: ए.पी.सी. बैंगलोर पूर्व (व्हाईट फील्ड) का आरम्भ*

जून/जुलाई 2012 में हमारा एक जवान मोटर-साइकल से दुर्घटना ग्रस्त हो गया और उसे मनिपाल हॉस्पिटल, बैंगलोर में दाखिल किया गया। मैं उसे अस्पताल में मिलने गया था। कुछ जवान लोग अस्पताल में थे। उस दोपहर के समय, वहीं अस्पताल में, मैंने पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ को यह कहते सुनाः "ए.पी.सी. के इन जवानों के साथ तुम क्या कर रहे हो। उनके साथ व्हाईट फील्ड में ए.पी.सी. पूर्व शुरू करो और उन्हें सेवकाई के लिए तैयार करो।" इस प्रकार के निर्देश के लिए यह अत्यंत सामान्य क्षण था। अस्पताल में, किसी बीमार व्यक्ति से भेंट करते समय बाहर

निकलकर नई कलीसिया का रोपन करने का निर्देश प्राप्त करना। खैर इस जवान के साथ जो घायल हुआ था कुछ समय व्यतीत करने के बाद, इन अन्य जवानों से मैंने बात करके कहा कि हम क्या करने वाले हैं। मैंने इस प्रकार नहीं कहा, "परमेश्वर ने मुझसे बातें की कि आप सभों को यह करना है..." आदि। मेरा विश्वास था कि यदि परमेश्वर ने मुझसे बातें की है, और यदि वह चाहता है कि वे उसका भाग बनें, तो परमेश्वर उनके भी हृदयों में यह बात डालेगा और हम एक साथ आगे बढ़ पाएंगे। इसलिए मैंने कुछ इस प्रकार कहा, "सुनो लड़कों, हम व्हाईट फील्ड में ए.पी.सी. पूर्व का आरम्भ करने वाले हैं, और आप सभी उस कलीसिया को शुरू करने वाली टीम बनोगे।" यह एक अद्भुत क्षण था। बिना किसी हिचकिचाहट के सभी ने "हां" कहा। वे इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार थे। इसलिए हमने अपने आपको संगठित किया, एक हॉल देखा, और ए.पी.सी. बैंगलोर पूर्व (व्हाईट फील्ड) का सिंतबर 2012 में आरम्भ किया। इन जवान लोगों में से कइयों ने उन्नति पाई है, वे संसार के दूसरे भागों में चले गए हैं, और जहां परमेश्वर ने उन्हें रोपा है वहां वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं। ए.पी. सी. ईस्ट एक उन्नतिप्रद स्थानीय कलीसिया के रूप में आगे बढ़ रही है।

मैंने स्थानीय कलीसियाई सेवकाई के सम्बंध में कुछ ही उदाहरण बताए हैं, परंतु पवित्र आत्मा हमसे जीवन के सभी क्षेत्रों के विषय में बातें करेगा। जब मैं तकनीकी कारोबार चला रहा था, तब पवित्र आत्मा ने उसकी अंदरूनी आवाज़ के द्वारा मेरा मार्गदर्शन किया कि मैं कम्पनी के लिए कौन से बाज़ारों पर अपना ध्यान लगाऊं, मुश्किल परिस्थितियों को कैसे बदल दूं, आदि। जब हम परमेश्वर के पास जाते हैं और उससे मार्गदर्शन पाना चाहते हैं, तब वह जीवन के सभी मामलों में अंदरूनी आवाज़ के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करेगा।

## पवित्र आत्मा की श्रवणीय आवाज़

हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं कि पवित्र आत्मा की श्रवणीय आवाज़ है। आत्मा की यह आवाज़ उस व्यक्ति को सुनाई देती है जिससे वह बात करता है। वे उसकी आवाज़ को ऐसे सुनते हैं मानो वह स्वाभाविक आवाज़ थी। परंतु

उसके आसपास के लोग उस आवाज़ को नहीं सुनते। हम बाइबल में से कई उदाहरण देखते हैं। बालक शमुएल ने प्रभु की आवाज़ सुनी और सोचा की एली उसे बुला रहा है। तीनों बार शमुएल ने श्रवणीय आवाज सुनी, परंतु एली ने नहीं सुनी (1 शमूएल 3)। भविष्यद्वक्ताओं के अनुभवों में से कइयों का सम्बंध परमेश्वर की श्रवणीय आवाज़ से होता था। यहेजकेल ने कहा, *"...मैंने एक शब्द सुना जैसा कोई बातें करता है"* (यहेजकेल 1:28)। *"...जो मुझ से बातें करता था मैंने उसकी सुनी"* (यहेजकेल 2:2)।

परमेश्वर इस प्रकार हमसे बातें कर सकता है, भले ही वह हमें अंदरूनी गवाहियां, अंदरूनी आवाज़ के समान प्रतीत नहीं होती। परमेश्वर जैसा चाहता है वैसा कर सकता है और इसलिए वह जितनी बार चाहे उतनी बार पवित्र आत्मा की श्रवणीय आवाज़ से बोल सकता है और बोलेगा। हमें पवित्र आत्मा की श्रवणीय आवाज़ सुनने के लिए अपने आपको तैयार रखना है।

## भविष्यद्वाणी में परमेश्वर की आवाज़

यह एक महत्वपूर्ण तरीका है जिससे पवित्र आत्मा बोलता है और इसे अधिक विस्तार से सम्बोधित करने की ज़रूरत है। इसलिए हम दूसरे अध्याय में इस विषय में अलग चर्चा करेंगे।

## पवित्र आत्मा की अगुवाई की सामुहिक गवाही

हमारे पास ऐसे उदाहरण भी हैं जहां पवित्र आत्मा ने लोगों के समूह से बातें की। उसकी आवाज़ भविष्यद्वाणी की आवाज़ से आई हो या अंदरूनी आवाज़ या अंदरूनी गवाही से भी—महत्वपूर्ण बात यह है कि अनेक लोगों ने यह प्रमाणित किया है कि उन्होंने पवित्र आत्मा को एक ही बात कहते हुए सुना। इससे पवित्र आत्मा जो बोल रहा था उसकी सामुहिक गवाही प्राप्त हुई और इसलिए वे हियाव के साथ प्रभु का अनुसरण कर सके।

यह अगुवों की टीमों में और अन्य परिस्थितियों में महत्वपूर्ण होगा जहां पर लोग टीमों के रूप में कार्य करते हैं कि जो पवित्र आत्मा कह रहा है उसकी सामुहिक गवाही हो। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति से बातें कर

सकता है और यह व्यक्ति टीम के अन्य लोगों के सामने यह देखने के लिए उसे प्रस्तुत करता है कि क्या पवित्र आत्मा उनके साथ भी गवाही देता है। या, पवित्र आत्मा एक ही समय में टीम के कई सदस्यों के साथ बात कर सकता है और प्रत्येक के साथ एक ही बात करता है। वे सभी इस बात को प्रमाणित करते हैं कि वे पवित्र आत्मा की ओर से क्या सुन रहे हैं और टीम सहमति के साथ आगे बढ़ सकती है। मेरा विश्वास है कि सेवकाई टीमों, अगुवों की टीमों और स्थानीय कलीसियाओं को जो आपस में एक मन और एक चित्त हैं, पाने की यह कुंजी है। जब सभी पवित्र आत्मा से मेल रखते हैं और एक-दूसरे के प्रति अधीनता में चलते हैं, तो हमारे पास ऐसे लोग हो सकते हैं जो सचमुच आत्मा की एकता में, एक चित्त होकर चलते हैं।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक से निम्नलिखित उदाहरणों पर विचार करें:

## *अन्ताकिया के अगुवों के मध्य सामुहिक गवाही*

**प्रेरितों के काम 13:1-3**

**1 अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेषक थे, अर्थात् बरनबास और शमौन जो नीगर कहलाता है, और लूकियुस कुरेनी, और देष की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल।**

**2 जब वे उपवास के साथ प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया।"**

**3 तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।**

पांच अगुवे थे जो एक साथ प्रार्थना, उपवास, और प्रभु की सेवा में थे और पवित्र आत्मा ने बातें की। उसने क्या करना चाहिए इस विषय में स्पष्ट निर्देश दिए, और उन्होंने उस पर कार्य किया, बिना किसी संदेह के।

## *यरूशलेम की पहली परिषद में सामूहिक गवाही*

**प्रेरितों के काम 15:28**

**पवित्र आत्मा को और हमको ठीक जान पड़ा, कि इन आवष्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें;**

प्रेरितों के काम 15 में यरूशलेम की पहली सभा के विषय में लिखा गया है जहां यरूशलेम के प्रेरित और प्राचीन, पौलुस और बरनबास के साथ यह चर्चा करने के लिए इकट्ठा हुए कि क्या अन्यजाति विश्वासियों को यहूदी प्रथा और परम्पराओं का पालन करना होगा। यद्यपि हम भविष्यद्वाणी का या किसी अन्य अलौकिक अभिव्यक्ति का उल्लेख नहीं पाते, फिर भी चर्चा के अंत में अगुवों ने अपना बयान दिया, कि यह पवित्र आत्मा को और हम को ठीक जान पड़ा। वे परस्पर सहमत थे और उन्हें यह विश्वास भी था कि पवित्र आत्मा कलीसिया से यही कह रहा है। जो निर्णय लिए जा रहे थे उसकी एक सामुहिक गवाही थी।

## *पौलुस की मिशन टीम में सामुहिक गवाही*

**प्रेरितों के काम 16:6-10**

**6 और वे फ्रूगिया और गलतिया देशों में से होकर गए, और पवित्र आत्मा ने उन्हें एषिया में वचन सुनाने से मना किया।**

**7 और उन्होंने मूसिया के निकट पहुंचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परंतु यीषु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।**

**8 इसलिए मूसिया से होकर वे त्रोआस में आए।**

**9 और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर।**

**10 उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरंत मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।**

हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा किस प्रकार प्रेरित पौलुस और उसकी टीम की अगुवाई कर रहा था। हम नहीं जानते कि उन्होंने कैसे यह निश्चित किया कि पवित्र आत्मा उन्हें एक स्थान में जाने की अनुमति नहीं दे रहा है, बल्कि उन्हें दूसरी दिशा में मार्गदर्शन कर रहा है। परंतु उस दल के पास परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई की सामुहिक गवाही थी। बाद में जब पौलुस ने दर्शन देखा जो उन्हें मकिदुनिया की ओर जाने हेतु मार्गदर्शन कर रहा था, तो पूरा दल, सहमति के साथ, एक साथ आगे बढ़ा। यह फिर एक बार दिखाता है कि वे सभी पवित्र आत्मा की अगुवाई के गवाह थे और एक साथ आगे बढ़े।

## सारी बातों को परखना

पवित्र आत्मा की आवाज़ को सुनना प्रोत्साहनदायक है, परंतु इस क्षेत्र में हमें और अधिक सावधान रहने की ज़रूरत है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं धोखा देने वाली और नकल करने वाली हैं। वे इस प्रकार बोलने का दिखावा करते हैं मानो परमेश्वर बोल रहा है और इस प्रकार विश्वासियों को गुमराह करते हैं। इसलिए जो कुछ हम सुन रहे हैं उसे हमें परखना है और परखना है कि वह परमेश्वर की ओर से है या दुष्टात्माओं की ओर से है (1 यूहन्ना 4:1-4)। पिछले अध्याय में अंदरूनी आवाज़ को परखने के लिए हमने जिन कसौटियों को रेखांकित किया, वे यहां पर भी उत्तम साबित होती हैं ताकि हम पवित्र आत्मा की आवाज़ को परख सकें। परमेश्वर का आत्मा बोलता है और हमें उसकी सुनना है। परंतु इस बात के विषय में सचेत रहें कि एक शत्रु है, जो परमेश्वर के लोगों को गुमराह करने के लिए परमेश्वर के आत्मा की नकल करने का प्रयास करता है।

# मनन

1. आत्मा की अंदरूनी गवाही और आत्मा की आवाज़ के मध्य मुख्य अंतर के रूप में आपने क्या समझा इसे स्पष्ट करें।

2. आत्मा की अंदरूनी आवाज़ और पवित्र आत्मा की श्रवणीय आवाज़ के मध्य अंतर स्पष्ट करें।

3. कलीसिया के जीवन में, उसी तरह दिन प्रतिदिन की परिस्थितियों में कुछ व्यावहारिक परिदृश्यों के विषय में सोचें जहां पवित्र आत्मा की अगुवाई के प्रति सामुहिक गवाही अभ्यास के लिए अंत्यत उपयुक्त हो सकती है।

# 6

# पवित्र आत्मा के वरदान

जबकि पवित्र आत्मा के वरदान वह जरिया है जिसमें पवित्र आत्मा हमारे द्वारा कार्य करते हुए दूसरों की सेवा करता है, परंतु परमेश्वर हमारे साथ व्यक्तिगत तौर पर बातें करने हेतु और हमें परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों की ओर अग्रसर करने हेतु  वरदानों का उपयोग कर सकता है।

हम इन में से कुछ आत्मा के वरदानों पर संक्षिप्त विचार रखते हैं और यह बताते हैं कि वे किस प्रकार हमारा मार्गदर्शन कर सकते हैं। कृपया ध्यान में रखें कि यह सम्पूर्ण वर्णन नहीं है। परमेश्वर असीम है और नए तथा रचनात्मक तौर पर काम करता है, आत्मा के वरदानों के द्वारा भी। (आत्मा के वरदानों के कार्य के अधिक विस्तृत स्पष्टीकरण के लिए, कृपया ए पी सी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पवित्र आत्मा के वरदान नामक पुस्तक देखें)।

## अन्य अन्य भाषाओं और उनका अर्थ बताने का व्यक्तिगत उपयोग

**1 कुरिन्थियों 14:2**
**क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परंतु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।**

जब हम अन्य अन्य भाषाओं में बातें करते हैं, तब हम भेद की बातें बोलते हैं, ऐसी बातें जिनके विषय में हमारा अपना मन कुछ नहीं जानता। हमें पवित्र आत्मा द्वारा दी गई जानकारी से हम प्रार्थना करते हैं। वह सारी बातें जानता है। अन्य अन्य भाषाओं में जो भेद या रहस्यमय बातें हम बोलते/प्रार्थना करते हैं, वे हमारे लिए भेद हैं, परंतु परमेश्वर के लिए भेद नहीं। अतः परमेश्वर के इन भेदों के विषय में हम परमेश्वर से अपने लाभ के लिए प्रार्थना नहीं कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर से कुछ भी छिपा नहीं

है। अन्य अन्य भाषाओं में जो भेद हम बोलते/प्रार्थना करते हैं, वे हमारे लाभ के लिए हैं।

अन्य अन्य भाषाओं में जो बोला जाता है उसका जब हम अनुवाद करते हैं, तब हमें उन भेदों की समझ प्राप्त होती है जो बोले गए हैं या प्रार्थना किए गए हैं। सार्वजनिक मण्डली के परिवेश में, अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ इस प्रकार बताया जाना चाहिए जिसे सुना जा सके ताकि उससे उपस्थित प्रत्येक को लाभ प्राप्त हो। परंतु व्यक्तिगत उपयोग में, अर्थ बताने से केवल अन्य अन्य भाषा बोलने वाले को लाभ होगा। इसलिए आवश्यक नहीं कि हमेशा ही ऐसा ऊंची आवाज़ में किया जाए। अर्थ बताना तब हो सकता है जब आप अन्य अन्य भाषाओं में बोल रहे हों। आप जो प्रार्थना करते हैं उसकी समझ आप पाते हैं। जिन भेदों को आप प्रार्थना में बोलते हैं उन्हें अब आप समझने लगते हैं।

अक्सर जब मैं किसी विशिष्ट बात के लिए प्रार्थना करता हूं, ऐसे निर्णयों के लिए जिन्हें लेने की ज़रूरत है या समस्याओं के लिए जिन्हें सुलझाना अवश्य है, तब मैं अपनी आत्मा को शांत बनाए रखता हूं और परमेश्वर से सुनने के लिए ध्यान लगाता हूं और साथ ही साथ अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करता हूं। परमेश्वर की ओर से सुनने के लिए या परमेश्वर का मन जानने के लिए हमें कितना समय या कितने लम्बे समय तक प्रार्थना करना चाहिए इसकी कोई निश्चित अवधि नहीं है। आपको तब तक प्रार्थना करना है जब तक कि आप यह नहीं जानते कि आपने उस विषय में परमेश्वर की ओर से सुन लिया है। कुछ परिस्थितियों में आप लम्बे समय तक प्रार्थना कर सकते हैं, इसलिए आप आत्मा में प्रार्थना करना जारी रखें इस समय में परमेश्वर की ओर से अंतर्दृष्टि प्राप्त करें, प्रत्येक कदम के लिए परमेश्वर के मन को जानें। जिन समस्याओं का हम सामना कर रहे हैं उनके समाधान, जो निर्णय लेने की ज़रूरत है, वे उस क्षण भेद या रहस्य हो सकते हैं। परंतु, जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं तब पवित्र आत्मा हमें इन भेदों के लिए प्रार्थना करने की सामर्थ देता है। वास्तव में हम उन परिस्थितियों के लिए परमेश्वर के उत्तरों के रूप में प्रार्थना करते हैं। इसलिए हमारा आत्मा उन भेदों को समझने लगता है। उसके बाद हमें जो करना है

उस विषय में हमें अंतर्दृष्टि, आवश्यक समाधान प्राप्त होते हैं, जिन निर्णयों को हमें लेना है उन्हें हम ले पाते हैं। इसलिए अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना और आप जो प्रार्थना कर रहे हैं उसकी समझ प्राप्त करना दूसरा तरीका हो जाता है जिसके द्वारा आप उन विभिन्न विषयों पर जिनके बारे में आप आत्मा में प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर का मन, परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं।

जब आप अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं तब परमेश्वर उसके मार्गदर्शन को प्रदान करने हेतु अन्य मार्गों का भी उपयोग कर सकता है, उदाहरण के तौर पर, जीवित वचन, अंदरूनी आवाज़, दर्शन, आदि। इसलिए हमें इन बातों की ओर भी ध्यान देना है।

## ज्ञान का वचन

ज्ञान के वचन का वरदान वर्तमान में या भूतकाल से कुछ प्रगट करता है। पवित्र आत्मा हमें ज्ञान के वचन दे सकता है जो निर्णय लेने की प्रक्रिया में हमारी सहायता कर सकते हैं और हमें उस मार्ग पर ले चलता है जहां परमेश्वर चाहता है कि हम जाएं। परमेश्वर ज्ञान के वचनों के उपयोग के माध्यम से हमें अपना मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। कभी-कभी वह "स्मरण" दिलाता है, भूतकाल में ऐसा हुआ, इसलिए, अब यह कदम उठाएं। कभी-कभी ऐसी कोई बात प्रगट होती है जिसे कोई छिपाने की कोशिश करता है, और इसलिए आप जानते हैं कि आपको क्या निर्णय लेना है, भले ही वे उस बात को छिपा रहे हों। कभी-कभी ज्ञान का वचन ऐसी बातों के रूप में आ सकता है जिसे परमेश्वर ने समन्वित किया है और आपको केवल उसमें कदम बढ़ाना है।

यहां पर इस परिस्थिति के विषय में विचार करें:

**मरकूस 11:1-9**
**1 जब वे यरूषलेम के निकट जैतून पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास आए, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा,**
**2 अपने सामने के गांव में जाओ, और उसमें पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई नहीं चढ़ा, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोल लाओ।**

**3 यदि तुमसे कोई कुछ पूछे, यह क्यों करते हो? तो कहना कि प्रभु को इसकी आवश्यकता है; और वह शीघ उसे यहां भेज देगा।**
**4 उन्होंने जाकर उस गदही के बच्चे को बाहर द्वार के पास चौक में बन्धा हुआ पाया, और खोलने लगे।**
**5 और उनमें से जो वहां खड़े थे, कोई कोई कहने लगे कि यह क्या करते हो, गदही के बच्चे को क्यों खोलते हो?**
**6 उन्होंने जैसा यीषु ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया; तब उन्होंने उन्हें जाने दिया।**
**7 और उन्होंने बच्चे को यीषु के पास लाकर उस पर अपने कपड़े डाले और वह उस पर बैठ गया।**
**8 और बहुतों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए और औरों ने खेतों में से डालियां काट काट कर फैला दीं।**
**9 और जो उसके आगे आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे, पुकार पुकार कर कहते जाते थे, होशान्ना! धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है!**

जब यीशु यरूशलेम के निकट जा रहा था, तब उसे ज्ञान का वचन प्राप्त हुआ और उसने अपने दो शिष्यों को विवरणों के साथ भेजा जिसे पिता ने पहले से सुनिश्चित किया था और उसके लिए तैयार रखा था। उन्होंने एक गदहे का बच्चा पाया और उसे यीशु के पास ले आए, कि वह उस पर सवार होकर यरूशलेम नगर में प्रवेश करे। ज्ञान के वचन को प्राप्त करते और उस पर चलते समय, यीशु पिता की इच्छा पूरी कर रहा था और भविष्यद्वाणी को भी पूरा कर रहा था (जकर्याह 9:9)।

## बुद्धि का वचन

बुद्धि के वचन का वरदान परमेश्वर के मन, इच्छा और उद्देश्य का प्रकाशन है और विशेषकर उन निर्णयों के सम्बंध में हमारी सहायता करता है जो हमें लेना है और इस विषय में भी कि भविष्य के लिए हमें क्या कदम उठाना है। परमेश्वर बुद्धि का वचन देकर हमारा मार्गदर्शन कर सकता है। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर यह जानने के लिए बुद्धि का वचन दे सकता है कि किसी समस्या को सुलझाने के लिए किसके पास जाकर मिलना है। कई विकल्पों में से एक का चुनाव करने हेतु वह आपको बुद्धि का वचन दे सकता है। आप भविष्य के समय के विषय में बुद्धि का वचन पा सकते हैं जिसमें परिस्थितियां बदलेगी और आपको आने वाले क्षण के लिए तैयार करेगी। ये

कुछ ही उदाहरण हैं कि किस प्रकार पवित्र आत्मा बुद्धि के वचन के द्वारा हमारे लिए अपने मार्गदर्शन को भेज सकता है।

## आत्माओं की परख का वरदान

आत्माओं की परख का वरदान आत्मिक संसार में और लोगों के हृदयों में देखने में हमारी सहायता करता है। आत्माओं की परख के वरदान के द्वारा, परमेश्वर ऐसे निर्णय लेने हेतु आपका मार्गदर्शन कर सकता है जो आपकी, आपके संस्था रक्षा करने हेतु आपका मार्गदर्शन करेगा। कभी-कभी लोग आपके फैसलों को नहीं समझ पाएंगे, परंतु आप आत्माओं की परख के वरदान के द्वारा ऐसा कुछ देख रहे हैं जो वे नहीं देख रहे हैं, जिनके आधार पर आप निर्णय ले रहे हैं।

### *नेकनीयत शिष्य*

इस घटना पर विचार करें, जब यीशु अपने शिष्यों को अपने क्रूसीकरण और स्वर्गारोहण के लिए तैयार कर रहा था। पतरस नेकनीयत शिष्य के समान बोल पड़ा कि यीशु के साथ ऐसा नहीं होगा। स्वाभाविक दृष्टि से देखा जाए तो अपने स्वामी की परवाह करना और उसके हित के विषय में सोचना अत्यंत उत्तम बात प्रतीत होती है। परंतु, प्रभु यीशु ने सतह से परे देखा, यह देखा कि वास्तव में कौन सी बात पतरस को इस प्रकार का बयान करने हेतु प्रेरित कर रही थी। उसने स्रोत के रूप में शैतान को पहचाना और उसे डांट लगाई। उसने पतरस द्वारा किए गए प्रस्ताव पर चलने से इन्कार किया।

**मत्ती 16:21-23**

**[21] उस समय से यीषु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवष्य है कि मैं यरूषलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुख उठाऊं, और मार डाला जाऊं, और तीसरे दिन जी उठूं।**

**[22] इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा "हे प्रभु, परमेश्वर न करे, आप पर ऐसा कभी न होगा!"**

**[23] उसने फिरकर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है, क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, परंतु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।**

## *उन पैरों को धोना जो आपको ठोकर मारेंगे*

यूहन्ना के अध्याय 13 में, जब यीशु अपने चेलों के पैरों को धोने की तैयारी कर रहा था तब वह इस बात को जानता था कि उनमें से एक उसे पकड़वाएगा। वस्तुतः यीशु जानता था कि कौन उसे पकड़वाएगा। वह अपनी आत्मा में अस्वस्थ, विचलित या बेचैन था। भले ही यह चेला अन्य शिष्यों के समान ही आचरण करता था, फिर भी यीशु जानता था कि यही वह व्यक्ति है जो यीशु के विरोध में "अपनी लाथ उठाएगा"—विश्वासघात से पकड़वाएगा। यीशु को पूरा पूरा एहसास था कि उसके चेले के मन में और आत्मिक क्षेत्र में क्या चल रहा है। वस्तुतः वह उस क्षण को जानता था जब शैतान ने यहूदा के मन में कार्य किया। इन सारी बातों ने यीशु को उन घटनाओं के लिए तैयार किया जो होने वाली थीं और उसे मारे जाने के लिए क्रूस की ओर ले जाने वाली थीं। अतः यह सत्य कि उसके अपनों में से एक उसे धोखा देगा, उसे अचम्भित नहीं कर पाया।

**यूहन्ना 13:11,18,21,27**
**[11] वह तो अपने पकड़वाने वाले को जानता था, इसी लिए उसने कहा, "तुम सब के सब शुद्ध नहीं।"**
**[18] मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता। जिन्हें मैंने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूं: परंतु यह इसलिए है, कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो, कि जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई।**
**[21] ये बातें कहकर यीषु आत्मा में व्याकुल हुआ और उसने यह गवाही दी कि मैं तुमसे सच सच कहता हूं, कि तुममें से एक मुझे पकड़वाएगा।**
**[27] और टुकड़ा लेते ही शैतान उसमें समा गया। तब यीषु ने उससे कहा, "जो तू करता है, तुरंत कर।"**

उसी तरह, पवित्र आत्मा हमें चेतावनी दे सकता है, सावधान कर सकता है और तैयार कर सकता है ताकि हम समय से पहले जान सकें कि सारी बातें कैसे प्रगट होगी और हमें कौन सा कदम उठाना चाहिए।

इस अध्याय में हमने उन बातों को रेखांकित किया है जिसमें पवित्र आत्मा आत्मा के वरदानों का उपयोग कर हमें मार्गदर्शन और अभिदिशा प्रदान कर सकता है। और कई तरीके हैं जिनके माध्यम से परमेश्वर का आत्मा

कार्य कर सकता है और हमें उसके प्रकाशनों और कार्यों की विभिन्नता के लिए तैयार रहना चाहिए।

## मनन

1. जब आप किसी विशिष्ट बात के लिए अन्य अन्य भाषाओं में बातें करके, परमेश्वर से मार्गदर्शन और निर्देशन पाने का प्रयास करते हैं, तब क्या आपने उस विषय में समझ पाने का व्यक्तिगत तौर पर अनुभव किया है जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं, जिससे आपको निर्णय लेने में सहायता प्राप्त हुई? कैसे और क्या हुआ इसका सिंहावलोकन करें।

2. यदि आपने ज्ञान के वचन, बुद्धि के वचन या आत्माओं के वरदानों की परख के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त किया है, तो समीक्षण करें कि कैसे और क्या हुआ। यदि आपने पवित्र आत्मा से बिनती नहीं की है कि इन बातों में वह आपके जीवन के द्वारा कार्य करे, तो उससे बिनती करें कि आप उसके प्रति संवेदनशील रहें।

# 7

# स्वप्न और दर्शन

हम ऐसी घड़ी में हैं जब परमेश्वर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल रहा है। पवित्र आत्मा की इस वर्षा की विशेषता है स्वप्न, दर्शन और भविष्यद्वाणियां। हमें पवित्र आत्मा के ऐसे कार्य के लिए अपने ह्रदय को खोलकर रखना है।

**प्रेरितों के काम 2:17,18**
**17 कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।**
**18 वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।**

## स्वप्नों

स्वप्नों के तीन स्रोत हो सकते हैं। हमारे कुछ स्वप्नों का कारण यह हो सकता है कि हमारा मन उन बातों के विषय में सोचता रहा होगा (सभोपदेशक 5:3)। कुछ स्वप्न ऐसे हो सकते हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमसे बातें कर रहा होगा। हमारे कुछ स्वप्न हमारी नींद में दुष्टात्माओं द्वारा दखल हो। जब हम बुरे स्वप्न देखते हैं जो चाहे हमारे अपने मन के हों या दुष्टात्माओं की ओर से, हम उन्हें इन्कार करें और इन स्वप्नों को हमें प्रभावित करने की अनुमति न दें।

परमेश्वर स्वप्नों के द्वारा हमसे बातें कर सकता है।

**भजनसंहिता 16:7**
**मैं यहोवा को धन्य कहता हूं, क्योंकि उसने मुझे सम्मति दी है; वरन् मेरा मन भी रात में मुझे शिक्षा देता है।**

परमेश्वर रात के समय में हमें अपनी मनसा प्रदान करता है और हमें सिखाता है।

**अय्यूब 33:14-18**
**[14] क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है, परंतु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते।**
**[15] स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय,**
**[16] तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है,**
**[17] जिससे वह मनुष्य को उसके संकल्प से रोके और गर्व को मनुष्य में से दूर करे।**
**[18] वह उसके प्राण को गढ़हे से बचाता है, और उसके जीवन को खड्ग की मार से बचाता है।**

अय्यूब 33 का अनुच्छेद दिलचस्प है। यह इस बात का उल्लेख करता है कि परमेश्वर स्वप्नों के माध्यम से लोगों से बातें करता है। जब लोग सोते हैं, तब वह उनके कानों को खोलता है कि वे उसकी सुनें। अर्थात यह आत्मिक कानों को खोलने का उल्लेख करता है, हमारे स्वाभाविक कानों को नहीं। वह हमें स्वप्नों के माध्यम से अपनी शिक्षा, मार्गदर्शन और निर्देशन देता है, और हमें भूल करने से रोकने का प्रयास करता है।

परमेश्वर की ओर से आने वाले स्वप्न (कभी-कभी उन्हें रात्रि के दर्शन भी कहा जाता है) उद्देश्यों को पूरा करते हैं।

परमेश्वर स्वप्नों के द्वारा बोलता है ताकिः

1. **हमसे भेंट करे** (उत्पत्ति 28:12 में याकूब; 1 राजा 3:5-15 में सुलैमान)
2. **हमें प्रोत्साहन दे** (प्रेरितों के काम 18:9-11 कुरिन्थुस में पौलुस)
3. **हमें निर्देश दे, सिखाए** (अय्यूब 33:14-18; भजनसंहिता 16:7; मत्ती 1:20 में यूसुफ)
4. **हमें निर्देशन और मार्गदर्शन करे** (न्यायियों 7:13-15 में गिदोन; मत्ती 2:19-21 में यूसुफ; उत्पत्ति 46:1-4 में यूसुफ; प्रेरितों के काम 16:9 में पौलुस को मकिदुनिया बुलाया गया)

5. **भविष्य की घटनाओं को प्रगट करे** (उत्पत्ति 37:5-10 में यूसुफ; उत्पत्ति 40:5-19 में रसोइया और प्यालेदार; उत्पत्ति 41:1-10 में फिरौन; दानिय्येल 2, दानिय्येल 4 में नबुकद्नेस्सर; दानिय्येल 7 में दानिय्येल)
6. **हम पर गुप्त बातें प्रगट करे** (उत्पत्ति 31:10-13 में याकूब; दानिय्येल 2:19 में दानिय्येल)
7. **हमें सुधारे और सही मार्ग पर लाए** (उत्पत्ति 20:3-6 अबिमेलेक; अय्यूब 33:14-18)
8. **हमें सचेत और सावधान करे** (उत्पत्ति 31:24 में लाबान; मत्ती 2:12 में मजूसी; मत्ती 2:13 में यूसुफ; मत्ती 2:22,23 में यूसुफ; मत्ती 27:19 में पीलातुस की पत्नी)

**टिप्पणी:** हमने ऊपर कुछ बातों को शामिल किया है, जहां कुछ उदाहरणों में ऐसा लिखा है कि व्यक्ति ने रात में एक दर्शन देखा (रात्रि के दर्शन)। यह एक स्वप्न हो सकता है जिसमें उन्होंने दर्शन को देखा, या रात के समय देखा गया दर्शन।

हमें परमेश्वर की ओर से स्वप्न प्राप्त करने के लिए तैयार रहना है।

सोने से पहले, आप प्रार्थना कर सकते हैं और परमेश्वर से बिनती कर सकते हैं कि वह रात के समय आपके साथ स्वप्नों और दर्शनों के द्वारा बातें करे। जब आप सोते हैं तब अपने मन को और अपने मन के क्रियाकलापों को प्रभु को समर्पित करें।

कुछ स्वप्न शाब्दिक हो सकते हैं और समझने में आसान होते हैं, परंतु अक्सर स्वप्न अलंकारिक होते हैं (प्रतीकों के साथ) और उनका अर्थ जानने की आवश्यकता होती है। प्रार्थना करें और परमेश्वर से बिनती करें कि वह आपको स्वप्न की समझ दे।

अपने स्वप्नों को लिख लें ताकि आप वापस यह अवलोकन कर सकते हैं कि परमेश्वर आपसे क्या बोल रहा है। मैं सन 2007 से व्यक्तिगत तौर

पर अपने स्वप्नों को लिख रहा हूं। पीछे पलटकर देखना और विभिन्न स्वप्नों को देखना अत्यंत अद्‌भुत है, इन स्वप्नों ने कैसे मार्गदर्शन प्रदान करने में, विपत्ति के समय सावधान करने में, आने वाली घटनाओं के विषय में पहले से तैयार करने में सहायता की यह देखना अद्‌भुत है। परमेश्वर आज भी स्वप्नों के माध्यम से बातें करता है!

## दर्शन

स्वप्नों और दर्शनों के बीच का एक सरल मौलिक अंतर यह है कि स्वप्न तब आते हैं जब व्यक्ति नींद में होता है, और दर्शन तब प्राप्त होते हैं जब व्यक्ति जागता है। स्वप्नों और दर्शनों दोनों में हम कुछ “देखते” हैं और दृश्य के माध्यम से, कुछ चित्रों के माध्यम से परमेश्वर की ओर से संदेश प्राप्त करते हैं, ऐसा कुछ जो हम देखते हैं।

अंदरूनी गवाही विचारों के माध्यम से, हम जो महसूस करते हैं, उसके द्वारा आती है।

अंदरूनी आवाज़ शब्दों के द्वारा आती है जो हम सुनते हैं।

दर्शन तस्वीरों के माध्यम से आते हैं, जो हम देखते हैं।

हमें अपने हृदय को परमेश्वर के लिए खोलकर रखना है कि वह दर्शनों के माध्यम से हमसे बात करें क्योंकि हम यह बाइबल में देखते हैं।

बाइबल में इस बात के असंख्य उदाहरण हैं कि किस प्रकार लोगों ने दर्शन देखे। अब्राहम (उत्पत्ति 15:1-5), याकूब (उत्पत्ति 46:1-4), बिलाम (गिनती 24:2-9,15-25), शमूएल (1 शमूएल 3:15) और अन्य कई। खास तौर पर पुराने नियम में भविष्यद्वक्ता जो दर्शन देखते थे उन्हें दर्शी कहा जाता था (2 इतिहास 9:29)।

आप दर्शन में स्वर्गदूतों को देख सकते हैं (दानिय्येल 9:21; लूका 1:11-22; लूका 24:23; प्रेरितों के काम 10:3), आत्मिक संसार में देख

सकते हैं (2 राजा 2:12; 2 राजा 6:17), स्वाभाविक क्षेत्र में अन्य स्थानों में झांककर देख सकते हैं (2 राजा 5:26), स्वर्ग में देख सकते हैं (यशायाह 6:1-4; प्रेरितों के काम 7:55,56)। हो सकता है कि आपके आसपास के लोग उन बातों को न देख सकें जिन्हें आप देखते हैं (दानिय्येल 10:1,7)।

परमेश्वर हमें मार्गदर्शन देने हेतु, हमें दिशा प्रदान करने हेतु दर्शन दे सकता है। हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में देखते हैं, परमेश्वर अपने लोगों को मार्गदर्शन और दिशा प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार के दर्शनों का उपयोग करता है। परमेश्वर आज भी दर्शनों के माध्यम से अपने लोगों के साथ बातें कर सकता है और करता है।

पवित्र शास्त्र में हम विभिन्न प्रकार के दर्शन देखते हैं जिन्हें हमने निम्नानुसार वर्गीकृत किया है। यहां पर भी, हम परमेश्वर को एक दायरे में रखने का या उसके कामों को मात्र यहीं तक सीमित करने का प्रयास नहीं करते। निम्नलिखित बातें हमारी शिक्षा के लिए है ताकि हम परमेश्वर की ओर से प्राप्त कर सकें। हमें हमेशा और अधिक पाने के लिए तैयार रहना है। उसी तरह, इस बात को ध्यान में रखें किसी भी समय आपके पास इन अनुभवों का एक संयोग हो सकता है।

## 1. आत्मिक दर्शन

यह प्रत्येक विश्वासी के लिए अत्यंत सामान्य है, जहां पर परमेश्वर कुछ बातों को हम पर प्रगट करता है और हम अपनी आत्मा की आंखों से देखते हैं। हम चित्र या तस्वीरें देखते हैं जो वास्तविक या प्रतिकात्मक होंगी। परमेश्वर चित्र के रूप में हम पर जो प्रगट करता है उसमें इस बात का मार्गदर्शन और निर्देशन हो सकता है कि परमेश्वर क्या चाहता है कि हम करें।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में कुछ उदाहरणों पर विचार करें:

### *हनन्याह और शाऊल*

परमेश्वर ने दर्शन में हनन्याह को मार्गदर्शन किया कि वह शाऊल के पास जाए। परमेश्वर ने शाऊल को भी दर्शन में यह प्रगट किया कि हनन्याह

उसके पास आ रहा है। यह किसी मूव्ही के समान होगा जहां उन्होंने यह होते हुए देखा और उसके पश्चात् जो कुछ उन्होंने देखा उसे उन्होंने वास्तव में किया।

**प्रेरितों के काम 9:10-12**
**10 दमिष्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, "हे हनन्याह!" उसने कहा, "हां, प्रभु।"**
**11 तब प्रभु ने उससे कहा, "उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।"**
**12 और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।**

## *मकिदुनी पुरुष*

**प्रेरितों के काम 16:9,10**
**9 और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर।**
**10 उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरंत मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है।**

यह रात का स्वप्न या दर्शन हो सकता है जो पौलुस ने रात में देखा। पारिभाषिक शब्दों का उपयोग न करते हुए हम बताना चाहते हैं कि पौलुस ने एक चित्र देखा जिसमें उसने देखा कि मकिदुनिया का एक मनुष्य उन्हें बुला रहा था कि वह आकर वहां के लोगों की सहायता करे। इस दर्शन के द्वारा पौलुस और उसकी टीम को मकिदुनिया में और उसके आसपास के क्षेत्रों में सुसमाचार पहुंचाने हेतु अगुवाई प्राप्त हुई।

## *अप्रैल 2014: दो घोड़ों पर सवार*

परमेश्वर ने अक्सर आत्मिक दर्शनों में बातें की है, इसलिए मैं निम्नलिखित विशिष्ट घटना के महत्व के कारण उसके विषय में बताना चाहूंगा। जनवरी 2001 से, मैं दोहरी ज़िम्मेदारियों को निभा रहा था, तकनीकी कारोबार चलाना और बैंगलोर में ऑल पीपल्स चर्च चलाना। यह हालांकि एक लाभप्रद अनुभव था, परंतु सचमुच चुनौतीपूर्ण था, और मुझे अपने ग्राहकों

को तकनीकी समाधान तैयार कर उनकी आपूर्ति करना अच्छा लगता था। परंतु, सेवकाई में बढ़ती हुई ज़िम्मेदारियों के साथ, मैं जानता था कि मुझे इसमें से बाहर निकलना होगा। दिसम्बर 2010 में, जब मैंने अपनी जीवन योजना को तैयार किया था, तब मैंने 2015 को ऐसे वर्ष के रूप में लिख निकाला जब यह परिवर्तन होना सम्भव था। इसलिए हम धीरे धीरे इसकी तैयारी करने लगे। मार्च 31, 2014 को मुझे दिल का दौरा पड़ा, जहां पर परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से मेरे प्राण बचाए। यदि परमेश्वर का अनुग्रह न होता और समय पर वैद्यकीय हस्तक्षेप न हुआ होता, तो मैं चल बसता। अर्थात जब हम ने इस प्रकार की बात को होते हुए देखा तब उसके सारे सम्भवनीय कारणों को ढूंढ़ निकाला और पाया कि कई सारी बातें थीं। जो दोहरी ज़िम्मेदारी मैं उठा रहा था उसका तनाव इसका बहुत बड़ा भाग दिखाई दे रहा था। अस्पताल में जब मैं ठीक हो रहा था, तब मैं बिछौने पर पड़े पड़े परमेश्वर से बातें कर रहा था कि मुझे अब क्या करना चाहिए। उस क्षण, मैंने एक दर्शन देखा, जिसमें एक मनुष्य का चित्र देखा जो जीन कसे हुए खड़ा था और एक ही समय में दो घोड़ों पर सवारी करने की कोशिश कर रहा था। मुझे एक संदेश मिला। अब समय आ गया था कि मैं एक घोड़े से नीचे उतर जाऊं और दोनों में से केवल एक ही घोड़े पर बना रहूं। हालांकि भावनात्मक तौर पर, यह आसान नहीं था, परंतु मुझे उसे स्वीकार करना पड़ा और परिवर्तन करना पड़ा और परमेश्वर के प्राथमिक कार्य पर अपना ध्यान लगाना पड़ा।

## 2. ट्रांस या समाधि अवस्था

ट्रांस में, व्यक्ति अस्थायी तौर पर प्राथमिक संसार की चेतना खो बैठता है, जबकि आत्मिक दर्शन या आत्मिक संसार की किसी बात को देखता है।

प्रभु ने पतरस को ट्रांस या समाधि अवस्था के द्वारा निर्देश दिया कि वह पहली बार अन्यजातियों के पास जाकर—कुर्नेलियुस के घराने को सुसमाचार सुनाए।

**प्रेरितों के काम 10:9-16**

**9 दूसरे दिन, जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचे, तो दो पहर के निकट पतरस कोठे पर प्रार्थना करने चढ़ा।**
**10 और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चाहता था; परंतु जब वे तैयार कर रहे थे, तो वह बेसुध हो गया।**
**11 और उसने देखा कि आकाष खुल गया, और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है,**
**12 जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाएं और रेंगनेवाले जन्तु और आकाष के पक्षी थे।**
**13 और उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, "हे पतरस उठ, मार और खा।"**
**14 परंतु पतरस ने कहा, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अषुद्ध वस्तु नहीं खाई है।**
**15 फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया कि जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अषुद्ध मत कह।"**
**16 तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरंत वह पात्र आकाष पर उठा लिया गया।**

## 3. खुला दर्शन

यहां पर आप चित्र या दृश्य नहीं देखते परंतु स्पष्ट रूप से आत्मिक संसार में देखते हैं। आप देखते हैं कि फिलहाल आत्मिक क्षेत्र में क्या हो रहा है। उसी समय आपको आपके प्राकृतिक संसार का बोध होता है।

### *रूपांतरण*

पतरस, याकूब और यूहन्ना ने खुले दर्शन में देखा कि रूपांतरण के पर्वत पर मूसा और एलिय्याह के साथ यीशु का रूपांतरण हुआ। उन्होंने वही देखा जो उस समय आत्मिक जगत में वास्तव में हो रहा था।

**मत्ती 17:1-6**

**1 छः दिन के बाद यीषु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया।**
**2 और उनके सामने उसका रूप बदल गया और उसका मुंह सूर्य के समान चमक उठा और उसका वस्त्र ज्योति के समान उजला हो गया।**
**3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।**

**[4] इस पर पतरस ने यीषु से कहा, "हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है। यदि आप चाहते हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक आपके लिए, एक मूसा के लिए, और एक एलिय्याह के लिए।"**
**[5] वह बोल ही रहा था कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो, उस बादल में से यह आवाज़ सुनाई दी, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो!**
**[6] चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए।**

## *कुर्नेलियुस*

**प्रेरितों के काम 10:1-6**
**[1] कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था।**
**[2] वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।**
**[3] उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, "हे कुरनेलियुस!"**
**[4] उसने उसे ध्यान से देखा, और डरकर कहा, "हे प्रभु, क्या है?" उसने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं।"**
**[5] "और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।**
**[6] वह शमौन चमड़े का धन्धा करने वाले के यहां पाहुन है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।"**

खुले दर्शन में, कुर्नेलियुस ने परमेश्वर के एक स्वर्गदूत को आते देखा, उसके साथ बातें करते हुए और क्या करना चाहिए इस विषय में उसे निर्देश देते देखा।

## 4. दर्शनों में यात्रा करना

यहीं पर आप दर्शनों में स्वाभाविक संसार में या आत्मिक जगत में यात्रा करते हैं और विभिन्न स्थानों में जाते हैं। आपका आत्मा, प्राण और शरीर एक स्थान में होता है, लेकिन आप दर्शन में भौगोलिक दृष्टि से तथा समय में—भूतकाल में या भविष्य में—यात्रा करते हैं।

भविष्यद्वक्ता यहेजकेल के कई दर्शन इसी प्रकार के थे (यहेजकेल 8:3; 11:24; 40:2; 43:3)।

दानिय्येल को भी दर्शन में दूसरे स्थान में ले जाया गया और उसने देखा कि भविष्य में क्या होने वाला है (दानिय्येल 8)।

## 5. आत्मा में दूसरे स्थान में ले जाया गया

यहां पर आपकी आत्मा आपके शरीर को छोड़ देती है और स्वाभाविक तथा आत्मिक जगत में यात्रा करते हुए बातों का अवलोकन करती हैं।

पौलुस को तीसरे स्वर्ग में उठा लिया गया था (2 कुरिन्थियों 12:1-3)।

यूहन्ना को स्वर्ग में उठा लिया गया था (प्रकाशितवाक्य 4:1,2)।

## स्वप्न और दर्शन पाने के लिए अपने हृदय को खोल कर रखें

जैसा कि हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं, स्वप्न और दर्शन परमेश्वर का हमसे बात करने का एक ज़रिया है और अक्सर हमारा मार्गदर्शन करने हेतु वह उसका उपयोग करता है। अतः इस प्रकार परमेश्वर जब हमसे बातें करता है तब हमें अपने हृदय को खोलकर रखना है और उन बातों को स्वीकार करना है। आत्मिक दर्शन, अत्यंत सामान्य बात है जिसका हम अक्सर विश्वासियों के नाते अनुभव करते हैं। हमें इनकी ओर ध्यान देना है क्योंकि पवित्र आत्मा दर्शनों के द्वारा हमसे बातें करता है।

## मनन

1. उस स्वप्न को स्मरण करें जहां आप जानते हैं कि परमेश्वर आपसे बात कर रहा था। यह स्वप्न परमेश्वर की ओर से था यह आपने कैसे पहचाना? उस स्वप्न के विषय में आपने क्या किया? क्या उससे आपको किसी तरह सहायता मिली?

2. क्या आपने उस बात का अनुभव किया जिसे हमने आत्मिक दर्शन कहा है? यह परमेश्वर की ओर से था यह आपने कैसे जाना? निर्णय लेने में इसके द्वारा आपको कैसे सहायता मिली?

# 8

# भविष्यद्वाणियां

भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से संदेश बोलना है। पवित्र शास्त्र में, हम पुराने और नए नियम में भविष्यद्वाणी की सेवकाई को देखते हैं।

नए नियम में भविष्यद्वाणी आत्मा के वरदानों में से एक है जो सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है। भविष्यद्वाणी के वरदान का उपयोग लोगों से उन्नति, उपदेश और शान्ति की बातें करने के लिए किया जाता है (1 कुरिन्थियों 14:3)। मसीह की देह में कुछ लोगों को भविष्यद्वक्ताओं के रूप में बुलाया गया है (इफिसियों 4:11)।

**1 कुरिन्थियों 14:3**
**परंतु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेष, और शान्ति की बातें कहता है।**

विश्वासियों के नाते, हमें भविष्यद्वाणी को तुच्छ नहीं समझना है। फिर भी हमें सभी भविष्यद्वाणियों को परखना है; जो अच्छा है उसे थामे रहना है और जो पवित्र आत्मा की ओर से नहीं है उसे त्याग देना है (हटा देना है)।

**1 थिस्सलुनीकियों 5:20,21**
**[20] भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।**
**[21] सब बातों को परखो; जो अच्छी हैं उन्हें पकड़े रहो।**

प्रेरणा के स्रोत को जांचें। क्या व्यक्ति सचमुच परमेश्वर की ओर से बोल रहा है, या अपने विचारों से से बोल रहा है, या क्या वह विचार दुष्टात्मा की ओर से आ रहा है?

भविष्यद्वाणी में दी गई यथार्थता को जांचें। क्या यह संदेश लिखित वचन से मेल रखता है? क्या वह संदेश यीशु मसीह को महिमा देता है?

क्या पवित्र आत्मा मेरी आत्मा में उस भविष्यद्वाणी की गवाही देता है? क्या यह भविष्यद्वाणी उन बातों से समन्वय रखती है जो परमेश्वर ने अन्य मार्गों के द्वारा मुझ से कहीं?

भविष्यद्वाणी के समय को समझें। सच्चे भविष्यात्मक वचन पर उसके सही समय में काम करना है। भविष्यद्वाणी के अनुसार कार्य करने के समय को समझना भविष्यद्वाणी के समान ही महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर हमें अपना मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु भविष्यद्वाणी का कई तरह से उपयोग कर सकता है।

## भविष्यात्मक दृढ़ीकरण

परमेश्वर हमसे जो बोलता आया है उसे दृढ़ करने हेतु परमेश्वर भविष्यद्वाणी का उपयोग कर सकता है। हमने कई अवसरों पर ऐसा होते हुए देखा है। कोई किसी बात के लिए प्रार्थना कर रहा होगा या कोई निश्चित निर्णय लेने की तैयारी कर रहा होगा या अपने जीवन में कोई विशिष्ट मार्ग लेना चाहता होगा। ऐसा कोई व्यक्ति, जिसे इन बातों की कोई कल्पना नहीं है, भविष्यद्वाणी का वचन ले आता है, और उनके जीवनों के उस क्षेत्र के विषय में सीधे बात करता है, इस प्रकार इस दिशा की पुष्टि करता है जिसमें वे आगे बढ़ रहे थे।

## भविष्यात्मक निर्देशन

परमेश्वर भविष्यद्वाणी का उपयोग हमें यह दिखाने के लिए कर सकता है कि वह क्या चाहता है कि हम करें। भविष्यद्वाणी के द्वारा हमें किसी विशिष्ट बात को करने का या किसी विशिष्ट स्थान में जाने का और एक विशिष्ट प्रकार का कार्य करने का निर्देशन प्राप्त हो सकता है।

## भविष्यात्मक प्रकाशन

कई बार लोग उस क्षमता के विषय में नहीं जानते होंगे जो परमेश्वर ने उनके अंदर रखी है। उन्हें परमेश्वर की बुलाहट का, या उनके जीवनों के

लिए परमेश्वर की भविष्य की योजना का एहसास नहीं होगा। भविष्यद्वाणी के द्वारा परमेश्वर उन बातों को जगा सकता है जो बातें निष्क्रिय या निद्रावस्था में हैं या अपने आप में न पहचाना हुआ है। भविष्यद्वाणी के द्वारा, परमेश्वर उन योजनाओं और उद्‌देश्यों को प्रगट कर सकता है जो उनके भविष्य के लिए उसके पास हैं। परमेश्वर भविष्यद्वाणी का उपयोग कर भविष्य की बातों को प्रगट करता है ताकि हम अपने आप को तैयार कर सकें।

हम बहुत ज़ोर देकर दोहराना चाहते हैं, कि सारी भविष्यद्वाणी को स्वीकार करने से पहले परखा जाना चाहिए।

भविष्यद्वाणी की खोज करते हुए यहां वहां न फिरें। परमेश्वर उसके द्वारा चुने गए समय में और उसके द्वारा चुने गए व्यक्ति के द्वारा आपके साथ बात करने पाए।

## *मई 1993: पूर्णतया अजनबी की ओर से भविष्यद्वाणी*

उन अत्याधिक महत्वपूर्ण भविष्यद्वाणियों में से एक जो मैंने व्यक्तिगत तौर पर प्राप्त की, वह थी मई 1993 की भविष्यद्वाणी जहां अपनी भविष्यद्वक्ता की सेवकाई के लिए जाने माने केविन वैन डेन वेस्थूज़ेन ट्यूल्सा, ओल्काहामा के एक आत्मिक कौशल पाठ्‌यक्रम सिखा रहे थे। हमारे दूसरे सत्र का अंत होने वाला था जिसमें वे हमें भविष्यद्वाणी के विषय में सिखा रहे थे, वे मेरे पास प्रार्थना करने के लिए आए और उसके बाद मेरे जीवन के लिए भविष्यद्वाणी करने लगे। वे कहने लगे, “प्रभु, आप उसे आने वाली बातों के लिए तैयार कर रहे हैं। आप इंजीनियरिंग की योग्यताओं का उपयोग कर रहे हैं और आप उन बातों को उसके जीवन में परमेश्वर के राज्य के लिए बो रहे हैं। आप इसी समय बातों को सक्रिय कीजिए, आपके क्षेत्र में आप ईश्वरीय सम्पर्कों को स्थापित कर रहे हैं। आप उन लोगों को स्थापित कर रहे हैं जो उसके सम्पर्क में आएंगे। बातें उसकी ओर से हो रही हैं और आप उसके पक्ष में हैं। आप मार्ग खोल रहे हैं। आप द्वार खोल रहे हैं। आप ही हैं जो उसके जीवन के लिए इन सारी बातों को सक्रिय बना रहे हैं, गति दे रहे हैं। हालांकि वह यहां है, वह यहां पर एक समय के लिए है। वह यहां

पर एक अवधि के लिए है। यहां पर कुछ बातें हो रही हैं, लेकिन एक दिन आ रहा है जब आप उसे वापस उसके लोगों के पास ले जाएंगे और वह कइयों के जीवनों को स्पर्श करेगा। परंतु वह भी एक समय के लिए होगा, क्योंकि आपने इस पुरुष को मात्र एक जनजाति के लिए या एक राष्ट्र समूह के लिए नहीं बुलाया है, परंतु उसके जीवन पर एक बुलाहट है, जो आपने उसके जीवन पर रखी है और उसे दी है, क्योंकि आपने उसे राष्ट्रों के लिए बुलाया है। और परमेश्वर, आप उसके जीवन में बहुत विपत्ति की अनुमति देते हैं। आप उसे प्रभावी बना रहे हैं और उसके आगे मार्ग खोल रहे हैं। परमेश्वर, आप कई राष्ट्रों के जीवनों को छूने के लिए उसके जीवन के स्वाभाविक संसारिक क्षेत्र के वरदान का उपयोग करते हुए उसे यहां वहां एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाएंगे...” और इस प्रकार, वे उन्हीं बातों को बोलते रहे जो मेरे ह्रदय में थीं। केविन और मैं इससे पहले एक-दूसरे को कभी नहीं जानते थे। और फिर से अगले सत्र में, केविन मेरे पास आए और उन्होंने आगे कहा, “कुछ संघर्ष रहे हैं, परंतु परमेश्वर ने आपको एक गड्हे से दूसरे गड्हे में नहीं बुलाया है। उसने तुम्हें महिमा से महिमा की ओर बुलाया है। मैं तुम्हारे सारे जीवन पर सेवकाई को लिखा हुआ देखता हूं।” मैं तुम्हारे जीवन पर परमेश्वर की बुलाहट को देखता हूं...। वे उन बातों का वर्णन करते रहे जो प्रभु आने वाले दिनों में करने वाला था। केविन की भविष्यद्वाणी उन कई बातों की पुष्टि थी जो पहले से मेरे ह्रदय में थी और उस समय सचमुच उस बात ने मुझे आगे की ओर बढ़ने हेतु प्रेरित किया।

भविष्यद्वाणी की सेवकाई के विषय में अधिक सम्पूर्ण अध्ययन के लिए कृपया ए.पी.सी. द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पुस्तक *“भविष्यद्वक्ता की सेवकाई को समझना”* पढ़ें।

## मनन

1. क्या आपके लिए कभी भविष्यद्वाणी की गई जिससे आपको सहायता मिली हो? आपने कैसे जाना कि यह परमेश्वर की ओर से था? भविष्यद्वाणी के द्वारा परमेश्वर ने आपके जीवन में जो कुछ किया उसके विषय में बताएं।

# 9

# स्वर्गदूत

हम आज भी कलीसियाई युग में जी रहे हैं, अर्थात, उसी काल (या परमेश्वर की दिनदर्शिका में युग, या समय) में उस कलीसिया के समान जिसका जन्म पिन्तेकुस्त के दिन हुआ। निश्चित रूप से हम पिन्तेकुस्त की कलीसिया की तुलना में अंतिम दिनों के अंत के अधिक निकट हैं, परंतु फिर भी हम कलीसियाई युग में हैं। स्वर्गदूत बाइबल के समयों के दौरान और प्रारम्भिक कलीसिया के समय के दौरान कार्यप्रवीण थे और वे आज भी कार्यप्रवीण हैं।

**इब्रानियों 1:14**
**क्या वे सब सेवा टहल करनेवाली आत्माएं नहीं, जो उद्धार पानेवालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं?**

हम पुराने और नए नियमों में देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को संदेश भेजने हेतु स्वर्गदूतों का उपयोग करता था ताकि उन्हें मार्गदर्शन करे, उन्हें निर्देश दे, उन्हें प्रगट करे कि परमेश्वर क्या करने की योजना बना रहा है और परमेश्वर की ओर से प्राप्त मुलाकात का अर्थ उन्हें समझाए।

स्वर्गदूत ने मरियम को घोषित किया कि उसे पवित्र आत्मा के द्वारा बालक उत्पन्न होगा और यह बालक कौन होगा (लूका 1:26-38)।

स्वर्गदूत ने यूसुफ को स्वप्न में दर्शन दिया और उसे निर्देश दिया कि वह मरियम को अपनी पत्नी के रूप में ग्रहण करे और उसे त्याग न दे (मत्ती 1:18-24)।

स्वर्गदूत ने यूसुफ को स्वप्न में दर्शन दिया और उसे निर्देश दिया कि वह सुरक्षा के लिए मरियम और बालक यीशु के साथ मिस्र को जाए (मत्ती 2:13-15)।

प्रारम्भिक कलीसिया में स्वर्गदूतों के कार्यों को हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में हमारे लिए लिखा हुआ पाते हैं।

- ✓ एक स्वर्गदूत ने पतरस को कैद से छुड़ाया और उसे बताया कि वह जाकर मंदिर में प्रचार करे (प्रेरितों के काम 5:19,20)।
- ✓ स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस को मार्गदर्शन किया कि वह गाज़ा को जाए (प्रेरितों के काम 8:26) जहां फिलिप्पुस ने इथियोपिया के उस व्यक्ति को सुसमाचार सुनाया।
- ✓ कुर्नेलियुस को दर्शन में एक स्वर्गदूत दिखाई दिया और उसने उसे निर्देश दिया कि वह सुसमाचार सुनने हेतु पतरस को बुलाए (प्रेरितों के काम 10:1-7)।
- ✓ एक स्वर्गदूत ने पतरस की बेड़ियों को खोला और उसे कैदखाने से बाहर निकाला (प्रेरितों के काम 12:7-10)।
- ✓ स्वर्गदूत ने हेरोदेस को मारा और वह मर गया (प्रेरितों के काम 12:23)।
- ✓ रोम की यात्रा पर स्वर्गदूत ने पौलुस को दर्शन दिया और उसे आश्वासन दिया कि भले ही जहाज क्षतिग्रस्त होगा, परंतु जान की कोई हानि न होगी और पौलुस को कैसर के सामने प्रस्तुत होना होगा (प्रेरितों के काम 27:22-25)।

स्वर्गदूत हमें दर्शन दे सकते हैं और सुनाई दे सके ऐसा बोल सकते हैं, वे बिना दिखाई दिए हमसे बोल सकते हैं या स्वप्न में हमसे बातें कर सकते हैं। स्वर्गदूत हमारे विचारों को प्रभावित कर सकते हैं या हमारे मन में विचारों को डाल सकते हैं (जिस प्रकार दुष्टात्माएं हमें परीक्षा में डालती हैं।) स्वर्गदूत बोल सकते हैं और हम अपनी आत्मा के कानों से सुन सकते हैं। स्वर्गदूत जब दिखाई नहीं देते तब हमारी सेवा कर सकते हैं। स्वर्गदूत भले ही अदृश्य हों, फिर भी आप उन्हें सुन सकते हैं।

अक्सर आराधना के समय के दौरान हम हमारे मध्य में सेवा करते हुए स्वर्गदूतों की उपस्थिति को अनुभव कर सकते हैं (आत्मिक रीति से

पहचान सकते हैं)। हमारे मध्य में परमेश्वर के स्वर्गदूतों की सेवा के लिए हम परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं।

हम खुले विचार रखते हैं और अपने आसपास स्वर्गदूतों की उपस्थिति का एहसास हमें है, फिर भी निम्नलिखित बातों को हमें ध्यान में रखना हैः

- ✓ हम स्वर्गदूतों की उपासना नहीं करते। हम परमप्रधान प्रभु की उपासना करते हैं।
- ✓ हम स्वर्गदूतों की मुलाकातों की खोज नहीं करते। हमारा ध्यान प्रभु पर बना रहता है।
- ✓ हमें स्वर्गदूतों की मुलाकातों को पहचानना है क्योंकि हम जानते हैं कि स्वर्गदूत और उसकी दुष्टात्माएं ज्योतिर्मय स्वर्गदूतों की नकल करती हैं।
- ✓ हम परमेश्वर के वचन के अनुसार परमेश्वर से उसके स्वर्गदूतों की सहायता मांगते हैं।
- ✓ हम यह घोषणा करते हुए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को बोलते हैं कि उसके स्वर्गदूत हमारे लिए क्या करते हैं और वे उसके वचन की आवाज़ को उत्तर देते हैं (भजनसंहिता 103:20)।

## मनन

1. क्या आपने कभी परमेश्वर के स्वर्गदूत को अपने आसपास देखा या महसूस किया है? क्या आपने कभी अलौकिक हस्तक्षेप को (खतरे से सुरक्षा, आप जो करने जा रहे थे उसमें पुनः मार्गदर्शन, असामान्य कल्पना या विचार–संदेश–को आपके निकट आते अनुभव किया जो आप जानते थे कि परमेश्वर की ओर से था), और महसूस किया कि यह हो सकता है क्योंकि परमेश्वर के स्वर्गदूत ने आपको सेवा प्रदान की।

2. प्रार्थना करें और परमेश्वर से विनंती करें कि वह आपके लिए स्वप्नों, दर्शनों, भविष्यद्वाणियों, और स्वर्गदूतों की भेंट को बढ़ाए ताकि आप इन बातों के माध्यम से परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उससे सुन सकें?

# 10

# ईश्वरीय परामर्श

एक महत्वपूर्ण तरीका जिसके द्वारा परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन कर सकता है, वह है ईश्वरीय मार्गदर्शन के द्वारा, हमारे जीवनों से बातें करने हेतु वह अपने लोगों का उपयोग करता है और हमारे जीवनों के लिए वह सही मार्ग पर चलने में हमारी सहायता करता है।

**भजनसंहिता 73:24**
**तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा।**

**नीतिवचन 19:21**
**मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती हैं, परंतु जो युक्ति यहोवा करता है, वही स्थिर रहती है।**

परमेश्वर अपना परामर्श या सलाह देकर हमारा मार्गदर्शन करता है, और यह अक्सर उसके लोगों के द्वारा हमें दिया जाता है जो परमेश्वर के मार्गों को जानते हैं, परमेश्वर के हृदय को पहचानते हैं और जिनके पास परमेश्वर की बुद्धि है।

अब, सामान्य तौर पर, हममें से अधिकांश लोग ईश्वरीय मार्गदर्शन मांगने और खोजने से बचते हैं। परंतु, इसे हमें बदलने की ज़रूरत है। हमें विनम्र हृदय बनाए रखना है, ऐसा हृदय जो ईश्वरीय मार्गदर्शन सुनने और प्राप्त करने के लिए इच्छुक है। नीतिवचन की पुस्तक से इन वचनों पर विचार करें जो हमें उत्तम परामर्श का मूल्य और महत्व सिखाते हैं।

**नीतिवचन 11:14**
**जहां बुध्दि की युक्ति नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है; परंतु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है।**

सही परामर्श या सलाह पाना हमें सुरक्षा और बल के स्थान पर लाकर रखता है। हम धर्मी लोगों से बुद्धि, अनुभव और शिक्षा पाते हैं।

**नीतिवचन 15:22**
**बिना सम्मति की कल्पनाएं निष्फल हुआ करती हैं, परंतु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।**

उत्तम कल्पना पाना अच्छी बात है। सही लोगों की ओर से सही योगदान पाने से उस कल्पना को वास्तविकता बनते हुए देखने में सहायता प्राप्त होगी। अक्सर हमें कई लोगों के योगदान की ज़रूरत होती है, क्योंकि एक व्यक्ति के पास आवश्यक सारी जानकारी नहीं होती।

**नीतिवचन 19:20**
**सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुध्दिमान ठहरे।**

हमें सुनने और प्राप्त करने की योग्यता का विकास करना है। हममें से अधिकांश लोग सुनना, विशेषकर निर्देश सुनना पसंद नहीं करते। हमारे पास अपनी पूर्वकल्पित कल्पनाएं या पूर्वग्रह होते हैं जो हमें निर्देश पाने से रोकते हैं जिनसे हमें सचमुच सहायता प्राप्त होगी। हम गलत ही सोचते हैं: "मुझे अच्छा नहीं लगता कि कोई मुझे यह बताए कि मुझे क्या करना चाहिए;' "मैं नहीं चाहता कि कोई और मुझ पर नियंत्रण करे," "मैं खुद ही इसका पता लगा सकता हूं," "मैं स्वतंत्र रहना चाहता हूं"। सुनने और निर्देश प्राप्त करने के लिए तैयार रहने हेतु नम्रता की आवश्यकता होती है। यदि हम अपने आप को नम्र बनाएंगे और निर्देश प्राप्त करेंगे, तो यह लम्बे समय के दौरान लाभदायक साबित होगा।

**नीतिवचन 20:18**
**सब कल्पनाएं सम्मति ही से स्थिर होती हैं; और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिये।**

जो सलाह आप पाते हैं वह युद्ध सामग्री या हथियारों के समान है जो आपको युद्ध के लिए सुसज्जित करती है। बुद्धिमान लोगों की सलाह या परामर्श से सुसज्जित होकर युद्ध पर जाएं। आप मुश्किल परिस्थितियों

का सामना करने हेतु सही समय पर तथा जब आप चुनौतियों का सामना करते हैं, और विजय की ओर आगे बढ़ते हैं उनका उपयोग कर सकते हैं।

## सही परामर्श प्राप्त करना

यह भी अत्यंत महत्वपूर्ण है कि आप किससे सलाह लेते हैं। हम जो अध्ययन कर रहे हैं—परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करना—उसके संदर्भ में, हमें उन लोगों से परामर्श या सलाह लेना है जो परमेश्वर के साथ गहराई से चलते आए हैं, वे समय के साथ परखे गए हैं और उनका चालचलन सिद्ध हो चुका है, जो परमेश्वर के वचन के अधिकार के आधार पर और पवित्र आत्मा की अधीनता में बोलेंगे।

हमें सावधान रहना है कि हम अधर्मी की सलाह पर न चलें।

**भजनसंहिता 1:1**
**क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता है!**

अर्थात जीवन की अन्य बातों में, हम उस क्षेत्रों के विशेषज्ञों के पास जाते हैं (उदाहरण कानूनी, अर्थ सम्बंधी, करियर, शिक्षा, व्यावसायिक मामला, आदि)। आप इन शर्तों पर इन विशेषज्ञों से सलाह पा सकते हैं कि वे आपको ऐसा कुछ करने के निर्देश न दें जो अधर्म के कार्य हों (परमेश्वर को अप्रसन्न करने वाले)।

## सुधार पाने के लिए तैयार रहें

सलाह के द्वारा परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने से हमें रोकने वाली बाधाओं में से एक यह है कि हम केवल वही सलाह पाना चाहते हैं जो उस बात की पुष्टि करती है जिसकी ओर हमारा झुकाव होता है। यदि ऐसी कोई सलाह या परामर्श है जो हममें सुधार ला सकता है, तो हम उसे स्वीकार करना नहीं चाहते।

वचन हमें क्या सिखाते हैं इस पर विचार करेंः

**नीतिवचन 12:1**
**जो शिक्षा पाने में प्रीति रखता है वह ज्ञान में प्रीति रखता है, परंतु जो डांट से बैर रखता, वह पषु सरीखा है।**

**नीतिवचन 13:18**
**जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता वह निर्धन होता और अपमान पाता है, परंतु जो डांट को मानता, उसकी महिमा होती है।**

**नीतिवचन 29:1**
**जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाष हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।**

जब हम ईश्वरीय परामर्श मांगते और खोजते हैं तब सीखने के लिए तैयार रहें, विनम्र हृदय बनाए रखें और सुधार पाने के लिए तत्पर रहें। इसका अर्थ यह है कि जिस बात के विषय में आप सोच रहे थे, हो सकता है वह शायद परमेश्वर नहीं चाहता कि आप करें और आपको परमेश्वर के मार्गों के अनुसार अपने आप को बदलने हेतु इच्छुक रहना है और उनके अनुसार अपने आप को ढालना है।

**भजनसंहिता 141:5**
**धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा मानी जाएगी, और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा; मेरा सिर उस से इन्कार न करेगा। लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं प्रार्थना में लवलीन रहूंगा।**

**नीतिवचन 15:31**
**जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है, वह बुध्दिमानों के संग ठिकाना पाता है।**

**नीतिवचन 15:32**
**जो शिक्षा को सुनी-अनसुनी करता, वह अपने प्राण को तुच्छ जानता है, परंतु जो डांट को सुनता, वह बुध्दि प्राप्त करता है।**

**सभोपदेशक 7:5**
**मूर्खों के गीत सुनने से बुद्धिमान की घुड़की सुनना उत्तम है।**

## धर्मी माता-पिता की सलाह

**नीतिवचन 13:1**
**जो जीवनदायी डांट कान लगाकर सुनता है, वह बुध्दिमानों के संग ठिकाना पाता है।**

**नीतिवचन 1:8,9**
**[8] हे मेरे पुत्र, अपने पिता की शिक्षा पर कान लगा, और अपनी माता की शिक्षा को न तज;**
**[9] क्योंकि वे मानो तेरे सिर के लिये शोभायमान मुकुट, और तेरे गले के लिये कन्ठ माला होगी।**

एक आदरयोग्य चीज़ जो हम कर सकते हैं वह है हमारे अपने माता-पिता से सलाह लेना, विशेषकर जब वे धर्मी माता-पिता होते हैं। पवित्र शास्त्र के अनुसार बच्चों और जवान लोगों को अपने माता-पिता की सुनना है और उनसे सलाह तथा निर्देश प्राप्त करना है। वे आपको लोगों के मध्य सम्मान और आदर के साथ चलने हेतु प्रेरित करेंगे।

## *मार्च 1984: यीशु ने तीस वर्षों तक इंतज़ार किया*

मैंने कई अवसरों पर अपने आसपास के लोगों की सलाह और सहायता से आशीष पाई है, उनमें से एक जो सचमुच विशेष है, मार्च 1984 में घटित हुई। यह स्कूल में 10 वीं कक्षा पास करने के बाद की बात है। प्रभु की सेवा करने के विषय मैं इतना आवेशी था कि मैंने यह निर्णय ले लिया कि मुझे और पढ़ने की ज़रूरत नहीं है और मुझे पूर्णकालीन सेवकाई में जाना है। उस समय मैंने अपने माता-पिता को बहुत दुख दिया, विशेषकर मेरे पिता को। लेकिन मेरे पिता ने एक अत्यंत अद्भुत बात की। उन्होंने सुझाव दिया कि हम दो मसीही अगुवों से सलाह लेंगे, जिसके लिए मैं सहमत हो गया। इसलिए सबसे पहले वे मुझे इंडियन इव्हेन्जिलिकल मिशन (आय. ई. एम.) के सरसचीव डॉ. थियोडर विल्यम्स के पास ले गए। मेरे मन में डॉ. थियोडर विल्यम्स के लिए बहुत आदर था और मैं रेडियो पर नियमित रूप

से उन्हें सुना करता था, और जब वे रिचमंड टाऊन मेथडिस्ट चर्च (आर टी एम सी) में प्रचार करते तो मुझे बड़ा आनंद आता था। डॉ. थियोडर विल्यम्स ने धीरज के साथ हमें सुन लिया, और उसके बाद अत्यंत सरल बयान दिया। उन्होंने कहाः अपनी सेवा आरम्भ करने से पहले यीशु ने तीस वर्षों तक इंतज़ार किया, तुम क्यों इतनी जल्दबाजी में हो? जो बात उन्होंने कही वह अत्यंत अर्थपूर्ण थी। इसलिए हम वहां से चले गए और उसके बाद मेरे पिता मुझे डॉ. थॉमस ज्ञानमुथू के पास ले गए, जो आर टी एम एस में सेवा करते थे। डॉ. थॉमस ज्ञानमुथू ने हमारी सुन ली और फिर उन्होंने कहाः अपनी सेवा आरम्भ करने से पहले यीशु ने तीस वर्षों तक इंतज़ार किया, तुम क्यों इतनी जल्दबाजी में हो? इससे मैं अत्यंत अचम्भित हो गया। मुझे सलाह देने वाले दो पुरुषों ने एक ही बात कही। मैं तुरंत सही मार्ग पर आ गया और मैं अपना अध्ययन जारी रखने के लिए सहमत हो गया। पीछे पलटकर जब मैं देखता हूं तो पाता हूं कि मेरे पास उत्साह तो था परंतु बुद्धि नहीं थी, मेरे पिता ने जो कुछ किया उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूं, और इन धर्मी लोगों की सलाह के लिए भी, जिन्होंने मेरे जीवन को उस दिशा में बढ़ाने में सहायता की जहां परमेश्वर चाहता था कि मैं जाऊं।

## मनन

1. क्या आपके जीवन में ऐसा समय था जब आपने ईश्वरीय सलाह पाने का प्रयास किया? आपने यह कैसे किया? आप किसके पास गए? परिणाम क्या हुआ?

2. लोग ईश्वरीय सलाह मांगने से क्यों हिचकते हैं? हम इन रूकावटों पर कैसे जय पा सकते हैं?

# 11

# नवीनीकृत मन

दूसरा महत्वपूर्ण तरीका जिसके द्वारा हम हमारे जीवनों में परमेश्वर के मार्गदर्शन को प्राप्त करते हैं वह है हमारे नवीनीकृत मन के उपयोग के द्वारा।

हमें इसे सही रीति से समझना है। हम जानते हैं कि स्वाभाविक मन परमेश्वर की बातों को समझ नहीं सकता (1 कुरिन्थियों 2:14)। हम यह भी जानते हैं कि शारीरिक मन (देह के अनुसार चलने वाला) परमेश्वर के विरोध में शत्रुता है (रोमियों 8:7)। हम यह जानते हैं कि परमेश्वर के मार्ग और परमेश्वर के विचार हमारे मार्गों और विचारों से बहुत ऊंचे हैं (यशायाह 55:8,9)। इसलिए परमेश्वर के साथ चलने हेतु, हमें अपने स्वाभाविक या शारीरिक मनों के चलाए नहीं चलना चाहिए और न ही चल सकते।

पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि हम अपनी समझ का सहारा न लें (निर्भर न रहें, सहायता न पाएं)। बल्कि हमें अपने सारे मार्गों में उसका अनुसरण करना है।

**नीतिवचन 3:5,6**
**5 तू अपनी समझ का सहारा न लेना वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना।**
**6 उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।**

अक्सर, हम इस वचन का गलत अर्थ लगाते हैं और कहते हैं कि हमें अपनी समझ का उपयोग नहीं करना चाहिए। परमेश्वर यहां पर यह नहीं सीखा रहा है। हम अपनी समझ का उपयोग करते हैं, और फिर भी जब हम ऐसा करते हैं, तब हम अपने कदमों को मार्ग दिखाने हेतु और अपने मार्गों को स्थापित करने हेतु परमेश्वर पर पूर्णतया निर्भर रहते हैं और भरोसा करते हैं।

परमेश्वर ने हमारे मनों को उत्पन्न किया है। परमेश्वर ने हमारी बौद्धिक योग्यताओं की रचना की और उन्हें हमें दिया। परमेश्वर हमें आज्ञा देता है कि हम अपने मनों का उपयोग करें।

**नीतिवचन 4:26**
**अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें।**

हमें अपने मार्ग के विषय में जिस पर हम चलने वाले हैं विचार करना है (तौलना, जानना, सुनिश्चित करना, विचारपूर्वक योजना बनाना, अध्ययन करना, सावधान रहना), ताकि हम यह सुनिश्चित कर सकें कि जो कुछ भी हम करते हैं, उसमें हम दृढ़, सुरक्षित, अटल, और स्थापित हों।

परमेश्वर ने हमें हमारा मन दिया है और यह भी निर्देश दिया है कि हम सही रीति से उसका उपयोग कैसे करें। हममें से कइयों के साथ समस्या यह है कि हम अपने मन को अपना शत्रु समझते हैं। जैसे परमेश्वर ने हमें अपने मन का उपयोग करने के लिए कहा है उसके अनुसार यदि हम अपने मन का उपयोग करते हैं, तो हमें जीवन की परिस्थितियों में परमेश्वर के निर्देशन को प्राप्त करने में सहायता प्राप्त होगी।

## जो अच्छा है उसे साबित करें

**रोमियों 12:1,2**
**1 इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ; यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।**
**2 और इस संसार के सदृष न बनो, परंतु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।**

विश्वासी होने के नाते हमें मन के उपयोग को नहीं त्यागना है। बल्कि, हमें अपने मनों का नवीनीकरण करना है और उसका इस रीति से उपयोग करना है जैसे परमेश्वर ने हमारे लिए ठहराया है। नवीनीकृत मन के लाभों में से एक यह है कि वह इस बात को पहचान सकता है कि किसी भी परिस्थिति में परमेश्वर की इच्छा क्या है।

हम परमेश्वर के मार्गों और विचारों के अनुरूप सोचने हेतु अपने मन का नवीनीकरण करते हैं और उसे प्रशिक्षित करते हैं। जो मन परमेश्वर के

वचन के द्वारा परमेश्वर के उच्च मार्गों और विचारों के अनुरूप बनता रहा है और बनना जारी रखता है, वह नवीनीकृत मन है। यह हम परमेश्वर के वचन के साथ करते हैं।

नवीनीकृत मन सिद्ध करने (ग्रीक *"dokimazo"*) की क्षमता रखता है अर्थात, *परखना, परीक्षण के बाद असली के रूप में पहचानना, मान्य करना* कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। यहां पर चित्र धातु की जांच करने का है, कि वह असली है या नहीं। इस प्रकार नवीनीकृत मन उपलब्ध जानकारी को प्रक्रमित करता है और उसे इन सब बातों से पहचानता है कि परमेश्वर की वास्तविक—भली, भावती, और सिद्ध—इच्छा क्या है।

## जानने हेतु प्रशिक्षित

हम परमेश्वर के वचन के सम्बंध में इब्रानियों 5:12-14 में क्या पढ़ते हैं देखें:

**इब्रानियों 5:12-14**
**12 समय के विचार से तो तुम्हें गुरू हो जाना चाहिए था, तौभी क्या यह आवष्यक है, कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए? और ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।**
**13 क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।**
**14 परंतु अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं।**

जब हम परमेश्वर के वचन में परिपक्व होते हैं और बने रहते हैं तब हमारे ज्ञानेंद्रिय (बोध के अंग) सही और गलत क्या है यह पहचानने (भेद करने, परखने) हेतु उपयोग किए जाते हैं (खिलाड़ी के समान प्रशिक्षित किए जाते हैं)। वचन के निरंतर उपयोग के कारण, हम तुरंत जान लेते हैं कि सही क्या है और गलत क्या है।

अन्न वचन के ठोस मांस का उल्लेख करता है। जो परिपक्व हैं वे लोग हैं जो वचन का ठोस मांस खाते हैं। इन लोगों के ज्ञानेन्द्रिय (बोध, परख के अंग) सही क्या है और गलत क्या है यह जानने हेतु प्रशिक्षित होते हैं।

अन्य संस्करणों ने इस वचन का कैसे अनुवाद किया है देखें:

(कन्टेम्पररी इंग्लिश वर्जन) ठोस अन्न परिपक्व लोगों के लिए है जिन्होंने गलत से सही का अंतर जानने हेतु प्रशिक्षण पाया है।

(इज़ी टू रीड वर्जन) परंतु ठोस भोजन उन लोगों के लिए है जो बड़े हो चुके हैं। उनके अनुभव से उन्होंने भले और बुरे के बीच के अंतर को देखना सीखा है।

(इंग्लिश स्टैन्डर्ड वर्जन) लेकिन ठोस भोजन परिपक्व के लिए है, उन लोगों के लिए जिनकी पहचानने की शक्ति बुराई से भलाई को अलग पहचानने के निरंतर अभ्यास द्वारा प्रशिक्षित हुई है।

(गुड न्यूज़ बाइबल) दूसरी ओर, ठोस अन्न प्रौढ़ों के लिए है, जो अभ्यास के द्वारा भले और बुरे के बीच अंतर करने में सक्षम है।

इससे यह दिखाई देता है कि नवीनीकृत मन में क्या सही है और क्या गलत है यह पहचानने की क्षमता होती है, इस प्रकार यह निश्चित करने की कि परमेश्वर की इच्छा क्या है और क्या नहीं है।

## पता करें, समझें

हमने पिछले एक अध्याय में इफिसियों 5 पर विचार किया और हम इस अनुच्छेद को फिर से पढ़ेंगे:

**इफिसियों 5:8-10,17**
**8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे, परंतु अब प्रभु में ज्योति हो, इसलिए ज्योति की सन्तान के समान चलो।**
**9 (क्योंकि ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, और धार्मिकता, और सत्य है)।**
**10 और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है?**
**17 इस कारण निर्बुद्धि न हो, परंतु ध्यान से समझो, कि प्रभु की इच्छा क्या है?**

ज्योति की संतान होने के नाते, हम अपने जीवनों को प्रभु के लिए क्या "भाता" है यह **"परखते हुए"** (अर्थात् जांचना, परीक्षण करना, साबित

करना, पहचानना, पता लगाना) बिताते हैं। "पता लगाने" की प्रक्रिया का अर्थ यह है कि हम हमारे नवीनीकृत मन का उपयोग करते हैं। हम सही और गलत क्या है, प्रभु के लिए प्रसन्नतादायक क्या है, यह निर्धारित करते समय, नवीनीकृत मन से तथ्यों का, जानकारी का परीक्षण करते हैं, हम पूछताछ करते हैं, हम विचार करते हैं, हम तर्क करते हैं, हम जांचते हैं, प्रमाणित करते हैं, प्रश्न करते हैं, आदि।

**"भाता है"** इस शब्द के लिए दिए गए ग्रीक शब्द (*"euarestos"*) का अर्थ है प्रभु के लिए पूर्णतया मनभावन और प्रभु के लिए प्रसन्नतादायक। इसलिए विश्वासियों के नाते, हमें प्रोत्साहन दिया जाता है कि हम परमेश्वर की इच्छा जानने के, परमेश्वर के लिए क्या मनभावना और प्रसन्नतादायक है यह जानने के प्रयास में रहें।

आगे, वचन 17 में, हमें निर्देश दिया गया है कि हम **"निर्बुद्धि"** न बनें। थायर्स की ग्रीक व्याख्याओं में "निर्बुद्धि" के लिए दिए गए ग्रीक शब्द (*"aphroon"*) के निम्नलिखित अर्थ दिए गए हैः "अकारण, अर्थहीन, मूर्ख, बेवकूफ़, बिना सोचे-समझे या बिना बुद्धि से अविचार से कार्य करना।" निर्बुद्धि होने के बजाए हमें समझना है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है।

"समझना" के लिए दिए गए ग्रीक शब्द का अर्थ है एक साथ रखना, मन में एक साथ जोड़ना, विपरीत अर्थ से एक साथ लाना, दो प्रतियोगियों को एक साथ लाना, जिससे बाहरी तौर पर विरूद्ध दिखने वाली कल्पनाओं के साथ विचार करना सूचित होता है। यह वचन हमें सिखा रहा है कि परमेश्वर की इच्छा समझने और परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने हेतु हम अपनी बुद्धि को हटाते नहीं हैं।

## परमेश्वर के मार्ग और विचार

मुख्य रूप से नवीनीकृत मन किसी भी स्थिति में परमेश्वर के मार्गों और विचारों को काम में लाता है। नवीनीकृत मन परमेश्वर के मार्गों, परमेश्वर के विचारों (वचन और प्रकाशन) के ज्ञान और समझ का उपयोग करने में

सक्षम होता है और उससे उपलब्ध जानकारी को क्रमबद्ध करता है, ताकि हम जान सकें कि उस परिस्थिति में परमेश्वर के लिए क्या प्रसन्नतादायक है।

परमेश्वर चाहता है कि हम नवीनीकृत मन के साथ जीवन बिताएं और नवीनीकृत मन के साथ निर्णय लें। उसका मार्गदर्शन हमें अक्सर हमारे नवीनीकृत मन के उपयोग से प्राप्त होता है।

## नवीनीकृत मन स्वाभाविक मन से परे जाता है

हम नहीं जानते कि ऐसा भी समय आएगा जब परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए हमारे बुद्धिसम्पन्न मन द्वारा उत्पन्न प्रतिबंधों को हमें हटाकर रखना हम नहीं जानते कि ऐसा भी समय आएगा जब परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए हमारे बुद्धिसम्पन्न मन द्वारा उत्पन्न प्रतिबंधों को हमें हटाकर रखना होगा। नवीनीकृत मन हमें परमेश्वर के मार्गों के अनुसार चलने और उसके विचारों के अनुसार सोचने हेतु सक्षम बनाता है। यह हमें स्वाभाविक मन के विचारों के क्षेत्र से परे ले जाता है। नवीनीकृत मन आश्चर्यकर्मों और ईश्वरीय सम्भावनाओं के संदर्भ में सोच पाने में सक्षम होता है। यह मात्र खयाली पुलाव नहीं है, परंतु परमेश्वर के वचन के अनुरूप और परमेश्वर कौन है और वह विशिष्ट क्षण में क्या करने की इच्छा रखता है इसके अनुसार सोचना है। नवीनीकृत मन यह देखने में सक्षम होता है कि परमेश्वर पांच मछलियों और दो रोटियों को लेकर पांच हज़ार से अधिक लोगों को खिला सकता है। नवीनीकृत मन यह देखने में सक्षम होता है कि जब परमेश्वर हमारे मध्य में कार्य करता है तब पानी को दाखरस में बदला जा सकता है, लोग पानी पर चल सकते हैं, और सब प्रकार के आश्चर्यकर्म होते हैं। यह स्वाभाविक विवेकशील बुद्धि को असंगत और हास्यपूर्ण प्रतीत होता है, परंतु नवीनीकृत मन अलौकिक को सामान्य ही समझता है।

## मनन

1. रोमियों 12:2 में पवित्र शास्त्र जिस **"नवीनीकृत बुद्धि"** के विषय में कहता है, उस संज्ञा से आप क्या समझते हैं?

2. हम अपने मनों (बुद्धि) का नवीनीकरण कैसे कर सकते हैं?

3. नवीनीकृत बुद्धि या मन जीवन की परिस्थितियों में परमेश्वर का मार्गदर्शन पाने में हमारी कैसे सहायता कर सकता है?

# 12

# समय और ऋतु

**सभोपदेशक 3:1,11**

**[1] हर एक बात का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।**

**[11] उसने सब कुछ ऐसा बनाया कि अपने अपने समय पर वे सुंदर होते हैं; फिर उसने मनुष्यों के मन में अनादी-अनंत काल का ज्ञान उत्पन्न किया है, तौभी जो काम परमेश्वर ने किया है, वह आदि से अन्त तक मनुष्य बूझ नहीं सकता।**

**दानिय्येल 2:21**

**समयों और ऋतुओं को वह पलटता है; राजाओं का अस्त और उदय भी वही करता है; बुद्धिमानों को बुद्धि और समझवालों को समझ भी वही देता है।**

परमेश्वर योजना, व्यवस्था और अभिकल्पना का परमेश्वर है। परमेश्वर मनमाने या बेतरतीब ढंग से कार्य नहीं करता। परमेश्वर योजना के साथ काम करता है। वह अपनी योजनाओं को उनके निर्धारित समय में प्रगट करता है। समय आदर्श सिद्धांत है जिसके साथ हम काम करते हैं। हमारे लिए, हमारे पास भूत, वर्तमान और भविष्य है। परमेश्वर समय से बाहर जीता है। परमेश्वर अभी अनंतकाल में जीवित है। वह महान "मैं हूं" है। वह हमेशा अभी में रहता है। जब परमेश्वर हमारे क्षेत्र में काम करता है, तब वह *कैरॉस* समय के अनुसार बातों को प्रगट करता है जो उस किसी कार्य के लिए जिसे परमेश्वर ने चाहा है कि हो, सही समय है, समय में सही क्षण है (हमारे समय सिद्धांत में)।

परमेश्वर अक्सर समय से पहले हमारे जीवनों की बातों के विषय में बोलता है। फिर वह समय (*"Choronos"*, समय, अवधि या समयावधि) के साथ हमें तैयार करता है, हमें *"कैरॉस"* क्षण के निकट लाता है जब वह उन बातों को प्रगट करने लगता है जिनके विषय में उसने हमसे कुछ कहा है। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर ने उत्पत्ति 3:15 में अदन की वाटिका में स्त्री की संतान को भेजने के विषय में बातें की जो शैतान के सिर को

कुचलने वाला था। करीब 4000 वर्षों के उपरान्त यीशु मसीह इस संसार में आया। इतने लम्बे समय तक इंतज़ार क्यों करना पड़ा? एकमात्र कारण जो पवित्र शास्त्र बताता है वह यह है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को तब भेजा "जब समय (क्रोनॉस) पूरा हुआ" (गलातियों 4:4)। जब कालानुक्रमिक समय की पूर्णता हुई और हमें *"कैरॉस"* क्षण में लाया गया, तब परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।

हम परमेश्वर को अन्य उदाहरणों में समान रूप से कार्य करते हुए देखते हैं। जब *"Choronos"* समय ने अपनी दौड़ पूरी कर ली, ताकि वह 400 वर्षो का समय (*"Kairos"*) जिसके विषय में परमेश्वर ने कहा था, पूरा हो (प्रेरितों के काम 7:17), तब इस समय (*"Kairos"*, प्रेरितों के काम 7:20), मूसा का जन्म हुआ।

"कब", और अभी वाले क्षण का उल्लेख करते हुए हमारे समय (इब्रानी *"ayth"*) परमेश्वर के हाथों में हैं (भजनसंहिता 31:15)। परमेश्वर के मार्गों के इस पहलू को समझना यह जानने हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर क्या चाहता है कि हम करें। इससे हमें सही रीति से उसका मार्गदर्शन पाने में सहायता मिलती है।

परमेश्वर चाहता है कि हम पहचानने वाले लोग बनें—ऐसे लोग जो उसके परिप्रेक्ष्य से समयों और ऋृतुओं को समझते हैं और उसके बाद उसके अनुसार कार्य करते हैं। निम्नलिखित वचन पर विचार करें:

**1 इतिहास 12:32**
**और इस्साकारियों में से जो समय को पहचानते थे, कि इस्राएल को क्या करना उचित है, उनके प्रधान दो सौ थे; और उनके सब भाई उनकी आज्ञा में रहते थे।**

इस्साकार के पुत्रों के समान, जब हम समयों और ऋृतुओं को समझेंगे, तब हम जानेंगे कि हमें क्या करना है। अतः, परमेश्वर से मार्गदर्शन पाते समय, हमें उन समयों और ऋृतुओं पर ध्यान देना है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे लिए ठहराया है।

**सभोपदेशक 8:5,6**
**[5] जो आज्ञा को मानता है, वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है।**
**[6] क्योंकि हर एक विषय का समय और नियम होता है, यद्यपि मनुष्य का दुःख उसके लिये बहुत भारी होता है।**

ये वचन क्या कह रहे हैं इस पर विचार करेंः बुद्धिमान लोग कार्य करने के सही समय को जानते हैं, क्योंकि हर एक बात के लिए सही समय और उसे करने का सही तरीका होता है।

भले ही हम सही काम करते हैं, फिर भी यदि हम उसे गलत समय पर करते हैं, तो हम मुश्किल में पड़ सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, विवाह के विषय में सोचें। विवाह अच्छी बात है, परमेश्वर द्वारा तैयार की गई और ठहराई गई बात है, परंतु स्कूल/कॉलेज पूरा कर निकला हुआ जवान व्यक्ति, जिसके पास कोई नौकरी नहीं है, उपजीविका के कोई साधन नहीं है, जो परिपक्व नहीं है, "प्यार करने लगता है" और विवाह करने का निर्णय लेता है, तो इससे बहुत सारी परेशानियां उत्पन्न हो सकती हैं। अच्छा काम, जो सही समय पर किया जाता है, वह भी समस्याएं ला सकता है।

जीवन में आगे बढ़ते समय और परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज करते समय, हमें यह ध्यान में रखना है कि परमेश्वर चाहता है कि हम हमारे जीवनों के लिए उसके समयों और ऋृतुओं की समझ रखकर चलें।

इसलिए हमें परमेश्वर की ओर देखना है, केवल इसलिए नहीं कि वह क्या चाहता है कि हम करें, परंतु इसलिए भी कि वह कब चाहता है कि हम कुछ करें। हमें अपने आपको तैयार करना है, और उसमें कदम बढ़ाने हेतु सही समय का (उचित) इंतज़ार करना है।

कई तरीके हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमें सही समय प्रगट करेगा। यह हमें पीछे चर्चा किए गए कुछ पद्धतियों में से एक के द्वारा प्राप्त हो सकता है, उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर का वचन, अंदरूनी गवाहियां, पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ के द्वारा, आदि। ऐसा समय होता है जब हम

परिस्थितियों को—समयों के चिन्हों को पहचानते हैं—और उसके बाद समझते हैं कि सही समय आ गया है।

एक व्यवहारिक उदाहरण पर विचार करेंः

मान लीजिए कि आप कॉलेज के छात्र हैं और आपके हृदय में एक प्रेरणा प्राप्त होती है कि आप किसी विशिष्ट उद्योग में कारोबार शुरू करना है। जब आप इस विषय में प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर से मार्गदर्शन मांगते हैं, तो आप उन बातों का इंतज़ार करते हैं जिनके द्वारा वह आपसे बात करता है, जिनके विषय में अब तक हमने अध्ययन किया है। परमेश्वर आपके मन में यह डाल सकता है कि आप इसके लिए प्रशिक्षण प्राप्त करें और अपने आपको सुसज्जित करें। इसलिए आप आवश्यक अध्ययन पूरा करते हैं। जबकि कारोबार शुरू करने हेतु आप एक प्रबल इच्छा को महसूस करते हैं, फिर भी आपको यह महसूस होता है कि समय अभी आया नहीं है, और आप महसूस करते हैं कि परमेश्वर आपको मार्गदर्शन कर रहा है कि आप एक संस्था में कार्य करें ताकि आप अतिरिक्त कौशल प्राप्त कर सकें, नेटवर्क आदि स्थापित कर सकें। इस प्रकार, परमेश्वर आपको "क्रोनोस" में से ले जाता है, जो आपके लिए तैयारी का समय है, और वह आपको "कैरोस" में ला रहा है, कारोबार की कल्पना को शुरू करने के सही समय में। अतः आपकी कारोबार की कल्पना को इतने वर्षों तक तैयार करने के बाद, आपको महसूस होता है कि समय सही है। आप तैयार हैं और कारोबार शुरू करने के लिए बौद्धिक तौर पर, भावनात्मक तौर पर, आर्थिक तौर पर, व्यवसायिक तौर पर तैयार हैं। उसी तरह, "कैरोस" क्षण में, परमेश्वर बातों को एक साथ आयोजित करता है (इस विषय में और अगले पृष्ठ पर)। वह ऐसे लोगों को ला सकता है जो आपके साथ साझेदारी करने के लिए तैयार हैं। वह ऐसे लोगों को ला सकता है जो आपकी कारोबार की कल्पना में निवेश करने के लिए तैयार हैं। ये सारी बातें "कैरोस" क्षण में "अचानक" एक साथ आती हैं। इसलिए अब आप जानते हैं कि कारोबार शुरू करने हेतु परमेश्वर आपका मार्गदर्शन कर रहा है, जिसके विषय में आप अपने मन में कई वर्षों से सोच रहे हैं। आपके जीवन के लिए परमेश्वर के समयों और ऋतुओं को समझने से आपको उसके मार्गदर्शन और निर्देशन को समझने

और प्राप्त करने में सहायता मिलेगी (कृपया ध्यान दें: यह उदाहरण मात्र उन कई मार्गों में से एक है, मात्र एक ही मार्ग नहीं, कि परमेश्वर किसी को कारोबार आरम्भ करने हेतु मार्गदर्शन कर सकता है)।

## *दिसम्बर 2000: भारत को लौटना*

मैंने पहले बताया है कि किस प्रकार मेरी किशोरावस्था से ही मैंने यह जान लिया था कि परमेश्वर चाहता था कि मैं भारत के बैंगलोर में एक मज़बूत स्थानीय कलीसिया स्थापन करूं और वहां से राष्ट्र की सेवा करूं। उन प्रारम्भिक वर्षों से ही मैंने इसे अपने मन में रखा था, और परमेश्वर से निरंतर प्रार्थना करता और बिनती करता था कि इसमें कदम रखने का उसका सही समय कब होगा। जिन बातों से होकर मैं ग्रुज़र रहा था उन्हें मैंने इस महत्वपूर्ण जीवनकार्य के लिए तैयारी के रूप में देखा। 1998 के अंत में हमने परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त की कि वापस भारत जाने की तैयारी करने का समय आ गया है। इसलिए हमने अपने आप को तैयार किया और दिसम्बर 2000 में वापस चल पड़े। हमें भरोसा था कि यह परमेश्वर का समय है। यह परिवर्तन करने और इस कार्य में कदम रखने हेतु वह हमारे लिए सही समय था।

## *दिंसबर 2000: कम्पनी शुरू करने की इच्छा पूरी करना*

दूसरी अद्‌भुत बात तब हुई जब दिसम्बर 2000 में हम भारत में आए। शिकागो में जिस कम्पनी में मैं काम कर रहा था उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके लिए भारत से काम कर सकता हूं। मैंने उन्हें बताया कि बैंगलोर लौटने के बाद मैं उन्हें अपने निर्णय के विषय में बताऊंगा। जनवरी 2001 में, मैंने इस बात की पुष्टि की कि मैं उनके लिए काम करूंगा, और इस अवसर के साथ, मैं एक तकनीकी कारोबार शुरू कर पाया और उस समय से उन्नति करने लगा। परमेश्वर अत्यंत अनुग्रहकारी था, क्योंकि कई वर्षों तक मेरे मन में यह इच्छा थी कि मेरी अपनी तकनीकी कम्पनी हो जहां मैं बाइबल के सिद्धान्तों को अमल में लाऊं। मैं इस विषय में बहुत सोचा करता था और स्वप्न देखता था। और यहां पर जनवरी 2001 में यह इच्छा पूरी हो गई। यह सब सही समय में हुआ, परमेश्वर द्वारा नियुक्त समय में।

## यीशु पिता के कदमों में और समय में चला

समयों और ऋतुओं को समझने में हमारी सहायता करने हेतु हम देखते हैं कि प्रभु यीशु ने पिता के प्रति आज्ञाकारिता में चलते हुए, अपना संसारिक जीवन कैसे बिताया। हमारे पास कई उदाहरण हैं जहां हमें स्पष्ट रूप से बताया गया है कि यीशु पिता के समयों पर ध्यान देता था। यदि यीशु ऐसा करता था, तो हमें भी करना चाहिए।

### *उसकी आश्चर्यकर्म की सेवा आरम्भ करने में*

**यूहन्ना 2:4**
**यीषु ने उससे कहा, "हे महिला, मुझे तुझ से क्या काम? अभी मेरा समय नहीं आया।"**

### *यरूशलेम जाने में*

**यूहन्ना 7:6,8**
**6 तब यीषु ने उनसे कहा, "मेरा समय अभी तक नहीं आया; परंतु तुम्हारे लिए सब समय है।**
**8 "तुम पर्व में जाओ। मैं अभी इस पर्व में नहीं जाता, क्योंकि अभी तक मेरा समय पूरा नहीं हुआ।"**

### लाजर को जिलाने में

**यूहन्ना 11:5,6**
**5 और यीषु मार्था और उसकी बहन और लाजर से प्रेम रखता था।**
**6 इसलिए जब उसने सुना कि वह बीमार है, तो जिस स्थान पर वह था, वहां दो दिन और ठहर गया।**

### *क्रूस पर जाने में*

**यूहन्ना 12:23,27**
**23 उस पर यीषु ने उनसे कहा, "वह समय आ गया है, कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो।**
**27 "अब मेरा जी व्याकुल हो रहा है। इसलिए अब मैं क्या कहूं? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा? परंतु मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुंचा हूं।"**

**यूहन्ना 13:1**
**फसह के पर्व से पहले जब यीशु ने जान लिया, कि मेरी वह घड़ी आ पहुंची है कि जगत छोड़कर पिता के पास जाऊं, तो अपने लोगों से जो जगत में थे, जैसा पेम वह रखता था, अन्त तक वैसा ही पेम रखता रहा।**

अपने शिष्यों को सत्य और प्रकाशन प्रदान करने में:

**यूहन्ना 16:4**
**परंतु ये बातें मैंने इसलिए तुमसे कही कि जब उनका समय आए तो तुम्हें स्मरण आ जाए, कि मैंने तुमसे पहले ही कह दिया था, और मैंने आरंभ में तुमसे ये बातें इसलिए नहीं कही क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था।**

**यूहन्ना 16:25**
**"मैंने ये बातें तुमसे दृष्टान्तों में कही हैं, परंतु वह समय आता है कि मैं तुमसे दृष्टान्तों में और फिर नहीं कहूंगा, परंतु खोलकर तुम्हें पिता के विषय में बताऊंगा।**

### *अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने और महिमान्वित होने में*

**यूहन्ना 16:32**
**देखो, वह घड़ी आती है, वरन् आ पहुंची कि तुम सब तित्तर-बित्तर होकर अपना अपना मार्ग लोगे, और मुझे अकेला छोड़ दोगे, तौभी मैं अकेला नहीं, क्योंकि पिता मेरे साथ है।**

**यूहन्ना 17:1**
**यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखें आकाष की ओर उठाकर कहा, "हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।"**

## पूछें कि "क्या यह सही समय है?"

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के समयों और ऋतुओं को समझने से आपको उसका मार्गदर्शन पाने में और जीवन की विभिन्न ऋतुओं में उसका अनुसरण करने में सहायता प्राप्त होगी।

निर्णय या फैसला लेते समय, हमें अपने आप से जो प्रश्न पूछने हैं उनमें से एक है, "क्या इसे करने का यह सही समय और ऋतु है?" इस प्रश्न का जो उत्तर आपको प्राप्त होगा वह उसका मार्गदर्शन पाने में आपकी

सहायता करेगा। ए पी सी में हमारे द्वारा किए गए कई निर्णयों और उन निर्णयों में जिन्हें हम लेते हैं, समय का यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। अगस्त 2005 में, जब हम ने जाना कि समय सही है, तब हम ने अपने बाइबल कॉलेज का आरम्भ किया। हमारी मण्डली बाल अवस्था में ही थी, परंतु यह एक महत्वपूर्ण भूमिका थी जिसे निभाने के लिए हमें बुलाया गया था—परमेश्वर के राज्य के विस्तार के लिए लोगों को तैयार कर भेजना।

जिस तरह से हम स्थानीय तौर पर अपने अगुवों को तैयार करते हैं, उसमें समय महत्वपूर्ण है। हम उन्हें अगुवे की भूमिका देने की जल्दबाजी नहीं करते। हम एक स्तर पर जिम्मेदारियां देकर उन्हें अपने आप को साबित करने, सीखने, बढ़ने, परिपक्व होने का मौका देते और उसके बाद उन्हें अगले स्तर पर ले जाते हैं। हम सही समय पर लोगों को अगुवे के पद पर लाते हैं, बढ़ाते हैं और परिपक्व होने का अवसर देते हैं।

समय और ऋतु के विषय में अधिक जानकारी पाने हेतु कृपया ए पी सी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक पढ़ें: *"प्रत्येक उद्देश्य का समय।"*

## मनन

1. समय और ऋतुओं को पहचानने के द्वारा हमारे जीवनों में परमेश्वर के मार्गदर्शन को प्राप्त करने में हमें कैसे सहायता प्राप्त होगी?

2. आप यह कैसे पहचानने लगेंगे कि आप जो विशिष्ट कार्यवाही करने के विषय में सोच रहे हैं (कदम उठाना चाहते हैं) निर्णय लेना चाहते हैं उसके लिए सही समय आ चुका है?

# 13

# परिस्थितियां और ईश्वरीय आयोजन

अंतिम पद्धति या तरीका जिसके विषय में हम विचार करेंगे, जिसके द्वारा हम परमेश्वर के मार्गदर्शन को प्राप्त कर सकते हैं, यह पहचानने के द्वारा है कि वह हमारी परिस्थितियों और जीवन की स्थितियों में क्या आयोजित कर रहा है।

**2 इतिहास 16:9**
**देख, यहोवा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिये फिरती रहती है कि जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपनी सामर्थ दिखाए। तू ने यह काम मूर्खता से किया है, इसलिये अब से तू लड़ाइयों में फंसा रहेगा।**

परमेश्वर हमारी ओर से अपनी सामर्थ का उपयोग करता है। परमेश्वर हमारी परिस्थितियों और जीवन की परिस्थितियों में ऐसा करता है, जहां वह हमारे लिए ईश्वरीय रूप से बातों का आयोजन करता है। ये अवसर के असामान्य द्वार, लोगों की कृपा या उनके निकट पहुंच, नए सम्पर्क, और अन्य कई बातें हो सकती हैं जिन्हें परमेश्वर हमारे जीवन की परिस्थितियों में उत्पन्न कर सकता है। जब परमेश्वर ऐसी बातों को करता है, तब कोई उसे रोक नहीं सकता। सबसे अद्भुत बात, जिन्हें आंखों ने नहीं देखा, जिन्हें कानों ने नहीं सुना, जिन बातों की कल्पना लोगों ने कभी नहीं की, ऐसी बातें हमारी जीवन परिस्थितियों में घटित होती हैं।

**अय्यूब 42:2**
**मैं जानता हूं कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती।**

**प्रकाशितवाक्य 3:7**
**और फिलेदिलफिया की कलीसिया के दूत को यह लिख, कि जो पवित्र और सत्य है, और जो दाऊद की कुंजी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं कर सकता और बन्द किए हुए को कोई खोल नहीं सकता, वह यह कहता है,**

इसलिए हमारी जीवन परिस्थितियों में घटित होने वाले ईश्वरीय आयोजनों पर हमें ध्यान देना है और यथार्थ रूप से उन्हें उत्तर देना है।

उदाहरण के तौर पर, अपने व्यावसायिक करियर के विषय में प्रार्थना करते समय, और परमेश्वर से निर्देशन मांगते समय, अपनी भूमिका निभाएं। आप आवश्यक कौशल्यों का जिनकी आपको ज़रूरत है, विकास करें। नौकरी ढूंढ़ें, साक्षात्कार दें, आदि। आप इन बातों को कर सकते हैं। आप परमेश्वर पर भरोसा रखें कि परमेश्वर सही नौकरी और सही पद की ओर आपके कदमों को बढ़ाएगा ताकि आपकी उन्नति और प्रगति हो। अर्थात, कई भिन्न परिदृश्य हैं जो प्रगट हो सकते हैं, परंतु सरल और आसान मार्ग पर विचार करें। आपको मात्र एक नौकरी का प्रस्ताव प्राप्त होता है और यह एक बड़ा अवसर है, और ऐसा कुछ है जो आपके कौशल्यों और योग्यताओं के साथ अनुरूप होता है। आप अन्य दृढ़िकरणों की तलाश में होते हैं जिनके विषय में हम ने पहले विचार किया (उदाहरण, आत्मा की अंदरूनी आवाज़, नवीनीकृत मन, आदि)। अधिकांश मामलों में, यह सच्चाई कि यह अवसर आपके सामने रखा गया है, आपके लिए परमेश्वर का मार्गदर्शन है कि आपको इसी दिशा में आगे बढ़ना है। जब तक कि इस नौकरी को न लेने के कोई निश्चित कारण न हों (उदाहरण के तौर पर, आपको अनैतिक कार्य करने की ज़रूरत है, या आपकी आत्मा में स्पष्ट गवाही होती है कि आपको यह नौकरी नहीं लेना है, या परमेश्वर आपको स्वप्न देता है कि आपको यह नौकरी नहीं करना है), तब तक आप इस नौकरी में आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए, इस मामले में, उन परिस्थितियों के माध्यम से जिन्हें परमेश्वर ने आपके लिए आयोजित किया है, परमेश्वर ने आपके कदमों को दिशा प्रदान की है। आपने जीवन की स्थितियों और परिस्थितियों के ईश्वरीय आयोजन के द्वारा परमेश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त किया है।

## जीवन की परिस्थितियों में कार्य करने वाले अन्य कारकों पर ध्यान दें

एक महत्वपूर्ण बात जिस पर ध्यान देना है वह यह है कि हमारी परिस्थितियों और स्थितियों में होने वाली प्रत्येक बात परमेश्वर का कार्य नहीं है। हम इस

प्रकार के कथनों को सुनते हैं "परमेश्वर नियंत्रण रखता है," "यदि परमेश्वर की इच्छा रही तो होगा," आदि। और लोग उसका उपयोग इस अर्थ से करते हैं कि जीवन की परिस्थितियों में जो कुछ होता है वह परमेश्वर की ओर से है। परंतु यह सच नहीं है। शैतान है जो कार्य कर रहा है, बाधा डाल रहा है, परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोध कर रहा है, उपद्रव मचा रहा है, आदि। इसीलिए हमसे कहा गया है कि हम शैतान का सामना करें और संसार पर जय प्राप्त करें। इसीलिए हमें आंधियों से कहना है कि वे शांत हो जाएं, और पर्वतों से कि वे हट जाएं। आंधियां और पर्वत वहां बाधाओं के रूप में हैं और उन्हें हमें परमेश्वर की इच्छा के रूप में ग्रहण नहीं करना चाहिए। उन्हें परमेश्वर की इच्छा के प्रति बाधाओं के रूप में देखा जाना चाहिए और इस कारण विश्वास के द्वारा उनका सामना करना है। उसके बाद अन्य लोग हैं और हमारे अपने चुनाव और निर्णय हैं जो भिन्न परिस्थितियों को उत्पन्न करते हैं। उदाहरण के तौर पर, जो कुछ हम बोते हैं उसे काटेंगे, या अलग शब्दों में, हम अपने चुनावों और कार्यों के परिणामों का सामना करेंगे। इन परिणामों के लिए परमेश्वर को या शैतान को या लोगों को दोष नहीं दिया जा सकता। ये हमारे चुनावों के परिणाम हैं और हमें उसके लिए ज़िम्मेदारी स्वीकार करना है।

जबकि हमें यह एहसास है कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों में और हालातों में काम करेगा, फिर भी हमारे मार्ग में आने वाली प्रत्येक बात को हमें परमेश्वर की ओर से मानकर स्वीकार नहीं करना चाहिए। हमें बुद्धि के साथ पहचानना और कार्य करना है। परमेश्वर की ओर से जो है उसे स्वीकार करें, जो कुछ शत्रु की ओर से है उसका सामना करें और उस पर जय प्राप्त करें।

## आपकी ऊन आपको धोखा दे सकती है

**न्यायियों 6:36-40**

**36 तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुड़ाएगा,**

**37 तो सुन, मैं एक भेड़ी की ऊन खलिहान में रखूंगा, और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े, और उसे छोड़ सारी भूमि सूखी रह जाए, तो मैं जान लूंगा कि तू मेरे द्वारा छुड़ाएगा।**

**38 और ऐसा ही हुआ। इसलिये जब उसने बिहान को सवेरे उठकर उस ऊन को दबाकर उसमें से ओस निचोडी, तब एक कटोरा भर गया।**
**39 फिर गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि मैं एक बार फिर कहूं तो तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के; मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूं, अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रहे, और सारी भूमि पर ओस पड़े।**
**40 उस रात को परमेश्वर ने ऐसा ही किया; अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रह गई, और सारी भूमि पर ओस पड़ी।**

पुराने नियम में हमारे पास एक घटना है जहां पर गिदोन ने परमेश्वर के आगे ऊन रखी, ताकि इस्राएल के मुक्तिदाता के रूप में उसकी बुलाहट के विषय में परमेश्वर से पुष्टि प्राप्त कर सके। परमेश्वर ने उसकी मान ली और उसके द्वारा उसकी अगुवाई की। परमेश्वर यह फिर कर सकता है, परंतु हम आग्रह के साथ विश्वासियों से अनुरोध करते हैं कि ऊन रखने का प्रयास न करें। उस समय गिदोन के पास अन्य विकल्प नहीं थे। परंतु, हम जो नए नियम के विश्वासी हैं हमारे पास वे प्राथमिक मार्ग हैं जिनके द्वारा परमेश्वर हमारी अगुवाई और मार्गदर्शन करता है, जो हैं उसका लिखित वचन और पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही। नए नियम के विश्वासियों को, परमेश्वर ने इसलिए बुलाया है कि वे उसके वचन के द्वारा निर्देश प्राप्त करें (2 तीमुथियुस 3:16,17) और उसके आत्मा की सुनना और उसकी अगुवाई में चलना सीखें (रोमियों 8:14)। हमें इन बातों को अनदेखा करते हुए ऊन रखने का प्रयास नहीं करना चाहिए। याद रखें, आपकी ऊन आपको धोखा दे सकती है। इसलिए सावधान रहें।

## चिट्ठियां डालना

**प्रेरितों के काम 1:24-26**
**24 और यह कहकर प्रार्थना की, "हे प्रभु, आप जो सब के मन को जानते हैं, यह प्रगट कीजिए कि इन दोनों में से आपने किसको चुना है,**
**25 "कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को गया।"**
**26 तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियां डाली, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, इसलिए वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।**

यीशु के स्वर्गारोहण के बाद, प्रेरित यहूदा का स्थान लेने के लिए एक व्यक्ति को ढूंढ़ना चाहते थे। इसलिए उन्होंने दो लोगों को चुना जो यहूदा का स्थान लेने हेतु आवश्यक योग्यताओं को पूरा करते थे, और उन्होंने चिट्ठियां डाली। उन्होंने परमेश्वर से बिनती की कि उस चुनाव में वह उनका मार्गदर्शन करे, और बारह प्रेरितों के साथ सहभागी होने के लिए उन्होंने मतिय्याह के नाम की चिट्ठी निकाली।

परंतु, यह स्मरण में रखें कि परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने हेतु चिट्ठियां डालने की यह प्रथा पिन्तेकुस्त के दिन से पहले थी। प्रेरित अब तक पवित्र आत्मा के कार्य और गतिविधि से परिचित नहीं थे।

बाद में हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में देखते हैं कि जब महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाने थे, तब वे पवित्र आत्मा की अगुवाई पर निर्भर हुए।

इन दो उदाहरणों पर विचार करें।

प्रेरितों के काम 13 में, प्रेरित की सेवकाई में कार्य करने हेतु बरनबास और शाऊल को बुलाहट देने वाला पवित्र आत्मा था। अंताकिया के अगुवों ने इसके लिए चिट्ठियां नहीं डाली।

**प्रेरितों के काम 13:2**
**जब वे उपवास के साथ प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया।"**

यरूशलेम की महत्वपूर्ण सभा में, जब प्रेरित और प्राचीनों ने अपने निर्णय लिए, तब याकूब ने पवित्र शास्त्र से उद्धरण लिया (आमोस 9:11-13) और कहा कि उनका निर्णय पवित्र आत्मा की ओर से था। यहां पर भी उन्होंने चिट्ठियां नहीं डाली।

**प्रेरितों के काम 15:28**
**पवित्र आत्मा को और हमको ठीक जान पड़ा, कि इन आवष्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें;**

जो बात हम यहां कहना चाहते हैं वह यह है कि नए नियम के विश्वासियों के रूप में महत्वपूर्ण निर्णय लेने हेतु हम चिट्ठियां नहीं डालते। जिस प्रकार हम ऊन नहीं रखते, उसी प्रकार हम चिट्ठियां भी नहीं डालते, परंतु पवित्र शास्त्र के वचनों पर और पवित्र आत्मा की अगुवाई पर निर्भर रहते हैं। अन्य गौन तरीके भी हैं जिनका हमने इस पुस्तक में उल्लेख किया है जिनके द्वारा परमेश्वर हमारी अगुवाई करता है, परंतु उन्हें परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के साथ परखा जाना चाहिए।

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के निर्देशन को समझने हेतु जब आप जीवन की परिस्थितियों और हालातों पर विचार करते हैं, तो कुछ बातों को याद रखें जिन्हें यहां प्रस्तुत किया गया है:

## हर बंद दरवाज़े का अर्थ "ना" नहीं होता

कुछ दरवाजे बंद हैं, क्योंकि आपको उन्हें "खटखटाने" की आवश्यकता है, शायद "खटखटाकर" खोल देने की भी।

**मत्ती 7:7,8**
**7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा।**
**8 क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाएगा।**

कुछ दरवाजे केवल इसलिए बंद होते हैं ताकि आपको सही दरवाजे के पास भेजा जाए जो आपके लिए सही स्थान खोलेंगे। बंद दरवाज़े का अर्थ यह नहीं है कि जिस उद्देश्य के लिए आप प्रयास कर रहे हैं वह आपके लिए नहीं है। उसका अर्थ मात्र यह है कि उस उद्देश्य को भिन्न स्थान से प्राप्त करने की ज़रूरत है।

जब युसूफ और मरियम बेथलेहेम को आए, तब उनके लिए सराय में एक भी कमरा खाली नहीं था। सराय में कमरे का न होना किसी रीति से इस सच्चाई का इन्कार नहीं करता था कि उसने अपने गर्भ में परमेश्वर के

पुत्र को रखा है, वह परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ से गर्भवती है। यीशु का जन्म ऐसे स्थान में हुआ जहां पशुओं को रखा जाता था और उसे गाय की चरनी में रखा गया (लूका 2:7), परंतु इसमें से किसी भी बात ने इस विषय के महत्व को कम नहीं किया कि वह कौन है और न ही मानवजाति पर उसके प्रभाव को कम किया।

केवल इस बात को स्मरण रखें कि बंद दरवाज़े का अर्थ हमेशा 'ना' नहीं होता। आपको पहचानना है कि परमेश्वर क्या चाहता है और उसका अनुसरण करना है।

## प्रत्येक विलम्ब इन्कार नहीं है

कभी-कभी हम विशिष्ट समय में किसी बात के होने की अपेक्षा करते हैं और यदि हमारे द्वारा सोचे या कल्पना किए गए समय में कुछ घटित नहीं होता, तो हम निराश होकर छोड़ देने की प्रवृत्ति रखते हैं। अक्सर हम विलम्ब को इन्कार करार देते हैं। यह ऐसा नहीं है। जैसा कि हमने पिछले अध्याय में सीखा, परमेश्वर नियुक्त समय में बातों को प्रगट करता है और हमें परमेश्वर के 'कैरोस' समय के लिए इन्तज़ार करना चाहिए।

युसूफ के विषय में सोचें। जब वह नवयुवक था, तब उसे स्वप्न दिए गए कि परमेश्वर उसके जीवन के द्वारा क्या करने वाला है। समय बीतता गया। उसके लिए परिस्थितियां और मुश्किल होती प्रतीत हो रही थी। उसे गुलाम के रूप में मिस्र में बेचा और भेजा गया, और उसके बाद उस पर झूठा आरोप लगाकर उसे बंदीगृह में डाल दिया गया। क्या इसका अर्थ यह था कि उसके जीवन के लिए परमेश्वर का उद्देश्य कभी पूरा नहीं होगा? नहीं! परमेश्वर वास्तव में बातों का आयोजन कर रहा था, और उसके बंदीगृह में आने के द्वारा भी वह कार्य कर रहा था। बंदीगृह में ही उसका वचन (स्वप्नों की परिभाषा करना) मुक्त हुआ और पूरा हुआ। और अचानक, परिस्थितियां बदल गई और वह अपनी आंखों के सामने परमेश्वर की योजनाओं को प्रगट होते हुए देखने लगा। इस पूरे समय में, परमेश्वर युसूफ को परख रहा था (जिस प्रकार धातु को परखा और शुद्ध किया जाता है) और उसे उसके जीवन के कार्य के लिए तैयार कर रहा था।

**भजनसंहिता 105:17-22**

**17 उसने यूसुफ नाम एक पुरुष को उनसे पहले भेजा था, जो दास होने के लिये बेचा गया था।**

**18 लोगों ने उसके पैरों में बेड़ियां डालकर उसे दुःख दिया; वह लोहे की सांकलों से जकड़ा गया;**

**19 जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता रहा।**

**20 तब राजा ने दूत भेजकर उसे निकलवा लिया, और देष देष के लोगों के स्वामी ने उसके बन्धन खुलवाए;**

**21 उसने उसको अपने भवन का प्रधान और अपनी पूरी सम्पत्ति का अधिकारी ठहराया,**

**22 कि वह अपने हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार कैद करे और पुरनियों को ज्ञान सिखाए।**

**23 फिर इस्राएल मिस्र में आया; और याकूब हाम के देष में परदेषी रहा।**

अतः जब हम अपनी परिस्थितियों और हालातों का विचार करते हैं, तब हमें सावधान रहना है कि हम विलम्बों का अर्थ इन्कार के रूप में न लें।

## बंद द्वारों को धक्का देकर खोलना और विलम्ब में धीरज धरना

इसलिए, जब हम हमारे जीवन की परिस्थितियों में और उसके ईश्वरीय आयोजनों में उसके हाथ को कार्य करते हुए देखते हैं और पहचानते हैं, और उसके द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन को पहचानते और प्राप्त करते हैं, तब हमें सावधान रहना चाहिए।

(अ) प्रत्येक बंद दरवाजे को 'ना' के रूप में स्वीकार न करें। कुछ द्वारों को धक्का देकर खोलने की ज़रूरत होती है।

(आ) प्रत्येक विलम्ब को इन्कार न समझें। कभी-कभी हमें समय के साथ इन्तज़ार करने की ज़रूरत होती है।

(इ) फिर भी, होने वाली प्रत्येक बात में बहुत अधिक शामिल न हों, भयभीत न हों। अंधश्रद्धा या अवास्तविक विश्वास न रखें।

हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि परमेश्वर किसी बात का कब आयोजन कर रहा है, और कब नहीं कर रहा है। पहचानें की परमेश्वर कब

कार्य कर रहा है। आपको उसके उद्देश्यों में ले जाने के उसके मार्ग के रूप में उसे स्वीकार करें। वह आपके लिए जो आयोजन करता है उसमें प्रवेश करें।

स्थानीय कलीसिया के रूप में हमारी यात्रा में ऐसे समय कई बार आए जब परमेश्वर ने हमें परिस्थितियों और ईश्वरीय आयोजनों के माध्यम से मार्गदर्शन किया है। शायद कोई हमारे मार्ग में आया और उसने हमें कोई जानकारी दी; हमारे लिए असामान्य द्वार खोल दिया आदि। यहां पर कुछ उदाहरण हैंः

## *मई/जून 2002: ए पी सी मैंगलोर का आरम्भ*

नवंबर 2001 में डॉ. रणजीत पीटर ने बैंगलोर में हमें भेंट दी और मैंगलोर के बाहर डेरालेकेट्टा नामक स्थान का उल्लेख किया। यहां पर कई कॉलेजेस थे, और उन्होंने सुझाया कि हम यहां पर छात्रों के लिए एक स्थानीय कलीसिया शुरू करें। हम ने यह बात अपने मन में रख ली। ए.पी.सी. बैंगलोर अभी बहुत छोटा था, उसे शुरू होकर एक साल भी नहीं हुआ था। 2002 के प्रारम्भ में हममें से चार लोग डेरालेकेट्टा गए और उस जगह की छानबीन की। हमने एक विडियो सिनेरामा का एक छोटा हॉल भी देखा जिसमें करीब 50 लोग बैठ सकते थे। इस हॉल में वे विडियो मूव्ही बनाया करते थे। हमने मालिक से पूछा कि क्या वे वह जगह हमें शनिवार के दिन म्यूज़िक कॉन्सर्ट के लिए (संगीत उत्सव), और उसके बाद हर रविवार दोपहर 1 बजे उनका पहला शो शुरू होने से पहले, 10:30 से दोपहर 12:30 बजे तक किराए पर देंगे। उन्होंने हां कहा। इसलिए हमने एक व्यक्ति द्वारा संगीत उत्सव का आयोजन किया। शनिवार, जून 8 को मैंगलोर के डेरालेकेट्टा के किराए पर लिए गए इस छोटे से मूव्ही हॉल में जॉर्जी सैम ने संगीत उत्सव में अगुवाई की। शायद करीब 20 लोगों ने इस संगीत उत्सव में भाग लिया। उसके बाद, अगले दिन, रविवार, जून 2002 को ऑल पीपल्स चर्च, मैंगलोर की पहली आराधना हमने ली (प्रारम्भ में इसे ए.पी.सी. डेरालेकेट्टा कहा जाता था।)। इन वर्षों में इस कलीसिया रोपन के द्वारा कई कॉलेज विद्यार्थियों के जीवनों को परमेश्वर ने सामर्थ के साथ

छू लिया, समृद्ध बनाया और बदल दिया है। आज, मैंगलोर शहर में स्थित यह स्थानीय कलीसिया एक सम्पन्न मण्डली है।

## *जुलाई 2002: ए.पी.सी. नेपाली चर्च का आरम्भ*

जुलाई 2002 में, करीब 10 नेपाली लोगों का दल मेरे पास आया कि मैं हर मंगलवार दोपहर 4 से 5:30 बजे तक आराधना में उनकी अगुवाई करूं और उन्हें वचन की शिक्षा दूं। नेपाली लोगों के मध्य सेवा करने की या नेपाली मण्डली आरम्भ करने की हमारी योजना नहीं थी। परंतु इस छोटे और साधारण आरम्भ के साथ, जूलाई 2002 में ऑल पीपल्स चर्च-नेपाली संगति का आरम्भ हुआ। परमेश्वर विश्वासयोग्य रहा और नेपाली लोगों के मध्य सेवा करने में सहायता करने हेतु उसने हमें लोग दिए। नेपाली मण्डली बढ़ती गई और पिछले वर्षों में सैंकड़ों नेपाली लोगों को सेवा प्रदान की गई। सन 2017 में, हम ने उन्हें उनकी अपनी स्थानीय कलीसिया आरम्भ करने हेतु मुक्त कर दिया और विश्वासियों का अद्‌भुत समुदाय स्थापित किया।

## *जून 2008: कैटलिस्ट का आरम्भ*

मार्च/अप्रैल में किसी समय रायन इंटरनैशनल स्कूल और ज़ेवियर ग्रूप ऑफ इन्स्टिट्यूशन्स के अध्यक्ष डॉ. ए. एफ. पिन्टो ने मुझ से भेंट की और मुझ से पूछा कि क्या रायन इंटरनैशनल, येलाहन्का के छात्रों के लिए ए पी सी पवित्र शास्त्र की कक्षाएं ले सकता है। मैंने ऐसा करने हेतु सहमति जताई, जबकि हम नहीं जानते थे कि हम यह कैसे करेंगे, न ही हमारे पास सही लोग उपलब्ध थे। परंतु पा. सेलिना मकवाना से साक्षात्कार किया गया और वह जून 2008 में हमारे साथ शामिल हो गई और तुरंत ही कैटलिस्ट का, स्कूलों में सुसमाचार सेवा का आरम्भ हुआ। हम ने रायन इंटरनैशनल, येलाहन्का से आरम्भ किया और अन्य स्कूलों में हमारा विस्तार हो गया।

## *जून 2012: गॉड टी. व्ही. (आशिया)*

जून 2012 में, हमें चेन्नई में गॉड टी. व्ही. की ओर से बुलाया गया और गॉड टी. व्ही. (एशिया) पर साप्ताहिक वैतनिक कार्यक्रम का संचालन

करने हेतु निमंत्रित किया गया। बैंगलोर शहर में ए पी सी सब से बड़ी कलीसिया नहीं थी और फिर भी हमें यह विशेष आशीष प्राप्त हुई कि हमें यह निमंत्रण दिया जाए। हमारे पास आवश्यक धन था और हमारे पास कुछ लोग थे जिन्होंने इस कार्यक्रम को चलाने हेतु हमारी सहायता की, अतः हम ने इसमें अपना कदम बढ़ाया।

## *अक्टूबर 2012: अल्पकालीन बाइबल पाठ्यक्रम का आरम्भ*

2011 में, इम्मानुएल हॉस्पिटल एसोसिएशन (ई एच ए) के डॉ. अशोक चॅको यह देखने के लिए ए.पी.सी. के साथ सम्पर्क किया कि क्या ए पी सी आत्मिक रीति से उनके अस्पतालों की सेवा करने में सहायता करेगी। नवम्बर 2011 में, मैंने चाम्पा (छत्तीसगढ़) के ई एच ए मसीही अस्पताल और छत्तरपूर (मध्यप्रदेश़) के ई एच ए मसीही अस्पताल को भेंट दी। चाम्पा (छत्तीसगढ़) के ई एच ए मसीही अस्पताल के निदेशक मि. जोन विल्स ने स्थानीय पासबानों के साथ एक सभा का आयोजन किया। उन्होंने अपने लोगों को तैयार करने हेतु अल्पकालीन बाइबल पाठ्यक्रम आरम्भ करने की इच्छा जाहीर की। अतः अक्टूबर 2012 में, ए पी सी ने चाम्पा (छत्तीसगढ़) के ई एच ए मसीही अस्पताल में अल्पकालीन बाइबल पाठ्यक्रम का आयोजन किया, ताकि उन पासबानों और सेवकाई में कार्यरत अगुवों को जिन्होंने पूर्व प्रशिक्षण नहीं पाया था, उनकी सेवकाई के क्षेत्रों में प्रभाव डालने हेतु तैयार करें। हम ने दो वर्षों तक (2012-2013) ई एच ए, चाम्पा में इसका संचालन किया। इसके साथ ही ए पी सी के अल्पकालीन बाइबल पाठ्यक्रम का आरम्भ हुआ और हम भारत के अन्य भागों में भी इसका संचालन कर पाए हैं। हम हर साल वाराणसी (2015 से) में ऐसा कर रहे हैं और पिछले वर्षों में कई लोगों को प्रशिक्षित कर पाए हैं।

## मनन

1. क्या आप जीवन में एक या दो अनुभवों को स्मरण कर सकते हैं, जहां आप परमेश्वर की खोज में थे कि वह आपका मार्गदर्शन करे और उसने आपकी परिस्थितियों को और जीवन के हालातों को आयोजित कर ऐसे किया?

2. आप किन मार्गदर्शक निर्देशों का उपयोग करेंगे जिससे हमें यह पहचानने में सहायता मिलेगी कि परमेश्वर हमारे लिए बातों को आयोजित कर रहा है? (इसके विपरीत जब शैतान हमारे लिए “जाल” बिछाता है।)

3. आप यह कैसे पहचानेंगे कि एक विशिष्ट परिस्थिति में आप “जिस बंद दरवाज़े” का सामना कर रहे हैं उसे आपको खटखटाकर खोल देना है, उससे दूर भाग नहीं जाना है?

# 14

# सारी बातों को एक साथ जोड़कर

इस अंतिम अध्याय में हम "सारी बातों को एक साथ जोड़ते हैं" और कुछ व्यवहारिक अंतर्दृष्टियां बांटते हैं जो परमेश्वर के मार्गदर्शन और निर्देशन में अपने जीवनों को अनुशासित करते समय सहायक होगी।

हमें परमेश्वर के सामने विनम्रता के साथ चलना है, निरंतर उसके निर्देश को प्राप्त करने का प्रयास करना है, उसकी सुनना है और जो कुछ वह हमें करने हेतु कहता है उसका पालन करना है।

## एक से अधिक मार्ग

**अय्यूब 33:14-16**
**14 क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है, परंतु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते।**
**15 स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय,**
**16 तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है।**

अक्सर, जब परमेश्वर बातें करता है, तो वह ऐसा हमारे साथ अनेकों तरीकों से करता है। इसका अर्थ यह है कि वह उन ग्यारह मार्गों के किसी भी संयोग के साथ हमारे साथ बातें कर रहा है जिनका हमने वर्णन किया। यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि परमेश्वर विभिन्न रीतियों से जो कुछ बोल रहा है उन्हें "समझें" (इब्रानी शब्द जिसका अर्थ है जांच-पड़ताल करने हेतु चक्कर लगाना, सर्वेक्षण करना, देखना), इन्हें पहचानें और हमारे जीवनों के लिए उसका मार्गदर्शन और निर्देशन पाने हेतु उन सारी बातों को एक साथ जोड़ें।

## आपकी अगुवाई को परखना और प्रमाणित करना

हमने ग्यारह तरीकों पर विचार किया है जिनके द्वारा हम अपने जीवनों के लिए मार्गदर्शन और निर्देशन प्राप्त कर सकते हैं: (1) वचन, (2) उसके

आत्मा की अंदरूनी गवाही, (3) पवित्र आत्मा की आवाज़, (4) पवित्र आत्मा के वरदान, (5) स्वप्न और दर्शन, (6) भविष्यद्वाणियां, (7) स्वर्गदूत, (8) दिव्य परामर्श, (9) नवीनीकृत बृद्धि या मन, (10) समय और ऋतु, (11) परिस्थितियां और ईश्वरीय आयोजन। मात्र इन मार्गों के द्वारा परमेश्वर हमसे बातचीत कर हमारा मार्गदर्शन करे। इसलिए हम निश्चित रूप से उसे सीमित या प्रतिबंधित नहीं कर रहे हैं। बल्कि, हम इनके अभ्यस्त हो गए हैं। परमेश्वर ताज़गीपूर्ण नए तरीकों से बोल सकता है और कार्य कर सकता है।

परंतु, हम परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने के प्राथमिक मार्गों के रूप में प्रथम तीन पर विचार करते हैंः (1) वचन, (2) उसके आत्मा की अंदरूनी आवाज़, और (3) पवित्र आत्मा की आवाज़। हम इनका उल्लेख 'प्राथमिक' के रूप में करते हैं क्योंकि वे विश्वसनीय हैं। बाकी आठ, का उल्लेख हम गौन के रूप में करते हैं, और उन्हें परमेश्वर के वचन के साथ और पवित्र आत्मा की अंदरूनी आवाज़ के साथ जांचने, प्रमाणित करने, और परखने की ज़रूरत है।

जब आप किसी भी गौन मार्ग से मार्गदर्शन प्राप्त करते हैं, तो हमेशा उसकी जांच करने पर ध्यान दें। जल्दबाजी न करें और परमेश्वर के वचन के साथ और पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही के साथ न परखते हुए या प्रमाणित न करते हुए उसे करने का प्रयास न करें।

अपने आप से दो सरल प्रश्न पूछेंः

1. क्या जो करने की ओर मैं अगुवाई महसूस करता हूं वह परमेश्वर के वचन के साथ मेल और सामंजस्य रखता है? यदि उस विषय में कोई स्पष्ट वचन नहीं है, तो आप जांच सकते हैं कि जिसे करने हेतु आप अगुवाई महसूस करते हैं वह परमेश्वर के स्वभव और चरित्र के अनुरूप हो।
2. इस विषय में पवित्र आत्मा मेरी आत्मा में क्या गवाही दे रहा है (बोल रहा है)? क्या इस विषय में मैं उसकी शान्ति और उसकी सम्मति को महसूस करता हूं?

## दो या तीन गवाह

**2 कुरिन्थियों 13:1**
**अब तीसरी बार तुम्हारे पास आता हूं। दो या तीन गवाहों के मुंह से हर एक बात ठहराई जाएगी।**

कुरिन्थुस की स्थानीय कलीसिया के मामलों को सम्बोधित करते समय प्रेरित पौलुस पुराने नियम से संदर्भ लेता है (व्यवस्थाविवरण 19:15)। यह एक सत्य है जिसे हम परमेश्वर की ओर से प्राप्त मार्गदर्शन को प्रमाणित करते और जांचते समय लागू कर सकते हैं यदि हम उसे ऊपर उल्लेख किए गए किसी भी गौन (पिछले आठ) माध्यमों से प्राप्त करते हैं। हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हमने जो मार्गदर्शन प्राप्त किया है उसकी पुष्टि करने वाले दो या तीन गवाह हों।

उदाहरण के तौर पर, यदि आपका निर्णय परमेश्वर के वचन में दिए गए किसी विशेष निर्देश पर आधारित है, तो आप आत्मविश्वास के साथ उस विषय में कदम बढ़ा सकते हैं। अन्य परिस्थितियों में आपके लिण परमेश्वर का संजीवित वचन तथा पवित्र आत्मा की अंदरूनी गवाही हो सकती है। फिर एक बार, ऐसी परिस्थिति में प्रभु द्वारा आपको जो मार्गदर्शन दिया गया है उसके अनुसार करने के लिए आप आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकते हैं।

उस परिस्थिति का विचार करें जहां किसी ने आपके लिए भविष्यद्वाणी की जिसका स्वरूप निदेशात्मक था। शायद वह आपको बता रहा था कि आपको किसी विशिष्ट शहर में जाकर कोई खास कारोबार शुरू करना है। आपका उत्तर भविष्यद्वाणी के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना, उस भविष्यद्वाणी को लिख लेना, और उसके बाद यह परखना है कि क्या यह प्रभु की ओर से है। तुरंत अपना सामान बांधकर उस शहर के लिए निकल मत पड़िए। नहीं। ऐसा मत कीजिए। भविष्यद्वाणी को परखना आवश्यक है (1 थिस्सलुनीकियों 5:20-22) और आपको उसके लिए कदम बढ़ाने से पूर्व उसके अनुसार करने का समय जानने की तथा आवश्यक तैयारी करने की ज़रूरत है। भविष्यद्वाणी को परखते समय आप देखना चाहेंगे कि पवित्र आत्मा आपकी आत्मा में आपको क्या गवाही देता है (कहता है)।

आप भविष्यद्वाणी के विषय में ईश्वरीय सलाह प्राप्त करने की इच्छा रखेंगे। आप अपेक्षा करेंगे कि परमेश्वर संजीवित वचन के माध्यम से आपसे बातें करे। आप यह देखने के लिए भी अपने हृदय को खोलकर रखेंगे कि क्या परमेश्वर इसी बात के विषय में अन्य माध्यमों से भी आपसे बात करता है या नहीं, उदाहरण के तौर पर, स्वप्नों, दर्शनों, दूसरे व्यक्ति के द्वारा जो इस विषय में पहले से नहीं जानता, भविष्यद्वाणी के द्वारा, स्वर्गदूतों के द्वारा, आदि। जब आपको यह आश्वासन मिल जाता है कि परमेश्वर चाहता है कि आप यह करें, तब आप उसके लिए परमेश्वर के समय की खोज करेंगे। आप उसके लिए अपने आपको तैयार करने की प्रक्रिया भी आरम्भ करेंगे। आप निरीक्षण करेंगे कि आपकी परिस्थितियों में परमेश्वर क्या समन्वित कर रहा है और आप उन अवसरों को थाम लेंगे जो वह आपके जीवन में ला रहा है। अतः जब हम इन सारी बातों को एक साथ जोड़ते हैं, तब हम बल और आत्मविश्वास के साथ चलते हुए हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराई गई योजनाओं और उद्देश्यों में प्रवेश करते हैं।

## हम सभी सीख रहे हैं, इसलिए हम गलतियां करेंगे

**यूहन्ना 10:4,5,27**

**4 और जब वह अपनी सब भेड़ों को बाहर निकाल लेता है, तो उनके आगे आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे पीछे हो लेती हैं; क्योंकि वे उसका शब्द पहचानती हैं।**
**5 परंतु वे पराये के पीछे नहीं जाएंगी, परंतु उससे भागेंगी, क्योंकि वे परायों का शब्द नहीं पहचानती।**
**27 मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं।**

परमेश्वर से मार्गदर्शन प्राप्त करने की मेरी यात्रा सिद्ध नहीं रही है। परंतु प्रत्येक गलती सीखने का एक अवसर है। परमेश्वर की सुनते समय जो गलतियां होती है उसमें से हम कुछ अच्छा ही प्राप्त करते हैं।

हमारी चुनौती यह है कि हम हमारे अपने प्राणों की आवाज़ से (स्वयं, इच्छाएं), संसार की आवाज़ से, और अजनबी की आवाज़ अर्थात शैतान की आवाज़ से भिन्न अपने चरवाहे की आवाज़ पहचानें। शैतान चालाक है। वह अपनी आवाज़ स्वयं प्रभु की आवाज़ के समान बनाता है, ताकि हमारा ध्यान

भटकाए। परंतु परमेश्वर की भेड़ होने के नाते, हमें उसकी आवाज़ पहचानना सीखना है। ताकि हम शत्रु की आवाज़ से, या अपनी स्वयं की आवाज़ से या अपने आसपास के संसार की आवाज़ से परमेश्वर की आवाज़ को पहचान सकें। जब हम उसकी आवाज़ "जानते" हैं, तब हम उसकी आवाज़ "सुन" भी सकते हैं और हम उसका "अनुसरण" कर सकते हैं।

यह एक सीखने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के दौरान हम गलतियां करेंगे। परंतु स्मरण रखें, परमेश्वर हमारे साथ है और हमें पुनःस्थापित करेगा और हमें वापस मार्ग में ले आएगा। अक्सर, शैतान हमारी "कमज़ोरी" पर वार करता है, जब हम अपनी ही गलतियों को नहीं देख सकते। इसीलिए हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है, ताकि हम एक-दूसरे की चौकसी करें, एक-दूसरे को सही मार्ग पर बने रहने में सहायता करें। हमें अपनी गलतियों को अंगीकार करना है और वापस मार्ग पर आना है।

यहां पर पवित्र शास्त्र का एक दिलचस्प अनुच्छेद है। यशायाह 30 में, अपने भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को डांट रहा है कि वे सहायता के लिए उसकी ओर देखने के बजाय मिस्र की ओर देख रहे हैं। लोगों ने परमेश्वर की व्यवस्था को त्याग दिया है (30:9), परमेश्वर के भविष्यद्वक्ताओं और दर्शियों को (30:10) और स्वयं प्रभु को त्याग दिया है (30:11)। फिर भी ऐसे विद्रोही लोगों से परमेश्वर कहता है कि वह उनके उसकी ओर लौटने का इंतज़ार करेगा। वह उनसे यह प्रतिज्ञा भी करता हैः

**यशायाह 30:20,21**

**20 और चाहे प्रभु तुम्हें विपत्ति की रोटी और दुःख का जल भी दे, तौभी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिपें, और तुम अपनी आंखों से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे।**
**21 और जब कभी तुम दाहिनी वा बायीं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो।**

कुछ अंग्रेज़ी संस्करण "शिक्षकों" का अनुवाद **"शिक्षक"** के रूप में करते हुए स्वयं प्रभु को अपने लोगों के शिक्षक के रूप में उल्लेख करते हैं। चाहे जो हो, परमेश्वर अपने लोगों से प्रतिज्ञा करता है कि उनके विद्रोह के मध्य भी और उनके साथ परमेश्वर के सुधारात्मक व्यवहार के मध्य भी,

वे परमेश्वर की आवाज़ सुन पाएंगे और सही मार्ग पर चलने हेतु उसके मार्गदर्शन को प्राप्त करेंगे। सो उसके मार्गदर्शन के लिए आग्रह के साथ जब हम उससे बिनती करते हैं, तब हमें कितना अधिक उसकी आवाज़ को सुनने में सक्षम होना चाहिए जो हमें सिखाती है "मार्ग यही है, इस पर चलो"?

## वापस मार्ग पर आना

**भजनसंहिता 18:36**
**तू ने मेरे पैरों के लिए स्थान चौड़ा कर दिया, और मेरे पैर नहीं फिसले।**

परमेश्वर के साथ इस प्रकार चलना सम्भव है जहां हम अनुभव करते हैं कि हमारे द्वारा उठाए जाने वाले प्रत्येक कदम के लिए परमेश्वर मार्ग स्पष्ट करता है (स्थान को चौड़ा करता है), ताकि हम न लड़खड़ाते हुए चलें। हम जानते हैं कि दाऊद जिसने इन वचनों को कहा (भजन 18) ऐसा जन था जो निरंतर परमेश्वर से पूछता था। अपने फैसलों में और चुनावों में वह परमेश्वर का आदर करता था। वह बुद्धि के साथ चलता था।

परंतु दाऊद ने भी गलत चुनावों, स्वार्थपूर्ण इच्छाओं के द्वारा गलतियां की और मुश्किल का अनुभव किया।

दाऊद ने जो कहा उस पर विचार करें:

भजन 25 में, जब दाऊद ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की कि वह उसे सिखाए और उसका मार्गदर्शन करे, तब उसने यह पुष्टि भी की कि जब दाऊद अपने पांवों को "जाल" में फंसा हुआ पाएगा (मुश्किल परिस्थिति में, मनुष्य का कोई फंदा), तब वह अपनी आंखों को प्रभु पर लगाए रखेगा, यह जानते हुए कि परमेश्वर उसे उसमें से बाहर निकालेगा।

**भजनसंहिता 25:4,15**
**4 हे यहोवा, अपने मार्ग मुझको दिखा; अपना पथ मुझे बता दे।**
**15 मेरी आंखे सदैव यहोवा पर टकटकी लगाए रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पावों को जाल में से छुड़ाएगा।**

भजन 37 में, दाऊद ने इस बात की पुष्टि की कि उसकी गति या कदमों को परमेश्वर दृढ़ करता है, क्योंकि परमेश्वर उसके मार्गों से प्रसन्न होता है। उसे एक आश्वासन था कि भले ही वह लड़खड़ाकर गिर जाए, तौभी परमेश्वर उसे सम्भालेगा, उसे थामे रहेगा। यह अंत नहीं होगा।

**भजनसंहिता 37:23,24**
**[23] मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;**
**[24] चाहे वह गिरे तौभी पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि यहोवा उसका हाथ थांभे रहता है।**

जीवन की हमारी यात्रा में, हम सभी गलतियां करेंगे। हम आज भी सीख रहे हैं कि शत्रु की परीक्षाओं का सामना कर हमारे शरीरों की अभिलाषाओं को क्रूस पर कैसे चढ़ाएं। हम सीख रहे हैं कि परमेश्वर की कैसे सुनें और हमारे जीवनों के लिए उसके मार्गदर्शन को कैसे प्राप्त करें। इसलिए इस दौरान, यदि हम गलत चुनाव करते हैं, गलत निर्णय लेते हैं, तो हम अपनी आंखों को प्रभु पर स्थिर रखते हैं। वह हमारी गलतियों से बड़ा है। वह हमारे द्वारा लिए गए घुमावदार रास्तों से बड़ा है। वह उन गड़बड़ियों से बड़ा है जो हम ने की हैं। यदि हम उसकी ओर वापस लौटेंगे, उसे हमें सही मार्ग पर लाने की तथा हममें और हमारे द्वारा कार्य करने की अनुमति देंगे, तो वह अपनी योजनाओं को और उद्‌देश्यों को पूरा करेगा। उसकी कोई भी योजना पराजित नहीं हो सकती। वह समय को पुनःस्थापित करता है। वह उन सारी बातों को पुनःस्थापित करता है जो बरबाद हो गई होगी। वह महान मुक्तिदाता है।

हम यहां, इस बाकी अध्याय में, हमारे लिए व्यवहारिक निर्देशों को प्रस्तुत करते हैं, ताकि हम अपने जीवनों का इस तरह प्रबंध करें और अपने जीवनों को ऐसे जीएं कि हम उसका मार्गदर्शन सही रीति से और यथार्थ रूप से प्राप्त कर सकें।

## सावधान बने रहना और विश्वास में जोखिम उठाना

**रोमियों 11:33,34**
**33 आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!**
**34 प्रभु की बुद्धि को किसने जाना? या उसका मंत्री कौन हुआ?**

परमेश्वर की बुद्धि, ज्ञान, निर्णय और मार्ग समझ से परे हैं। हम निरंतर उसकी बुद्धि, ज्ञान, निर्णयों, और मार्गो के विषय में थोड़ा और सीखते रहते हैं। हम परमेश्वर को सीमित नहीं कर सकते। वह असीम है। हमारे पास अभी जो है, वह उसके मार्गों की अत्यंत सीमित, सूक्ष्म समझ है। परमेश्वर असामान्य रीति से हमारा मार्गदर्शन और अगुवाई कर सकता है और करेगा, ऐसी रीति से जिसकी हम ने कभी कल्पना नहीं की। हमें अपने ह्रदय को खोलकर रखना है, स्वीकार करने तैयार और आज्ञाकारी रहना है।

ऐसा समय आएगा, जब हम अब्राहम के समान परमेश्वर के साथ बाहर कदम निकालेंगे, यह जानते हुए कि परमेश्वर ने कहा है, यह जानते हुए कि वह मार्गदर्शन कर रहा है और फिर भी यह न जानते हुए कि हम कहां जा रहे हैं। हम केवल अनुसरण करते हैं, एक समय में, क्षण प्रति क्षण एक कदम बढ़ाते हैं। हम विश्वास से खतरा मोल लेते हैं।

**इब्रानियों 11:8**
**विष्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया, जिसे मीरास में लेनेवाला था, और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया।**

और उसके बाद कुछ विशिष्ट निर्णय हैं जब हम सावधान रहेंगे। हम केवल तब कदम बाहर निकालते हैं जब हम जानते हैं कि  हमारे पास पर्याप्त विवरण है और हम पूर्णतया निश्चित हैं कि परमेश्वर हमारा मार्गदर्शन कर रहा है और हमें अगुवाई प्रदान कर रहा है।

जीवन की यात्रा से होकर जाते समय हमें दोनों तरह से परमेश्वर के साथ चलना सीखना है—उस समय जब हम सावधान के पक्ष में होते हैं,

और उस समय भी जब हम विश्वास में खतरा मोल लेते हैं। ऐसा कोई भी एकरूप मानक तरीका नहीं है जिसमें हम सारे निर्णय लेंगे। हमें जानना है कि हमें कब क्या करना है—कब सावधानी के साथ आगे बढ़ना है और कब खतरा मोल लेना है।

उत्तम बात यह है कि जब हम निर्णय लेंगे और परमेश्वर के साथ कदम बढ़ाएंगे, तब वह बातों को और स्पष्ट तथा उज्वल बनाएगा। हम जान पाएंगे कि उसकी सहायता से, जो निर्णय हम ने लिए वे सही थे और वह हमें अर्थात उसके बेटे और बेटियों को अगुवाई और मार्गदर्शन करना जारी रखता है।

**नीतिवचन 4:18**
**परंतु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई ज्योति के समान है, जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है।**

## अंतिम निर्देश के साथ बने रहना

परमेश्वर के साथ यात्रा करते समय दूसरी बात जो हमें सीखना चाहिए वह यह है कि ऐसा समय होगा जब परमेश्वर कुछ नया या भिन्न करने के लिए हमसे बात नहीं करेगा या हमारी अगुवाई नहीं करेगा। आप जीवन की एक विशिष्ट ॠतु में हैं, सब कुछ सही स्थान पर है और ठीक चल रहा है। और ऐसा प्रतीत होता है कि आप जो कुछ कर रहे हैं उसमें परिवर्तन लाने के विषय में या किसी भी भिन्न क्षेत्र में कदम बढ़ाने हेतु आप परमेश्वर की ओर से कुछ भी नया नहीं सुन रहे हैं।

जब ऐसा प्रतीत होता है कि आपको "रोककर रखा" गया है या यदि आप कुछ भी "नया" या "भिन्न" नहीं सुन रहे हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप परमेश्वर के पिछले निर्देश के साथ बने रहें। उसने आपको जो करने के लिए कहा उसे विश्वासयोग्यता, सुसंगतता के साथ, उत्तमता के साथ और उसकी महिमा के लिए करते रहें। उसने जो पिछला कार्य आपको सौंपा उसमें आप बढ़ सकते हैं, उन्नति, विस्तार पा सकते हैं और नए स्तरों की ओर बढ़ सकते हैं।

**1 कुरिन्थियों 4:1,2**
**1 मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझें।**
**2 फिर यहां भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि विश्वासयोग्य निकले।**

परमेश्वर ने हमें जो कुछ सौंपा है उसके हम भण्डारी हैं। भण्डारी होने के नाते परमेश्वर हमसे अपेक्षा करता है कि हम विश्वासयोग्य बने रहें। विश्वासयोग्य होने का अर्थ भरोसेमंद, विश्वसनीय होना है, ऐसा व्यक्ति जिस पर हम निर्भर रह सकते हैं। ऐसे लोग जो अपने स्थान में बने रहेंगे, उन्हें जो काम सौंपा गया है उसे करेंगे, चाहे वह काम जो भी हो। परमेश्वर ने आपको जो काम दिया है उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें और उसमें बढ़ते जाएं, जब तक कि वह आपको कुछ नया और भिन्न करने के लिए नहीं कहता।

## स्वार्थ प्रेरित और हठीला होने से बचें

**नीतिवचन 14:12**
**ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परंतु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है।**

हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर का मार्गदर्शन और निर्देशन पाने हेतु सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह है कि हम स्वार्थ से प्रेरित होकर कुछ बातों (लक्ष्यों, स्वप्नों) का अनुसरण कर सकते हैं। कभी-कभी वह क्या उत्तम और उत्कृष्ट हो सकता है। परंतु "क्यों" अपवित्र और दुष्ट स्वार्थ हो सकता है। हम अपने स्वार्थी हितों को सन्तुष्ट करने हेतु कुछ करने में इतने केन्द्रित होते हैं, कि हम यह सुन पाने में समर्थ ही नहीं होते कि परमेश्वर हमसे क्या कह रहा है। हो सकता है कि वह मार्ग हमें सही प्रतीत हो, परंतु यदि वह स्वार्थ से प्रेरित है, तो उसका परिणाम मनभावना या परमेश्वर को महिमा देने वाला नहीं होगा।

स्वार्थ प्रेरित होने के निकट ही हठीला होना भी है। जब हम हठीले होते हैं, तब हमारी प्रवृत्ति ऐसी होती है जो अपनी ही मनमानी करने का आग्रह करती है और दूसरा मार्ग अपनाना नहीं चाहती। हठीलापन हृदय की गलत प्रवृत्ति है, अक्सर उसका जन्म आत्मिक अहंकार से होता है। हम दूसरों से सीखने के लिए अनिच्छुक होते हैं, ईश्वरीय परामर्श पाने हेतु अनिच्छुक होते

हैं, सीखना नहीं चाहते, प्रकाशन या आत्मिक अनुभव की वरीयता, आदि का दावा करते हैं। (टिप्पणीः एक अच्छे अर्थ से भी हमें "हठीला" होने की आवश्यकता है, अर्थात अपने निर्णय में पूर्णतया दृढ़ संकल्प। हम यहां पर नकारात्मक अर्थ से हठीलेपन का उल्लेख कर रहे हैं)।

मूसा एक बात से बहुत डरता था। वह यह है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ नहीं जाएगा। मूसा जानता था कि उसके साथ परमेश्वर की उपस्थिति के बिना, वे कुछ भी नहीं हैं (निर्गमन 33:14,15)। इसलिए उसने परमेश्वर से बिनती की कि वह उसका पाप और हठीलापन क्षमा करे, और यह प्रार्थना की कि परमेश्वर उसके लोगों के मध्य और साथ जाए।

**निर्गमन 34:9**
**और उसने कहा, हे प्रभु, यदि तेरे अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर हो तो प्रभु, हम लोगों के बीच में होकर चले, ये लोग हठीले तो हैं, तौभी हमारे अधर्म और पाप को क्षमा कर, और हमें अपना निज भाग मानकर ग्रहण कर।**

मूसा बताता है कि हठीलापन हृदय की समस्या हैः

**व्यवस्थाविवरण 10:16**
**इसलिये अपने अपने हृदय का खतना करो, और आगे को हठीले न रहो।**

**व्यवस्थाविवरण 10:16 (ईज़ी टू रीड संस्करण)**
**हठीलापन छोड़ दें। अपने हृदयों को परमेश्वर को दें।**

आत्म-समर्पण के स्थान पर, परमेश्वर को अपने हृदयों का समर्पण करने और अपनी इच्छाओं, स्वप्नों, योजनाओं और प्रयासों पर उसे अधिकार देने के स्थान पर आना स्वार्थ और हठीलेपन का प्रतिविष है। जब हम उसके प्रति समर्पण और अधीनता के साथ जीवन बिताएंगे, तब हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर से मार्गदर्शन पाने हेतु बेहतर स्थान में रहेंगे।

**भजनसंहिता 25:9**
**वह नम्र लोगों को न्याय की शिक्षा देगा, हां, वह नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखाएगा।**

## लक्ष्यहीन होने से बचें

जब हम आत्म-समर्पण और समर्पण के विषय में बोलते हैं, तब कुछ लोग दूसरी दिशा में इतना बढ़ जाते हैं जहां वे ज़िम्मेदारी नहीं ले पाते और इस कारण लक्ष्यहीन और उद्देश्यहीन जीवन बिताते हैं। उनके मन में यह गलत कल्पना होती है कि योजना बनाना, रणनीति तैयार करना और तैयारी करना स्वार्थ की अभिव्यक्तियां हैं और इस कारण हम कोई योजना नहीं बनाते या तैयारियां नहीं करते।

हमारा कार्य करने का तरीका यह होना चाहिए कि हम हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन और निर्देशन को खोजें और तत्पश्चात परिश्रम करें, योजना बनाएं, रणनीति तैयार करें और उसके उद्देश्यों को पूरा होते हुए देखने के लिए अपने आप को तैयार करें।

योजना बनाने के बाद भी, हम अपने कामों को प्रभु के हाथ में सौंपते हैं और जो हम करते हैं उसे स्थापित करने हेतु उस पर निर्भर रहते हैं। उसने हमें जो मार्गदर्शन प्रदान किया है, उसके अनुसार हम योजना बन-ााते हैं, और हम जानते हैं कि जब हम उस योजना को तैयार करेंगे, तब परमेश्वर हमारे कदमों को दिशा प्रदान करेगा।

**नीतिवचन 16:3,9**
**3 अपने कामों को यहोवा पर डाल, दे, इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी ।**
**9 मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परंतु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है।**

परमेश्वर ने कुछ करने हेतु हमारी अगुवाई की है और हमें निर्देश दिया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि मार्ग हमेशा आसान होगा। जब हम उस योजना को बनाते हैं जो उस मार्गदर्शन पर आधारित होती है जो हम परमेश्वर से प्राप्त करते हैं, तो हम धीरज, तत्परता और स्थिरता के साथ चलते हैं।

**नीतिवचन 21:5**
**कामकाजी की कल्पनाओं से केवल लाभ होता है, परंतु उतावली करनेवाले को केवल घटती होती है।**

## अपना ध्यान बंटने न दें

परमेश्वर ने जो कार्य हमें सौंपा है या जो करने हेतु मार्ग दिखाया है उस पर ध्यान लगाए रखना सीखें। हमारे ध्यान को विचलित करने के लिए कई बातें आती हैं। जब हमारा ध्यान बंट जाता है, तब हम उन बातों पर अपना समय, ऊर्जा और संसाधनों को बर्बाद करते हैं जिन्हें हमें नहीं करना चाहिए था।

जब आप परमेश्वर का निर्देशन प्राप्त करते हैं तब उसका अनुसरण करें। उसमें उन बातों को न जोड़ें, जिन्हें परमेश्वर ने आपके लिए नहीं ठहराया था। अन्य लोगों की नकल न करें। सारे अतिरिक्त बोझ और पापों को हटाकर रखें जो सहज ही हमारा ध्यान बंटाते हैं और हमारी गति को धीमी कर देते हैं। ध्यान लगाकर अपनी दौड़ दौड़ें।

## जब मैं मार्ग पर था तब प्रभु ने मेरी अगुवाई की

**उत्पत्ति 24:27**

**धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उसने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लियाः यहोवा ने मुझको ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाईबन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है।**

रुकी हुई या पार्क की हुई गाड़ी को चलाना, स्टियर करना अर्थपूर्ण नहीं है। हम ऐसा नहीं करते। परंतु एक बार जब गाड़ी चलना शुरू हो जाती है, तब उसे स्टियर करने की आवश्यकता पड़ती है और ऐसा करना उपयुक्त और आवश्यक है।

कभी-कभी हमारी निष्क्रियता और अनिर्णय की स्थिति हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के निर्देशन को प्राप्त करने से हमें रोकती है। कोई भी निर्देश, मार्गदर्शन या निर्देशन जो परमेश्वर हमसे बोल सकता है हमें अर्थपूर्ण नहीं लगता क्योंकि हम “रुके” हुए हैं। हमारा इग्निशन बंद है। हैण्ड ब्रेक शुरू है। और हम शिकायत करते हैं, परमेश्वर मुझे नहीं चला रहा है (अगुवाई, मार्गदर्शन नहीं कर रहा है)। उसके निर्देशन और मार्गदर्शन को प्राप्त करने के लिए, हमें इग्नीशन शुरू करना होगा, गाड़ी को ड्राईव्ह में लाना होगा

और ऐक्सीलरेटर पर पैर रखना होगा। उसके बाद उसका मार्गदर्शन और निर्देशन हमें चलाकर उसके उद्देश्यों में ले जाएंगे।

अब्राहम के उस सेवक के विषय में विचार करें जिसे इसहाक के लिए दुल्हन ढूंढ़ने का काम सौंपा गया था (उत्पत्ति 24)। उसने केवल प्रार्थना नहीं की, वह निष्क्रिय बैठा नहीं रहा। वह अपने मिशन पर चल पड़ा और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की कि परमेश्वर उसे सफलता प्रदान करे। उसकी गवाही यह थी कि जब मैं अपने मार्ग पर था तब प्रभु मुझे सही व्यक्ति के पास ले गया, रिबका और उसके घराने के पास। उसी तरह, यदि हम हमारे जीवनों में उसके मार्गदर्शन और निर्देशन को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, तो हमें भी तत्परता के साथ आज्ञापालन करना चाहिए, कार्य करने हेतु तैयार रहना चाहिए और वही करना चाहिए जो वह कहता है।

हम सब को परमेश्वर की बाट जोहने के लिए बुलाया गया है। परंतु परमेश्वर की बाट जोहना निष्क्रियता नहीं है। परमेश्वर की बाट जोहना निष्क्रियता की स्थिति नहीं है। परमेश्वर की बाट जोहना एक सक्रिय मुद्रा है। हम उसके लिए, उसकी आज्ञा का पालन करने हेतु उसके सामने हैं। हम इस भाव से उसके सामने नहीं है कि, "परमेश्वर मैं यहां हूं, ताकि केवल आपके साथ रहूं, इसलिए मुझे कुछ भी करने न कहना।" हम उसके सामने हैं, उसके साथ समय बिताते हैं, उसकी बाट जोहते हैं, इस भाव से कि, "परमेश्वर, मैं यहां हूं, ताकि केवल आपके साथ रहूं, और जो कुछ भी आप मुझसे कहे उसे करने के लिए मैं तैयार हूं।" जब हम बाट जोहने की इस मुद्रा में होते हैं, तब परमेश्वर अपने मार्गदर्शन और निर्देशों को कहता है।

## भूतकाल में रहने से बचें, आगे देखें

**फिलिप्पियों 3:13,14**

**[13] हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं; परंतु केवल यह एक काम करता हूं कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ,**
**[14] निषाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।**

जीवन की यात्रा में आगे बढ़ते समय अंतिम शब्द और समापन के विचार, हमारे जीवनों पर उसकी अगुवाई, मार्गदर्शन और निर्देशन की आज्ञाकारिता में चलने का भरसक प्रयास करें। हमें कुछ पर्वत चोटी के अनुभव प्राप्त होंगे। हमें जीवन की कुछ चुनौतीपूर्ण ऋतुओं से भी होकर गुज़रना पड़ेगा। परंतु जैसा कि प्रेरित पौलुस ने कहा है, हमें अतीत की बातों को *"भूलना"* सीखना है और जो कुछ आगे है उसकी ओर अग्रसर होते जाना है। हम भूतकाल के वैभव में जी नहीं सकते। न ही हमें असफलताओं, निराशाओं, दुख या त्रासदियों में फंसे रहना है। समाप्ति रेखा हमारे सामने है, पीछे नहीं। हमारे आगे जो मार्ग धरा है उसे पूरा करने के लिए हमारे सामने जो लक्ष्य है उसकी ओर बढ़ने के लिए हमारे जो कुछ है उसे हमें दाव पर लगाना है। हम हमेशा पीछे वाले शीशे में देखकर गाड़ी नहीं चला सकते। कभी-कभार देख लेना ठीक है। परंतु अधिकांश समय हमें आगे देखना है।

भूतकाल को भूल जाएं। नई शुरूवात करें। परमेश्वर सारी बातों को नई कर सकता है। उसका मार्गदर्शन प्राप्त करें। आगे बढ़ें। भविष्य आपकी कल्पना से बहुत बड़ा है। प्रभु आपको उसके उत्तम और सर्वोत्तम की ओर ले चले।

## मनन

1. परमेश्वर के मार्गदर्शन के रूप में जो कुछ हमने पाया है उसमें आगे बढ़ने से पहले उसे परखना और प्रमाणित करना महत्वपूर्ण क्यों है?

2. हमारे जीवनों में परमेश्वर के मार्गदर्शन का अनुसरण करते समय कब सावधान रहना चाहिए और विश्वास का खतरा कब मोल लेना है यह हम कैसे जानें?

3. उसके अंतिम निर्देश के साथ बने रहने का क्या अर्थ है?

4. यदि परमेश्वर हमारे जीवनों के लिए उसके मार्गदर्शन और निर्देश को प्रगट करता है, तो हमें योजना बनाने, कार्यनीति तय करने और उसे अमल में लाने की तैयारी क्यों करना चाहिए?

5. क्या आप एक या उससे अधिक परिस्थितियों के विषय में सोच सकते हैं जब परमेश्वर से मार्गदर्शन पाते समय आप *"चुक गए,"* और परमेश्वर आपको वापस आपके जीवन में सही मार्ग पर ले आया ऐसी एक परिस्थिति के विषय में बताएं?

## क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

दो हज़ार साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

**ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।**

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सबने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"*** **(रोमियों 6:23)।** यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मर गया। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग पर चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति

का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह मुफ्त क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

***"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"*** **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

***"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा"*** **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपकेलिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धि पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

*प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।*

*आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मरकर और फिर मरे हुओं में से जी उठकर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।*

*आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मर गए, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकता किया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं पापों की क्षमा और मेरे पापों से शुद्धता पा सकता हूं।*

*धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए। आमीन।*

# ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

आल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केन्द्रित, आत्मा से भरपूर परिवारिक कलीसिया,** एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधार, संसार में सुसमाचार करने वाली कलीसिया है

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में हम ईश्वरीय अगुवों और आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

# ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses–Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Speaking in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। पी. डी. एफ., आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में निःशुल्क ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, निःशुल्क ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

# क्रिसलिस परामर्श

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस परामर्श व्यावसायिक तौर प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु समूहों के लिए हैं और जीवन की चुनौतियों की एक विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती हैं।

**किशोरों**
**व्यक्तिगत समायोजन**
**संबंधपरक चुनौतियां**
**शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
**कार्य संबंधित मुद्दे**
**परिवार /दम्पत्तिः विवाह पूर्व, वैवाहिक**
**माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
**व्यवहार सम्बंधी विकार**
**व्यक्तित्व विकार**
**मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
**तनाव / आघात**
**शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
**आत्मिक समस्याएं**
**ज़िंदगी की सीख**

क्रिसलिस परामर्श सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए:

**Website: chrysalislife.org**
**Phone:** +91-80-25452617 or toll-free (within India) 1-800-300-00998
**Email: counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एंड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

# ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में निःशुल्क वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस का कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से “ऑल पीपल्स चर्च,” बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

**Account Name**: All Peoples Church

**Account Number**: 50200068829058

**IFSC Code**: HDFC0004367

**Bank**: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru, 560043, Karnataka

***कृपया ध्यान दें:*** *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें:* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

**धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!**

## DOWNLOAD THE FREE APP!

*Search for*

"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

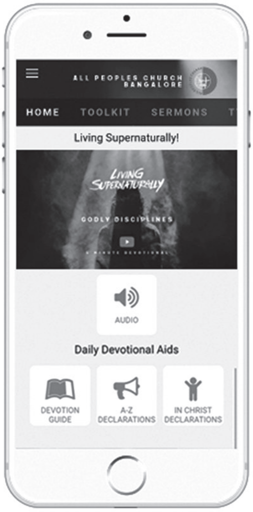

***A daily 5-minute video devotional.***
***A daily Bible reading and prayer guide.***
***5-minute Sermon summary.***
***Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.***
***Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.***

***IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!***

## ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच

**apcbiblecollege.org**

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी-बीसी) भारत केबैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी-बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैंः

- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (सी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.टी.एच.)
- ईश्वर विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय स्नातक (बी.टी.एच.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक** (UTC+5:30) कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैंपसः** कैंपस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लें
- **ऑनलाइनः** ऑनलाइन लाइव व्याख्यान में भाग लें
- **ई-लर्निंगः** ऑनलाइन पोर्टल apcbiblecollege.org/elearn.

के माध्यम से स्वयं की गति से सीखना ऑनलाइन आवेदन करने के लिए, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के बारे में अधिक जानकारी केलिए, कृपया इस वेबसाइट को भेंट देंः apcbiblecollege.org

परमेश्वर ने हमारी अगुवाई करने और हमारा मार्गदर्शन करने की प्रतिज्ञा की है। इस पुस्तक में हम कई मार्गों को बताते हैं जिनके द्वारा हम अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के मार्गदर्शन को प्राप्त करते हैं:

1. वचन,
2. हमारे अंदर वास करना वाला आत्मा,
3. पवित्र आत्मा की आवाज़,
4. पवित्र आत्मा के वरदान,
5. स्वप्न और दर्शन,
6. भविष्यद्वाणियां,
7. स्वर्गदूत,
8. ईश्वरीय परामर्श,
9. नवीनीद्भत बुद्धि या मन,
10. समय और ऋतु,
11. परिस्थितियां और ईश्वरीय आयोजन।

हमने व्यक्तिगत कहानियां भी प्रस्तुत की हैं जो इन्हें समझाने में हमारी सहायता करती हैं। आप सीखेंगे कि परमेश्वर की ओर से कैसे सुनना है और उसके मार्गदर्शन को कैसे प्राप्त करना है ताकि आप आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा कर सकें।

**All Peoples Church & World Outreach**
# 319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org